भाग—1 वर्षफल

1. विषय प्रवेश

वैदिक ज्योतिष में मुख्य रूप से 3 विधाएं अधिक प्रचलित हैं 1. पाराशरी 2. जैमिनी तथा 3. ताजिक। पाराशरी ज्योतिष में ग्रहों को प्रधानता दी गई है जबकि जैमिनी में राशियों को। ताजिक ज्योतिष का उपयोग वर्षफल व प्रश्न विचार के लिए किया जाता है तथा इसमें पारंपरिक विधाओं से हटकर कई नए अवयवों का विचार किया जाता है।

ताजिक ज्योतिष का आधार "ताजिक नीलकण्ठी"' नामक प्रामाणिक ग्रंथ है जिसे नीलकण्ठ नामक विद्वान ने 1600 ई. में लिखा था। किंतु इसका ये अर्थ नहीं है कि इससे पूर्व वर्षफल या प्रश्न ज्योतिष की विधाएं वैदिक ज्योतिष में प्रचलित ही नहीं थीं। कालीदास रचित "उत्तर कालामृत" ग्रंथ में वर्षफल दशा का उल्लेख व गणना विधि है जो ताजिक की मुद्दा दशा से भिन्न है। इसी प्रकार "षट् पंचाशिका" ग्रंथ में प्रश्न ज्योतिष का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। वैसे भी केरलीय ज्योतिष का मुख्य विषय ही प्रश्न है जो बहुत ही प्राचीन विद्या है।

ताजिक शब्द : ताजिक ज्योतिष में यवन संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। पश्चिमी एशिया के देशों से आए योद्धाओं के पश्चात् दोनों संस्कृतियों के आदान–प्रदान के स्वरूप वैदिक ज्योतिष में नए आयाम जुड़ने के कारण ताजिक ज्योतिष का प्रादुर्भाव हुआ। ताजिक शब्द संस्कृत भाषा का नहीं है। इसके बारे में भी कई विचार प्रचलित हैं। कुछ विद्वान इसे ''जातक'' का अपभ्रंश या बिगड़ा रूप समझते हैं। ऐसी भी धारणा है कि तुर्की/फारसी भाषा में 'ताजिक' का अर्थ घोड़ा होता है। क्योंकि ताजिक के अंतर्गत तीव्र गति से विचार किया जा सकता ऐसा मानकर इस विधा का नामकरण किया गया। जो भी हो, इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस विधा में यवन प्रभाव बहुत ही स्पष्ट है जो कि अनेक महत्वपूर्ण फारसी शब्दों से प्रकट होता है जैसे मुद्दा, मुन्था, सहम तथा लगभग सभी ताजिक योगों के शीर्षक जैसे इत्थशाल, इक्कबाल, इशराफ, नक्त, रद्द, खल्लासर आदि।

वर्ष कुंडली : सूर्य प्रतिदिन 1° की औसत गति से चलते हुए एक वर्ष में भचक्र का अथवा 360° का चक्र पूर्ण करता है। वर्ष कुंडली बनाने के लिए हमें वर्ष विशेष में वह समय लेना होता है जब सूर्य उस वर्ष जन्म कुंडली के स्पष्ट भोगांश पर पहुंच जाता है। उस दिन व उस समय की जो कुंडली बनायी जाती है वह वर्ष कुंडली कहलाती है तथा उसी के आधार पर वर्षफल निश्चित किया जाता है। इस प्रकार जीवन के किसी भी वर्ष का फल जानने के लिए उस वर्ष की एक अलग वर्ष कुंडली बनाई जाती है जो जन्म कुंडली में सूर्य के स्पष्ट भोगांश पर आधारित होती है न कि जन्म दिन व जन्म समय पर। इसका अर्थ है कि वर्ष कुंडली की तारीख, वार व समय जन्म कुंडली से प्रायः भिन्न ही होते हैं।

ताजिक वर्षफल की विशेषताएं : ताजिक ज्योतिष का मूल आधार तो पाराशरी ही है जैसे वही 9 ग्रह, वही 12 भाव व 12 राशियां तथा उनके पारंपरिक कारकत्व आदि किंतु कुछ अवयव सर्वथा नवीन व भिन्न हैं जिनका संक्षेप में उल्लेख यहां किया जा रहा है :

मुन्था : मुन्था यानि जन्म लग्न का प्रतिवर्ष एक राशि की गति से आगे बढ़ना। उदाहरण के लिए यदि जन्म लग्न की राशि कुंभ है तो अगले वर्ष मुन्था मीन राशि में पड़ेगी, उससे अगले वर्ष मेष में, आदि। इस प्रकार प्रति 12 वर्ष के पश्चात पुनः मुन्था जन्म लग्न की राशि में पहुंच जाती है।

वर्ष प्रवेश : जीवन के जिस वर्ष की वर्ष कुंडली बनानी है उस वर्ष जिस दिन व जिस समय सूर्य ठीक अपने जन्म कुंडली वाले स्पष्ट भोगांश को प्राप्त होगा वह वर्ष प्रवेश कहलाता है तथा उसी के आधार पर वर्ष कुंडली बनती है।

वर्षेश /वर्षेश्वर : जीवन के प्रत्येक वर्ष का एक स्वामी ग्रह चुना जाता है जो सूर्य, चंद्र .... शनि आदि सात ग्रहों में से एक होता है। वर्षेश का वर्षफल पर विशेष प्रभाव होता है।

ताजिक दृष्टियां : ग्रहों की ताजिक दृष्टियां पाराशरी दृष्टियों से बिल्कुल भिन्न हैं।

दीप्तांश : दो ग्रहों के मध्य ताजिक योग बनने के लिए उनकी परस्पर दृष्टियां ही पर्याप्त नहीं है, उन ग्रहों का दीप्तांश में होना भी आवश्यक है। सभी ग्रहों के दीप्तांश निश्चित किए गए हैं।

ताजिक योग : पाराशरी योगों से ताजिक योग सर्वथा भिन्न हैं। कुल 16 प्रकार के योगों की मान्यता है।

मुद्दा दशा : ताजिक में मुख्य रूप से तीन प्रकार की वर्ष दशाओं का प्रयोग किया जाता है– विंशोत्तरी मुद्दा दशा, योगिनी मुद्दा दशा तथा पात्यायिनी मुद्दा दशा।

सहम : जीवन के प्रायः सभी पक्षों से संबंधित चालीस से पचास सहमों की गणना की जाती है जो कि वास्तव में मर्म बिंदु होते हैं जो राशि व अंशों में स्पष्ट किए जाते हैं।

ग्रहों की बल साधन विधियां : ताजिक की विधियां पाराशरी बल साधन प्रक्रिया से भिन्न हैं।

त्रिपताकी वेध चक्र : विशेष रूप से चंद्र पर अन्य ग्रहों का शुभाशुभ वेध देखा जाता है।

समुद्र चक्र : वर्षफल का संक्षेप में विवेचन करने के लिए समुद्र चक्र का अध्ययन किया जाता है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि वर्ष कुंडली का विवेचन पाराशरी विश्लेषण विधा से बहुत अलग है। यद्यपि यह याद रखना आवश्यक है कि वर्षकुंडली केवल जन्म कुंडली का ही विस्तार है अतः जन्म कुंडली के योग, ग्रहों की शुभाशुभ दशाएं व गोचर स्थिति का पूरा प्रभाव वर्ष कुंडली पर पड़ता है। जिस प्रकार ग्रहों की गोचरीय स्थिति केवल वही फल प्रदान कर सकती है जो जन्म कुंडली से अपेक्षित व संभावित हैं, उसी प्रकार वर्ष कुंडली भी केवल वही फल उस वर्ष में प्रदान कर सकती हैं जिनका योग जन्म कुंडली में बना हुआ है। उदाहरण के लिए यदि जन्मकुंडली में संतान प्राप्ति की कोई भी संभावना नहीं है तो वर्ष कुंडली में संतान प्राप्ति के कितने ही बलवान योग बन रहे हों, संतान प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः फल कथन में जन्म कुंडली व वर्ष कुंडली दोनों का ही विश्लेषण आवश्यक है हालांकि उनके विश्लेषण के तरीके अलग–अलग हैं। वर्षफल का अपना विशेष महत्व है। ताजिक योगो, मुद्दा दशाओं व सहमों के आधार पर उस वर्ष के फलों में अधिक निश्चितता व सूक्ष्मता लायी जा सकती है तथा किसी भी भाव से संबंधित प्रश्न का सटीक उत्तर दिया जा सकता है।

आगे दिए गए अध्यायों में ताजिक के उपरोक्त विशेष अवयवों का विस्तार से विवरण किया गया है। किंतु यह पुस्तक ताजिक ज्योतिष में वर्षफल तक ही सीमित है, प्रश्न कुंडली के बारे में यहां विचार नहीं किया गया है।

2. वर्ष कुंडली

वर्ष कुंडली बनाने का प्रयोजन है जीवन के किसी वर्ष विशेष की कुंडली बनाना जिसके आधार पर उस वर्ष का फलादेश किया जाता है। साधारण रूप से जातक के जन्म दिनांक को आधार मानकर उसकी आयु का विचार किया जाता है किंतु यह एक स्थूल गणना है। सूक्ष्म रूप से अथवा ताजिक ज्योतिष के अनुसार वर्ष गणना का आधार सूर्य के उसी रेखांश/भोगांश पर आने से होता है जो जातक के जन्म समय पर था अर्थात् जन्म कुंडली का सूर्य स्पष्ट।

सूर्य सिद्धांत के अनुसार सूर्य के पुनः उसी रेखांश पर आने में 365 दिन 15 घड़ी, 31 पल, 30 विपल लगते हैं जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समय 365 दिन 15 घड़ी 22 पल व 57½ विपल आता है। दोनों गणनाओं में 8½ पल या $3^1/_3$ मिनट का अंतर आता है। प्रत्येक गताब्ध में यह अंतर बढ़ता जाता है जिससे वर्ष प्रवेश के इष्ट काल में काफी अंतर पड़ सकता है। भारत में अब सभी विद्वान पण्डित आधुनिक गणना के अनुसार वर्ष कुंडली बनाने पर बल देते हैं।

नवीन मतानुसार सूर्य उसी भोगांश पर आने में 365 दिन 6 घंटे 9 मिनट व लगभग 9½ सैकण्ड लेता है। इसमें से यदि सप्ताह के 7 दिनों के 52 गुणांक (यानि 364 दिन) निकाल दें तो वर्ष प्रवेश गणना का ध्रुवांक 1 दिन 6 घंटे 9 मिनट व 9½ सैकण्ड आ जाता है अर्थात् इतना समय सूर्य अपने भोगांश पर आने में प्रतिवर्ष अधिक लेता है। इसी आधार पर पंचांगों व पुस्तकों में वर्ष प्रवेश सारणियां बनायी जाती हैं। श्री एन. सी. लाहिरी की एफैमैरिस की पुस्तक में दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी (Solar Return) के आधार पर अगले पृष्ठ पर यह सारणी उद्धृत की गई है जो कि दिन/वार, घं. मि. व सै. में ध्रुवांक का मान गताब्ध के आधार पर देती है।

जीवन के जितने वर्ष बीत चुके हैं उन्हें गताब्ध (Completed Years) कहते हैं तथा वर्तमान वर्ष (+1) को प्रवेशाब्ध कहते हैं अर्थात् वह वर्ष जिसके लिए वर्ष कुंडली की रचना व अध्ययन किया जाना है। यहां दिन का अर्थ वार से है। रविवार को प्रथम दिन मानकर 1 अंक से तथा क्रमशः शनिवार को 7 अथवा 0 अंक से इंगित करते हैं। दिन की संख्या 7 या 7 अंक से अधिक होने पर उसमें से 7 घटा दिए जाते हैं ताकि वार की संख्या में अंतर न पड़े। अतः सारिणी में जहां वार के नीचे 0 अंक लिखा है उसे शनिवार समझें। कुछ लोग रविवार को 0 मानकर गिनते हैं। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।

समय भी यदि रेलवे समय सारिणी यानी 1 से 24 घंटे में लिया जाए तो अधिक अच्छा रहेगा।

गताब्ध के अनुसार वर्ष प्रवेश सारिणी से जो वार संख्या, घंटा, मिनट प्राप्त हों उसमें जन्म वार संख्या व जन्म समय को जोड़ें। जो वार पड़े उसे जन्म दिनांक वाले दिन के आस पास कलेंडर से देखें। यह दिन जन्म की तारीख से एकाध दिन आगे पीछे पड़ सकता है। यही वर्ष कुंडली के लिए जन्म दिनांक माना जाएगा। समय में भी इसी प्रकार अंतर आएगा। वर्ष कुंडली अब नई तारीख व नए समय के अनुसार बनाई जाएगी।

एक अन्य तरीके से भी वर्ष प्रवेश का दिन व समय निकाला जाता है जिसमें वर्ष प्रवेश सारिणी का उपयोग करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। जन्म कुंडली का सूर्य स्पष्ट प्रवेशाब्द वर्ष में जिन दो दिनांकों के बीच पड़ता हो वे एफैमेरिस या पंचांग में दिए ग्रह स्पष्ट से प्राप्त कर, 24 घंटे का सूर्य चर निकाल लें। फिर ऐकिक नियम से वह समय ज्ञात करें जब सूर्य के भोगांश जन्म कुंडली के स्पष्ट भोगांश के बराबर होंगे।

दोनों ही विधियां ठीक हैं यद्यपि वर्ष प्रवेश समय में मामूली अंतर आ सकता है। वर्ष प्रवेश के दिनांक व समय अनुसार वर्ष कुंडली बनाकर लग्न व ग्रह स्पष्ट कर लिया जाता है।

एक और प्रश्न उठता है कि वर्ष कुंडली के लिए जन्म स्थान को ही लिया जाए अथवा जातक के वर्तमान स्थान को। मेरे विचार से वर्ष कुंडली क्योंकि जन्म कुंडली का ही विस्तार मात्र है जिसका महत्व गोचर के समकक्ष है अतः जन्म स्थान के अनुसार ही वर्ष कुंडली बनाना अधिक तर्क संगत प्रतीत होता है।

उदाहरण कुंडली : उपरोक्त नियमों को व्यवहारिक रूप से समझने के लिए एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते हैं।

जातक का जन्म विवरण :

जन्म दिन	:	31 जुलाई 1973
जन्म समय	:	20:15:00 घंटे
जन्म स्थान	:	दिल्ली (28 उ 40' अक्षांश 77 पू 13' 00 रेखांश)
जन्म वार	:	मंगलवार
सूर्योदय समय	:	05:45:40 घंटे
सूर्यास्त	:	19:08:55 घंटे
जन्म नक्षत्र	:	मघा–3
भोग्य विंशोत्तरी दशा	:	केतु 1 व 11 मा 16 दि

जन्म कुंडली

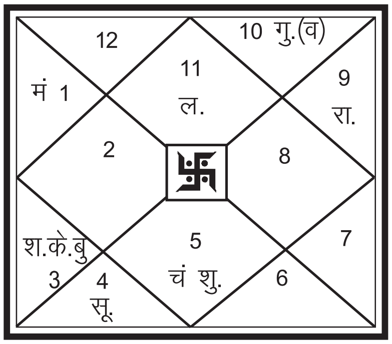

	राशि	अंश	कला	विकला
लग्न	10	05	17	55
सूर्य	3	14	44	42
चंद्र	4	09	35	56
मंगल	0	00	48	34
बुध	2	29	23	31
गुरु (व)	9	13	34	15
शुक्र	4	14	22	53
शनि	2	06	21	38
राहु	8	13	52	49
केतु	2	13	52	49

वर्ष–प्रवेश सारिणी (Solar Return Chart)

वर्ष	वार	घं.	मि.		वर्ष	वार	घ.	मि.		वर्ष	वार	घ.	मि.
1	1	6	9.2		34	0	17	11.5		67	0	4	13.9
2	2	12	18.3		35	1	23	20.7		68	1	10	23.0
3	3	18	27.5		36	3	5	29.8		69	2	16	32.2
4	5	0	36.6		37	4	11	39.0		70	3	22	41.4
5	6	6	45.8		38	5	17	48.2		71	5	4	50.5
6	0	12	55.0		39	6	23	57.3		72	6	10	59.7
7	1	19	4.1		40	1	6	6.5		73	0	17	8.9
8	3	1	13.3		41	2	12	15.7		74	1	23	18.0
9	4	7	22.5		42	3	28	24.8		75	3	5	27.32
10	5	13	31.6		43	5	0	34.0		76	4	11	36.3
11	6	19	40.8		44	6	6	43.1		77	5	17	45.5
12	1	1	49.9		45	0	12	52.3		78	6	23	54.7
13	2	7	59.1		46	1	19	1.5		79	1	6	3.8
14	3	14	8.3		47	3	1	10.6		80	2	12	13.0
15	4	20	17.4		48	4	7	19.8		81	3	18	22.1
16	6	2	26.6		49	5	13	29.0		82	5	0	31.3
17	0	8	35.8		50	6	19	38.1		83	6	6	40.5
18	1	14	44.9		51	1	1	47.3		84	0	12	49.6
19	2	20	54.1		52	2	7	56.4		85	1	18	58.8
20	4	3	3.2		53	3	14	5.6		86	3	1	8.0
21	5	9	12.4		54	4	20	14.8		87	4	7	17.1
22	6	15	21.6		55	6	2	23.9		88	5	13	26.3
23	0	21	30.7		56	0	8	33.1		89	6	19	35.4
24	2	3	39.9		57	1	14	42.3		90	1	1	44.6
25	3	9	49.1		58	2	20	51.4		91	2	7	53.8
26	4	15	58.2		59	4	3	0.6		92	3	14	2.9
27	5	22	7.4		60	5	9	9.7		93	4	20	12.1
28	0	4	16.5		61	6	15	18.9		94	6	2	21.3
29	1	10	25.7		62	0	21	28.1		95	0	8	30.4
30	2	16	34.9		63	2	3	37.2		96	1	14	39.6
31	3	22	44.0		64	3	9	46.4		97	2	20	48.7
32	5	4	53.2		65	4	15	55.6		98	4	2	57.9
33	6	11	2.4		66	5	22	4.7		99	5	9	7.1
										100	6	15	16.2

वर्ष कुंडली रचना

प्रथम विधि :

चरणबद्ध नियम

1. वर्ष प्रवेश सारिणी से गताब्ध (completed years) का ध्रुवांक नोट करें जो वार अंक, घंटा, मिनट, सैकंड में दिया गया है। वार अंक इस प्रकार दिए गए हैं :

रविवार	1
सोमवार	2
मंगलवार	3
बुधवार	4
गुरुवार	5
शुक्रवार	6
शनिवार	7 अथवा 0

   (क्योंकि 7 अथवा अधिक अंक आने पर उसमें से 7 घटा दिए जाते हैं)

2. उसके नीचे जन्म वार तथा जन्म समय को लिखें।

3. उपरोक्त दोनों संख्याओं को जोड़ लें। इस प्रकार वार अंक, घंटा, मिनट, सैकंड प्राप्त होंगे। यदि वार अंक 7 या उससे अधिक आ जाये तो उसमें से 7 घटा दें।

4. ऊपर (1) के अंतर्गत दिए गए वार अंकों के आधार पर वार नोट करें। वर्ष प्रवेश का समय घंटा, मिनट सैकंड में जोड़ने पर आ चुका है। प्रवेशाब्ध (गताब्ध +1) वाले कैलेंडर से जन्म दिन के सबसे पास पड़ने वाले इस वार का दिनांक नोट करें। यही वर्ष प्रवेश का नया दिनांक तथा समय होगा जिसके आधार पर वर्ष कुंडली बनायी जाएगी।

उपरोक्त नियमों के आधार पर वर्ष प्रवेश का दिन व समय वर्ष 2006 के लिए निम्न प्रकार से होगा –

		दि.	घं.	मिनट
गताब्ध : 2006–1973 = 33 वर्ष				
वर्ष प्रवेश सारिणी से 33 वर्ष का ध्रुवांक		6	11	2.4
जन्म का ध्रुवांक	(+)	3	20	15
जोड़ने पर –		10	7	17.4
	(–)	7		
मंगलवार –		3	7	17.4

(दिन के अंतर्गत 3 अंक का अर्थ है मंगलवार का दिन क्योंकि रविवार सप्ताह का पहला दिन है)
2006 के केलेन्डर में देखने पर 31 जुलाई के पास मंगलवार 1 अगस्त 2006 को पड़ता है। अतः 34 वें प्रवेशाब्द के लिए वर्ष कुंडली का दिनांक : 1.8.2006, समय : प्रातः 7 घंटे 17.4 मिनट, स्थान : दिल्ली।

दूसरी विधि :

यह विधि जन्म कुंडली के सूर्य स्पष्ट पर आधारित है। इसके चरणबद्ध नियम इस प्रकार हैः

1. जन्मकुंडली का सूर्य स्पष्ट नोट करें।
2. प्रवेशाब्द वाले वर्ष का पंचांग देखें। जिन दो तारीखें के मध्य उपरोक्त सूर्य स्पष्ट पड़ता है, उन्हें नोट करें।
3. इन दो दिनांकों को प्रातः 5.30 बजे के सूर्य स्पष्ट के आधार पर 24 घंटे की सूर्य की गति अंश/कला में निकालें।
4. जन्मकुंडली के सूर्य के स्पष्ट भोगांश पर सूर्य कितने बजे, किस दिन पहुंचेगा, निकालें। यही वर्ष प्रवेश समय वर्ष कुंडली का लिया जाएगा। जन्म स्थान में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

उदाहरण कुंडली में वर्ष 2006 के लिए इस विधि से वर्ष प्रवेश समय इस प्रकार निकालेंगे—

जन्म का सूर्य स्पष्ट	: 3^{s}—14^{0}—$45'$
2.8.2006 प्रातः 5:30 बजे सूर्य स्पष्ट	: 3^{s}—15^{0}—$38'$
1.8.2006 ʻʻ ʻʻ ʻʻ ʻʻ	: 3^{s}—14^{0}—$41'$
24 घंटे में सूर्य की गति	: 0^{0}—$57'$
जन्म सूर्य स्पष्ट	: 3^{s}—14^{0}—$45'$
1.8.2006 प्रातः 5:30 बजे का सूर्य स्पष्ट	: 3^{s}—14^{0}—$41'$
अंतर	0^{0}—$04'$

57' सूर्य चलता है : 24 घंटे में

1' ʻʻ ʻʻ : $\frac{24}{57}$ ʻʻ ʻʻ

4' ʻʻ ʻʻ : $\frac{24 \times 4}{57}$ = 1.684 घं. = 101.05 मिनट

(यानि 1 घंटा 41 मिनट)

		घं.	मि.
प्रातः सूर्य स्पष्ट का समय :		5	30
04' चलने में लगा समय :	(+)	1	41
वर्ष कुंडली का प्रवेश समय		7	11

अतः दूसरी विधि से वर्ष प्रवेश दिनांक : 1.8.2006

वर्ष प्रवेश समय : 07:11 घंटे

दोनों विधियों से वर्ष प्रवेश के समय में 6.4 मि. का अंतर आता है। अधिकतर विद्वान दूसरी विधि से वर्ष प्रवेश समय निकालने के पक्ष में हैं।

वर्ष कुंडली :

वर्ष प्रवेश तिथि : 1.8.2006, मंगलवार
वर्ष प्रवेश समय : 0 7:11 घंटे
वर्ष प्रवेश स्थान : दिल्ली, अक्षांक्ष 28N39, रेखांश : 77E13
LMT शुद्धि : (-) 21 मि. 8 सै. ST स्थान शुद्धिः (+) 0–03 सै.

उपरोक्त आधार पर जन्म कुंडली की ही तरह वर्ष कुंडली बना ली जाती है। N.C. Lahiri की TOA तथा 2006 की Ephemeris के अनुसार वर्ष कुंडली की रचना निम्न प्रकार की जाएगी :

			घं.	मि.	सै.	
1 अगस्त का सा. का	=		8	37	38	
2006 वर्ष की शुद्धि	=	(+)		1	19	
ST स्थान शुद्धि	=	(+)		0	03	
शोधित सा. का.			8	39	00	– (A)
वर्ष प्रवेश समय	=		7	11	00	
LMT शुद्धि	=	(–)		21	08	
स्थानीय समय (LMT)	=		6	49	52	
स्थानीय मध्याह्न	=		12	00	00	
स्थानीय समय	=	(–)	6	49	52	
12 बजे से समय अंतर	=		5	10	08	
मध्यांतर शुद्धि (5 घं. 10 मि.)	=	(+)		00	51	
शुद्ध मध्यांतर	=		5	10	59	– (B)

स्थानीय समय मध्याह्न पूर्व होने के कारण A में से B को घटाकर इष्ट सा. का. ज्ञात होगा। अतः

			घं.	मि.	सै.	
शोधित सा. का. (A)	=		8	39	00	
शुद्ध मध्यांतर (B)	=	(–)	5	10	59	
इष्ट सा. का. (ST of Epoch)	=		3	28	01	– (C)

दिल्ली के अक्षांश अनुसार लग्न सारिणी से :

		रा.	अं.	क.	
3–32 का लग्न	=	4	4	39	
3–28 ‘‘ ‘‘	= (–)	4	3	47	
4 मि. या 240 सै. में लग्न गति	=		0	52	
1 ‘‘ ‘‘	=	$\frac{52'}{240}$		= 0–00–13"	
		रा.	अं.	क.	वि.
3–28–00 का लग्न	=	4	3	47	00
00–01 ‘‘ ‘‘	= (+)		0	00	13
3–28–01 ‘‘ ‘‘	=	4	3	47	13
अयनांश शुद्धि (2006)	= (–)		0	57	00
लग्न स्पष्ट (वर्ष कुंडली)	=	4	2	50	13

अर्थात = सिंह 2^0 50^1

ग्रह स्पष्ट :		घं	मि.	सै.
वर्ष प्रवेश समय	=	07	11	00
पंचांग ग्रह स्पष्ट समय	= (–)	05	30	00
समय अंतर	=	01	41	00
समय अंतर का लॉग	=	1.1540		

ग्रह स्पष्ट

	सूर्य रा–अं–क.	चंद्र रा–अं–क.	मंगल रा–अं–क.	बुध रा–अं–क.	गुरु रा–अं–क.	शुक्र रा–अं–क.	शनि रा–अं–क.	राहु रा–अं–क.
2–8–2006	3–15–38	6–11–32	4–12–26	2–27–55	6–16–04	2–22–51	3–20–12	11–2–25
1–8–2006	3–14–41	5–29–29	4–11–48	2–27–34	6–16–00	2–21–38	3–20–04	11–2–26
24 घंटे की गति	0–57	12–03	0–38	0–21	0–04	1–13	0–08	(–) 0–01
गति का लॉग	1.4025	0.2992	1.5786	1.8361	2.5563	1.2950	2.2553	3.1584
समय अंतर लॉग	1.1540	1.1540	1.1540	1.1540	1.1540	1.1540	1.1540	1.1540
जोड़	2.5565	1.4532	2.7326	2.9901	3.7103	2.4490	3.4093	4.3124
जोड़ का एंटी लॉग	0–0–04	0–0–51	0–0–03	0–0–02	0–0–00	0–0–05	0–0–00	0–0–00
1.8.2006 ग्रह स्पष्ट	3–14–41	5–29–29	4–11–48	2–27–34	6–16–00	2–21–38	3–20–04	11–2–26
ग्रह स्पष्ट(07–11)	3–14–45	6–00–20	4–11–51	2–27–36	6–16–00	2–21–43	3–20–04	11–2–26

वर्ष कुंडली : 1.8.2006, मंगलवार
वर्ष प्रवेश : 07–11 घं., दिल्ली

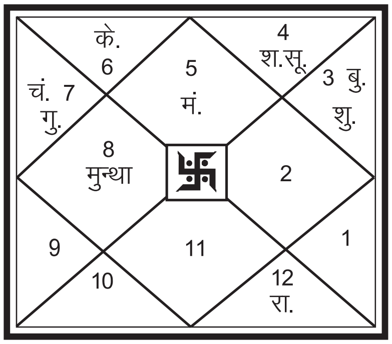

वर्ष नक्षत्र : चित्रा–1

ग्रह	राशि	अंश	कला
लग्न	4	02	50
सूर्य	3	14	45
चंद्र	6	00	20
मंगल	4	11	51
बुध	2	27	36
गुरु	6	16	00
शुक्र	2	21	43
शनि	3	20	04
राहु	11	02	26
केतु	5	02	26

वर्ष प्रवेश का फल विचार

वर्ष प्रवेश में सोमवार, बुधवार, गुरुवार व शुक्रवार शुभ माने जाते हैं।

शुभ नक्षत्रों में अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, स्वाति तथा रेवती का विशेष महत्व है।

तिथियों में चतुर्थी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी, अमावस्या तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को छोड़कर अन्य सभी तिथियां शुभ हैं।

योगों में अशुभ योग अर्थात् विषकुंभ, अतिगंड, शूलगंड, व्याघात, वज्र, व्यतिपात, परिध व वैधृति के अतिरिक्त अन्य सभी योग शुभ माने जाते हैं किंतु भद्रा मिश्रित योग शुभ फलकारक नहीं होते।

यदि जन्म कुंडली के ही वार, तिथि, नक्षत्र वर्ष कुंडली में भी पड़ते हों तो वर्ष प्रवेश बहुत शुभ होता है। किंतु जन्म लग्न यदि वर्ष कुंडली का भी लग्न पड़े तो वह द्विजन्मा वर्ष कहलाता है जिसे शुभ नहीं माना जाता। यदि जन्म कुंडली के षष्ठेश, अष्टमेश वर्ष कुंडली लग्न में स्थित हों तो वर्ष लगते ही शारीरिक कष्ट घेर लेते हैं तथा 21 दिन तक विशेष अरिष्ट कारक समय होता है।

वर्ष प्रवेश समय में अंतर के कारण

उदाहरण कुंडली से वर्ष कुंडली जब हमने दो अलग विधियों, यानि वर्ष प्रवेश सारिणी एवं सूर्य स्पष्ट आधारित, से बनाई तो वर्ष प्रवेश समय में 6 मिनट से अधिक का अंतर आया। इसी प्रकार यदि हम भिन्न–भिन्न प्रचलित अयनांश प्रणालियों का उपयोग करें तब भी वर्ष प्रवेश समय तथा वर्ष लग्न के अंशों में अंतर आना स्वाभाविक है। अयनांश प्रणालियों से हमारा आशय है एन.सी. लाहिरी, बी.वी. रमण, कृष्णमूर्ति पद्धति आदि द्वारा अनुमोदित अयनांश।

इसके अतिरिक्त प्रायः देखने में आता है कि हस्त गणना व कम्प्यूटर कृत वर्ष कुंडली के वर्ष प्रवेश समय

तथा लग्नांशों में भी कुछ अंतर आ जाता है। यह अंतर एक से दो अंशों तक हो सकता है जिससे प्रायः फलित में बड़ा फर्क नहीं पड़ता किंतु यदि लग्न राश्यांत हो तो वर्ष कुंडली की लग्न राशि बदलने की आशंका हो जाती है। स्पष्ट है ऐसे में फल कथन में भी मूलभूत अंतर आ सकता है। इसलिए जब भी लग्नांश 1° अथवा 30° के आसपास हों तो विशेष सावधानी बरतना आवश्यक है। इस पुस्तक में सर्वाधिक प्रचलित एन.सी. लाहिरी अयनांश का ही उपयोग किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

1. वर्ष कुंडली बनाने का क्या प्रयोजन है?
2. आधुनिक मत से सूर्य को अपने जन्म कुंडली वाले भोगांश पर आने में आधुनिक मतानुसार कितना समय प्रतिवर्ष लगता है?
3. गताब्ध तथा प्रवेशाब्द में क्या अंतर है?
4. यदि जातक का जन्म 31 जुलाई 1973 को दिल्ली में रात्रि 8.15 बजे, मंगलवार को हुआ हो तो–
   (i) वर्ष प्रवेश सारिणी की सहायता से वर्तमान वर्ष की वर्ष प्रवेश तिथि, वार व समय ज्ञात कीजिए।
   (ii) यदि जन्म कुंडली का सूर्य स्पष्ट $3^{\text{रा}}$–14^{0}–$45'$ हो तो वर्तमान वर्ष प्रवेश तिथि तथा समय पंचांग की सहायता से ज्ञात करें।
5. द्विजन्मा वर्ष किसे कहते हैं? क्या यह शुभ होता है?
6. यदि जन्म कुंडली के ही वार, तिथि तथा नक्षत्र वर्ष कुंडली में भी पड़ते हों तो वर्ष प्रवेश कैसा माना जाता है?
7. यदि जन्म कुंडली के षष्टेश अथवा अष्टमेश वर्ष कुंडली के लग्न में स्थित हों तो जातक के स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ता है?

3. मुन्था

विद्वानों के अनुसार मुन्था शब्द फारसी के 'इन्तिहा' का ही अपभ्रंश है, जिसका अर्थ सीमा या समाप्ति होता है। 'इन्तिहा' से बिगड़कर मिन्थिहा, 'मिन्था', मुन्थहा होते–होते अंत में 'मुन्था' बन गया। मुन्था ताजिक ज्योतिष का एक विशिष्ट अवयव है। वास्तव में यह जन्म लग्न का ही 'प्रोगेशन' हैं जन्म के वर्ष में यह मुन्था लग्न में होती है, अगले वर्ष दूसरे भाव में, तीसरे वर्ष तीसरे भाव में, इस प्रकार 12 वर्षों में कुंडली के 12 भावों में होते हुए 13वें वर्ष में यह फिर लग्न में पहुंच जाती है।

मुन्था नयन विधि

वर्ष कुंडली में मुन्था की स्थिति ज्ञात करने के लिए दो सूत्र हैं – भावगत तथा राशिगत मुन्था नयन।

सूत्र 1–भावगत

(गताब्ध+1)÷12 करके शेष तुल्य की गिनती जन्म लग्न से करते हुए मुन्था अंकित करें।

सूत्र 2–राशिगत

(गताब्ध+जन्म लग्न राशि)÷12 करके शेष तुल्य राशि में वर्ष कुंडली में मुन्था अंकित करें।

उदाहरण कुंडली में मुन्था नयन

सूत्र 1 के अनुसार : (33+1) ÷12 = शेष 10 अर्थात् जन्म लग्न की राशि 11 (कुंभ) से 10 तक गिनने पर 8 (वृश्चिक) राशि में मुन्था अंकित करें।

सूत्र 2 के अनुसार : (33+11) ÷12 = शेष 8 अर्थात् वृश्चिक राशि में मुन्था अंकित करें।

इस प्रकार दोनों सूत्रों से परिणाम एक ही आता है।

मुन्था फल

मुन्था जिस भाव में पड़ती है, उस वर्ष वह भाव विशेष रूप से क्रियाशील हो जाता है तथा जातक को उस भाव से संबंधित शुभ या अशुभ फल उस वर्ष में प्राप्त होते हैं।

श्रेष्ठ मुन्था : 9, 10, 11 भाव में पड़ने पर

शुभ मुन्था : 1, 2, 3, 5 भाव में पड़ने पर

अशुभ मुन्था : 6, 8, 12 भाव में पड़ने पर

निकृष्ट मुन्था : 4, 7 भाव में पड़ने पर

प्रथम भाव

शुभ फलदायक, अच्छा स्वास्थ्य, व्यवसाय, नौकरी में उन्नति, मान–सम्मान, भाग्य वृद्धि आदि। लग्न में चर राशि (1, 4, 7, 10) हो तो व्यवसाय, नौकरी या स्थान परिवर्तन का संकेत है।

द्वितीय भाव
यश, सम्मान, धन संपत्ति, कार्य सिद्धि, व्यवसाय, नौकरी में उन्नति, अच्छा भोजन, मनोरंजन, लाभ आदि।

तृतीय भाव
भाइयों, संबंधियों से सुख, लाभ, साहस, यश, सफलता, शत्रुओं/विरोधियों पर विजय आदि।

चतुर्थ भाव
मानसिक अशांति, पारिवारिक कलह, शरीर अस्वस्थ, राज्य की ओर से परेशानियां आदि।

पचंम भाव
संतान व विद्या संबंधी शुभ फल, राज्य से सहयोग, धार्मिक आचरण, उन्नति, सुख।

षष्ठ भाव
शारीरिक व्याधियां, मानसिक अशांति, शत्रुओं से हानि, चोरी, कर्ज, व्यवसाय में हानि।

सप्तम भाव
जीवन साथी को शारीरिक रोग/कष्ट, व्यवसाय में हानि, यश/सम्मान को ठेस, व्यर्थ यात्राएं।

अष्टम भाव
रोग, दुर्घटना, धन हानि, मान हानि, भय, लंबी व्यर्थ व हानिकारक यात्राएं, बुरी आदतें।

नवम भाव
भाग्य उदय, आकस्मिक लाभ, राज्य कृपा, व्यापार, नौकरी में उन्नति, पारिवारिक सुख, सहयोग।

दशम भाव
उच्च पद प्राप्ति, व्यवसाय या नौकरी में पदोन्नति, राज्य से सहयोग, सद्कर्म, यश वृद्धि।

एकादश भाव
सभी कार्यों में सफलता, लाभ, धन व सम्मान वृद्धि, स्वास्थ्य लाभ, भाग्यवर्धक, राज्य सहयोग।

द्वादश भाव
स्वास्थ्य हानि, धन–हानि, व्यर्थ यात्राएं व खर्च, स्थान परिवर्तन, कार्यों में असफलता, निद्रा रोग।

मुन्था पर ग्रहों की राशि, युति/दृष्टि का फल

सूर्य : मुन्था सूर्य से युत/दृष्ट अथवा सिंह राशि में हो तो राज्य कृपा, सरकारी नौकरी में पदोन्नति, पिता से लाभ उच्च अधिकारियों से मित्रता व लाभ, चुनाव में सफलता आदि शुभ फलों की प्राप्ति होती है। किंतु 4, 8,12 भाव की मुन्था हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में जातक को अशुभ फल मिलेंगे।

चंद्रमा : चंदमा बलवान हो तो अच्छा स्वास्थ्य, शारीरिक व मानसिक सुख, यश–सम्मान में वृद्धि, सुख व आनंद की प्राप्ति, सात्विक विचार व आचरण आदि शुभ फल। चंद्रमा पीड़ित व क्षीण बली हो तो उपरोक्त अशुभ फलों की प्राप्ति होती है।

मंगल : मंगल संबंधी रोग, चोट, दुर्घटना, शल्यक्रिया, झगड़े, धन हानि, अत्यधिक व्यय आदि अशुभ फलों की प्राप्ति होती है। किंतु मंगल बलवान व शुभ प्रभाव में हो तो साहस, उत्साह में वृद्धि, विरोधियों पर विजय, सफल ऑपरेशन आदि का लाभ होता है।

बुध : विवाह, मंगलकार्य, मीडिया संबंधी कार्यों में सफलता, विद्या लाभ, व्यापार में उन्नति, स्त्रियों से मित्रता व आकस्मिक लाभ आदि शुभ फल मिलते हैं। किंतु यदि बुध पापी ग्रह द्वारा पीड़ित हो तो उपरोक्त संबंधी कार्यों में व्यवधान पड़ते हैं या हानि की संभावनाएं बढ़ती हैं।

गुरु : संतान प्राप्ति अथवा सुख, विद्या लाभ, गुरु प्राप्ति, धन लाभ, भाग्य, यश, पद, राज्य कृपा, उच्च व्यक्तियों से संबंध आदि शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

शुक्र : लक्ष्मी कृपा, भोग–विलास सामग्री, वाहन प्राप्ति, विवाह, स्त्री सुख आदि शुभ फलों में वृद्धि होती हैं किंतु पीड़ित शुक्र जातक को व्यसन, पतन व अपकीर्ति के मार्ग पर ले जाता है।

शनि : शनि युत मुन्था जातक को शारीरिक व मानसिक पीड़ा, अत्यधिक व्यय, हानि, कार्यों में असफलता व गृह त्याग की ओर धकेल देती है।

राहु/केतु : राहु/केतु की युति भी शनि की तरह मुन्था पर दूषित प्रभाव बनाती है। जातक को लांछन, अपकीर्ति, पतन व असफलता की ओर ले जाती है, किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु का भी संकेत करती है।

कुछ विद्वानों का मत है कि राहु वर्ष के प्रारंभ में शुभ फल करता है तथा अंत में अशुभ। इसके विपरीत केतु आरंभ में कष्ट देता है तथा अंत में शुभ फल करता हैं।

राहु मुख में मुन्था शुभ

यह भी कहा जाता है कि राहु के मुख में मुन्था शुभ फलदायक होती है तथा पूंछ अथवा पृष्ठ में अशुभ फल करती है। वक्री होने के कारण राहु राशि के अंत से राशि में प्रवेश करता है। अतः राशि के अंत से वर्ष कुंडली में राहु के रेखांश तक राहु का मुख होता है तथा शेष भाग में पूंछ। मुन्था के अंश, कला निकाल कर इस पर विचार किया जाता है।

- यदि मुन्था के साथ शनि, मंगल, पापी ग्रह वर्षेश होकर स्थित हों तो ऐसी मुन्था के शुभ फल ही होंगे।
- मुन्था पर त्रिक (6, 8, 12) भावों के स्वामियों की युति/दृष्टि (शत्रु) का प्रभाव अशुभ होता है।
- मुन्थेश यदि नीच, वक्री, पाप क्षेत्री, पाप कर्तरी में हो तो शुभ मुन्था के फलों में कमी आती है।

मुन्थेश

मुन्था की राशि का स्वामी मुन्थेश कहलाता है। ध्यान रहे, मुन्था का पूर्ण फल तभी मिल पाता है जबकि मुन्थेश की स्थिति वर्ष कुंडली में शुभ स्थान में हो तथा मुन्थेश बलवान भी हो। अतः मुन्था फल ज्ञात करने

के लिए मुन्थेश का विचार करना भी आवश्यक है।

कुछ विद्वानों का मत है कि मुन्थेश भी उन्हीं भावों में होकर शुभ फल करता है जो मुन्था के लिए शुभ माने जाते हैं यानि 9, 10, 11 तथा 1, 2, 3, 5 भाव। अन्य विद्वान पाराशरी नियमों के अनुसार मुन्थेश की केंद्र या त्रिकोण में स्थिति (1, 4, 7, 10, 5, 9) को शुभ मानते हैं। इसके अतिरिक्त स्वराशि या उच्च राशि का मुन्थेश सदैव शुभ फल देता है। यहां भी 6, 8, 12 भावों में मुन्थेश की स्थिति अशुभ ही मानी जाती है किंतु 4, 7 भावों, जहां मुन्था निकृष्ट मानी जाती है, वहीं मुन्थेश को अशुभ नहीं माना जाता।

मुन्था का फल कब मिलता है

मुन्था का सामान्य फल तो पूरे वर्ष मिलता रहता है किंतु विशेष फल मुन्थेश की मुद्दा दशा में प्राप्त होता है। कुछ विद्वान मानते हैं कि जिस भाव की संख्या में मुन्था स्थित है, वर्ष के उस मास में मुन्था अधिक फलित होती है। इसके अतिरिक्त मुन्था को प्रभावित करने वाले सबसे बलवान ग्रह की दशा में भी मुन्था का शुभाशुभ फल मिलता है।

अभ्यास प्रश्न

1. मुन्था से आप क्या समझते हैं? ताजिक ज्योतिष में मुन्था का क्या महत्व है?
2. वर्ष कुंडली में मुंथा अंकित करने की क्या विधि है अर्थात मुन्था नयन किस प्रकार किया जाता है? उदाहरण सहित समझायें।
3. मुन्था के शुभाशुभ फल वर्ष कुंडली के 12 भावों के अनुसार विस्तार से लिखें।
4. शुभ व अशुभ मुन्था कौन से भावों में मानी जाती है? मुन्था के सर्वश्रेष्ठ भाव कौन से हैं?
5. मुन्था पर विभिन्न ग्रहों की युति/दृष्टि अथवा राशियों का क्या प्रभाव पड़ता है? विस्तार से लिखें।
6. मुन्थेश किसे कहते हैं? मुन्थेश की स्थिति किन भावों में शुभ तथा किन भावों में अशुभ मानी जाती है? मुन्था तथा मुन्थेश के विशेष फल वर्ष में किस समय जातक को प्राप्त होते हैं?

4. ताजिक दृष्टि

ताजिक ज्योतिष में दृष्टि विचार पाराशरी से भिन्न है।

- पाराशरी ज्योतिष में दृष्टा ग्रह की नैसर्गिक शुभता या अशुभता के अनुसार दृष्टि शुभ या अशुभ मानी जाती है। जबकि ताजिक में दृष्टि में ही शुभता या अशुभता निहित होती है यानि यहां दृष्टा ग्रह का महत्व प्राथमिक नहीं है।
- पाराशरी में सभी ग्रहों की 7वीं दृष्टि होती है तथा बाह्य ग्रहों (शनि, गुरु, मंगल) तथा राहु/केतु की अतिरिक्त विशेष दृष्टियां होती हैं। किंतु ताजिक में सभी ग्रहों की एक जैसी दृष्टियां होती हैं। जो कि उनके कुंडली में स्थान/स्थिति के कारण उत्पन्न होती हैं।
- पाराशरी से भिन्न ये ताजिक दृष्टियां एक जोड़े में तथा परस्पर दृष्टियां होती हैं। ग्रह वर्ष/प्रश्न कुंडली में जहां स्थित हैं वहां से गणना की जाती है।

ताजिक में निम्न 5 प्रकार की दृष्टियां होती हैं:–

1. प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि – 5 तथा 9 वीं
2. गुप्त मित्र दृष्टि – 3 तथा 11 वीं
3. प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि – 1 तथा 7 वीं
4. गुप्त शत्रु दृष्टि – 4 तथा 10 वीं
5. सम या अदृष्टि – 2–12 तथा 6–8

• कुछ विद्वानों ने इन दृष्टियों की शुभता का प्रतिशत भी निर्धारित कर दिया है जो इस प्रकार है :–

5 तथा 9 दृष्टि की शुभता = 75%

3 ʻʻ ʻʻ ʻʻ = 65%

11 ʻʻ ʻʻ ʻʻ = 35%

4 तथा 10 ʻʻ ʻʻ ʻʻ = 25%

1 तथा 7 ʻʻ ʻʻ ʻʻ = 10%

पश्चिमी ज्योतिष की तरह केंद्रीय प्रभाव (1–4–7–10) को ताजिक में भी शत्रु/पापी माना गया है।

दीप्तांश

ताजिक ज्योतिष का यह भी एक नया अवयव (factor) है जो पाराशरी दृष्टियों से हटकर है तथा अधिक तर्कपूर्ण भी लगता है।

पाराशरी में जो ग्रह अभी–अभी राशि में प्रविष्ट हुआ है यानी जिसका रेखांश 1^0 से भी कम है वह भी दृष्ट राशि अथवा उसमें स्थित ग्रह को चाहे उसके रेखांश 29^0 से भी अधिक हों, अपनी पूर्ण दृष्टि (100%) से देखता है। इस प्रकार दृष्टि का विस्तार लगभग दो राशि या 60^0 के बराबर हो गया है जो बहुत स्थूल तथा अव्यावहारिक प्रतीत होता है।

यदि पश्चिमी ज्योतिष की बात करें तो वहां ग्रह की दृष्टि दूसरे ग्रह पर तभी मानी जाती है जब दोनों ग्रहों के अंशों में अधिक से अधिक 3^0 का वर्तुल (orb) हो।

यानि जहां पाराशरी में दृष्टि का आधार बहुत स्थूल है वहीं पश्चिमी ज्योतिष में बहुत सूक्ष्म। व्यावहारिक दृष्टि से दोनों ही दोषपूर्ण प्रतीत होते हैं। ताजिक ज्योतिष में यह विरोधाभास दीप्तांशों के माध्यम से दूर होकर व्यावहारिक दृष्टिकोण से बहुत सटीक बन गया है। सभी ग्रहों के दीप्तांश निम्न प्रकार से निश्चत किए गए हैं :

सूर्य–15^0, चंद्र–12^0, मंगल–8^0, बुध–7^0, शुक्र–7^0, गुरु–9^0, शनि 9^0

- दीप्तांशों का प्रयोग ताजिक योगों के बनाने में किया जाता है। दृष्टा व दृष्ट दोनों ग्रहों के दीप्तांशों को जोड़कर उसका आधा कर लें (यानि दोनों ग्रहों के दीप्तांशों का औसत ले लें)। यदि दोनों ग्रहों की अंशगत दूरी उनके दीप्तांशों के मध्यमान के अंतर्गत पड़ती है तो वे ताजिक योग बनाने में सक्षम होंगे वरना नहीं।
- इसका अर्थ है दोनों ग्रह आपस में दृष्टि संबंध तो बना सकते हैं किंतु ताजिक योग बनाने के लिए उनका दीप्तांशों के मध्यमान के अंतर्गत होना आवश्यक है।
- दीप्तांशों के बारे में यहां इसलिए जिक्र करना आवश्यक समझा क्योंकि यह भी मूलतः दृष्टि का ही विस्तार है जिसका प्रयोग ताजिक योगों के लिए किया जाता है। ताजिक योगों का वर्णन आगे किया जाएगा।

अभ्यास प्रश्न

1. ग्रहों की ताजिक तथा पाराशरी दृष्टियों में क्या भिन्नता है। ताजिक में कितने प्रकार की दृष्टियां होती हैं ? सम अथवा अदृष्टि से क्या अभिप्राय है? ताजिक दृष्टियों की शुभता के प्रतिशत का उल्लेख करें।
2. दीप्तांश का क्या अर्थ है? विभिन्न ग्रहों के दीप्तांशों के अंश बतायें। दीप्तांशों का उपयोग ताजिक योगों के निर्माणमें किस प्रकार किया जाता है, उदाहरण सहित वर्णन करें।

5. ताजिक में ग्रहों का बल निर्धारण

पद्धति कोई भी हो, पाराशरी, जैमिनी अथवा ताजिक, कुंडली विश्लेषण में ग्रहों का बलाबल अत्यंत महत्वपूर्ण है। ताजिक में मुख्य रूप से बल निर्धारण की दो विधियां मानी गई है :–

1. पंच वर्गीय बल साधन 2. द्वादश वर्गीय बल साधन

दोनों विधियों से बिना केलकुलेटर/कम्प्यूटर की सहायता से बल साधन काफी समय लेता है। पहले क्योंकि कम्प्यूटर का चलन नहीं था अतः यह कार्य बहुत ही श्रम साध्य था जिसे विद्वान ज्योतिषी ही कर सकते थे। इसलिए विद्वानों ने एक और विधि का विकास किया जिसे ''हर्षबल साधन'' कहते हैं। इस विधि से शीघ्रता से बल निकाला जा सकता है तथा 75% तक गणना भी सही होती है। यह बल आसानी से बिना कम्प्यूटर/केलकुलेटर की सहायता के निकाला जा सकता है। यद्यपि अब कम्प्यूटर की मदद से कठिन से कठिन ज्योतिषीय गणना एक खेल बन चुकी है परंतु ताजिक में हर्ष बल साधन अभी भी लोकप्रिय है। पहले हम इस विधि का ही अध्ययन करेंगे।

हर्ष बल साधन

इसका नाम हर्ष बल संभवतः इसलिए रखा गया है कि इसमें ग्रहों की हर्षित अवस्था का विचार किया है। कोई ग्रह किस राशि, किस भाव, किस समय में कितना हर्षित होता है उसी अनुपात में उसका बल होता है। बल की गणना ''बिश्वा/बिस्वा'' में की जाती है जो अंक 20 पर आधारित है। बली होने पर ग्रह को 5 बिश्वा बल प्राप्त होता है।

ग्रहों के हर्षित होने के 4 कारण निर्धारित किए गए हैं तथा इन्हीं के आधार पर बल साधन किया जाता है।

1. स्थान बल : वर्ष कुंडली में प्रत्येक ग्रह किसी स्थान विशेष में स्थित होने पर 5 बिश्वा बल अर्जित करता है।

सूर्य	: 9 भाव
चंद्रमा	: 3 भाव
मंगल	: 6 भाव
बुध	: 1 भाव
गुरु	: 11 भाव
शुक्र	: 5 भाव
शनि	: 12 भाव

2. स्वोच्च बल : सभी ग्रह अपनी स्व या उच्च राशि में हर्षित होकर 5 बिश्वा बल पाते हैं।

3. स्त्री–पुरुष बल : लिंग आधार पर पाराशरी से भिन्न ताजिक में ग्रहों की केवल दो ही श्रेणी में विभाजित किया गया है : पुरुष ग्रह तथा स्त्री ग्रह।

पुरुष ग्रह : सूर्य, मंगल, गुरु

स्त्री ग्रह : चंद्र, बुध, शुक्र तथा शनि

ताजिक में भावों को भी लिंग के आधार पर पुरुष व स्त्री लिंगों मे बांटा गया है।

पुरुष भाव : 1, 2, 3, 7, 8, 9

स्त्री भाव : 4, 5, 6, 10, 11, 12

विपरीत लिंग के प्रति स्वाभाविक आकर्षण के कारण पुरुष ग्रह स्त्री भावों में स्थित होकर तथा स्त्री ग्रह पुरुष भावों में स्थित होकर हर्षित होते हैं तथा इस आधार पर उन्हें 5 बिश्वा बल प्राप्त होता है।

4. दिवा रात्रि बल

पुरुष ग्रह : दिन के वर्ष प्रवेश में बली

स्त्री ग्रह : रात्रि के वर्ष प्रवेश में बली

यह भी प्रकृति के नियमों पर ही आधारित तथ्य है जिसके अनुसार ग्रहों को 5 बिश्वा बल प्राप्त होता है।

उपरोक्त आधार पर उदाहरण कुंडली में हर्ष बल की गणना इस प्रकार होगी :—

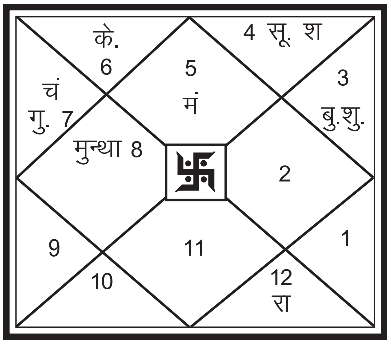

हर्ष बल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
1. स्थान बल	—	5	—	—	—	—	5
2. स्वोच्च बल	—	—	—	5	—	—	—
3. स्त्री पुरुष बल	5	5	—	—	—	—	—
4. दिवा रात्रिबल	5	—	5	—	5	—	—
कुल योग (बिश्वा)	10	10	5	5	5	—	5

पंचवर्गीय बल साधन

यह बल हर्ष बल से अधिक सटीक माना जाता है। वैसे भी हर्ष बल का केवल सुविधा की दृष्टि से महत्व माना जाता है क्योंकि इसे निकालने के लिए कम समय तथा श्रम लगता है। गुणवत्ता की दृष्टि से तो पंचवर्गीय बल का ही ताजिक में सर्वाधिक महत्व है। कम्प्यूटर युग में गणना की जटिलता का जब कोई महत्व नहीं रह गया है तो हर्ष बल का औचित्य ही समाप्त हो गया है।

पंचवर्गीय बल निम्न 5 प्रकार के बलों पर आधारित है :

1. राशि बल
2. उच्च बल
3. हद्दा बल
4. द्रेष्काण बल
5. नवांश बल

किंतु उपरोक्त बलों के निर्धारण से पूर्व यदि ग्रहों का मैत्री चक्र बना लिया जाए तो हमारी यह प्रक्रिया सरल व सुविधाजनक हो जाएगी क्योंकि बल का आधार ग्रहों की मैत्री पर ही निर्भर करता है।

मैत्री चक्र

ग्रहों के बल निर्धारण में मैत्री चक्र बनाना अति आवश्यक है। कोई ग्रह किस राशि में स्थित है तथा उस राशि के स्वामी के साथ ग्रह का कैसा संबंध है, यानि मित्र, शत्रु या सम, उसके आधार पर उसके बल का निश्चय किया जाता है। किंतु ताजिक में पाराशरी वाले न तो नैसर्गिक संबंध काम आते हैं न तात्कालिक, जिनके आधार पर पंचघा मैत्री चक्र बनाया जाता है।

ताजिक में ग्रहों के केवल तात्कालिक संबंधों के आधार पर मैत्री चक्र बनाया जाता है। किंतु इस मैत्री का आधार उस ग्रह की केवल ताजिक दृष्टि होती है।

ग्रह से 3, 5, 9, 11 स्थान पर स्थित ग्रह – मित्र

ग्रह से 1, 4, 7, 10 स्थान पर स्थित ग्रह – शत्रु

ग्रह से 2, 12, 6, 8 स्थान पर स्थित ग्रह – सम

बल साधन से पूर्व इस मैत्री चक्र को बना लेना आवश्यक है। यह वर्ष कुंडली के आधार पर बनाया जाता है।

मैत्री चक्र के साथ ही हमें अनुपातिक बल कोष्ठक भी बना लेना चाहिए ताकि बल निर्धारण करने में त्रुटि से बच सकें।

उदाहरण कुंडली में मैत्री चक्र निम्न प्रकार होगा :–

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्र	–	मं. बु. शु.	चं. बु. गु. शु.	चं. गु. मं.	बु. शु. मं.	चं. मं. गु.	–
शत्रु	चं. गु. श.	सू. गु. श.	–	शु.	सू. चं. श.	बु.	सू. चं. गु.
सम	मं.बु. शु.	–	सू. श.	सू. श.	–	सू. श.	मं. बु. शु.

अनुपातिक बल कोष्ठक :

बल	स्व (1)	मित्र (¾)	सम (½)	शत्रु (¼)
1. राशि बल	30.00	22.50	15.00	7.50
2. हद्दा बल	15.00	11.25	7.50	3.75
3. द्रेष्काण बल	10.00	7.50	5.00	2.50
4. नवांश बल	5.00	3.75	2.50	1.25

अब हम बल निर्धारण की प्रक्रिया आरंभ करते हैं।

1. राशि बल/ग्रह बल

वर्ष कुंडली में ग्रह की स्थिति के अनुसार बल मिलता है।

स्वराशि में	:	30	बिस्वा या 30.00
मित्र ग्रह की राशि	:	22—30	बिस्वा या 22.50
सम ग्रह की राशि	:	15—00	बिस्वा या 15.00
शत्रु ग्रह की राशि	:	7—30	बिस्वा या 7.50

उदाहरण कुंडली में

ग्रह	राशि संख्या	राशि स्वामी	मैत्री संबंध	बल
सू	4	चं	शत्रु	7.50
चं	7	शु	मित्र	22.50
मं	5	सू	सम	15.00
बु	3	बु	स्व	30.00
गु	7	शु	मित्र	22.50
शु	3	बु	शत्रु	7.50
श	4	चं	शत्रु	7.50

2. उच्च बल :

ग्रहों की उच्च व नीच राशियां तथा परमोच्च व परम नीच अंश पाराशरी ज्योतिष के आधार पर ही माने जाते हैं जो निम्न प्रकार है —

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
परम उच्च	0—10^0	1—3^0	9—28^0	5—15^0	3—5^0	11—27^0	6—20^0
परम नीच (राशि व अंश)	6—10^0	7—3^0	3—28^0	11—15^0	9—5^0	5—27^0	0—20^0

उच्च बल निकालने की विधि इस प्रकार है।

(i) प्रत्येक ग्रह के भोगांश में से उसका परम नीच बिंदु घटा दें।

(ii) घटने के पश्चात् यदि राशि का अंक 5 से अधिक हो तो घटाफल को 12 राशि में से फिर घटा दें।

(iii) घटाफल के राशि अंक को 30 से गुणा कर उसके अंश बना लें।

(iv) अब कुल अंशों को 9 से भाग दें। लब्धि उच्च बल का पहला अंक होगा।

(v) शेष अंशों की 60 से गुणा करके कला बना लें।

(vi) अब कुल कलाओं को फिर 9 से भाग करें। लब्धि उच्चबल का दूसरा अंक होगा। उसे 60 से भाग कर दशमलव अंकों में भी परिवर्तित किया जा सकता है।

उदाहरण कुंडली में उच्च बल की निम्नलिखित गणना से उपरोक्त विधि स्पष्ट हो जाएगी।

वर्ष कुंडली के ग्रह स्पष्ट :

	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
राशि	3	6	4	2	6	2	3
अंश	14	0	11	27	16	21	20
कला	45	17	50	35	0	43	5

सूर्य :

$12 + 03^s - 14^0 - 45'$ $12^s - 00^0 - 00'$

(–) $06^s - 10^0 - 00'$ $09^s - 04^0 - 45'$

$09^s - 04^0 - 45'$ $02^s - 25^0 - 15'$

2x30=60
+25
=85

9)85°-15'(9
81
4x60+15 =255
9)255(28
252
3

उच्च बल = 9–28 = 9.47 बिस्वा

चंद्रमा :

$12 + 06^s - 00^0 - 17'$ $12^s - 00^0 - 00'$

(–) $07^s - 03^0 - 00'$ $10^s - 27^0 - 17'$

$10^s - 27^0 - 17'$ $01^s - 02^0 - 43'$

1x30=30
+ 2
=32

9)32°-43'(3
27
5x60+43 =343
9)343(38
342
1

उच्च बल = 3–38 = 3.64 बिस्वा

मंगल :

$04^s - 11^0 - 50'$

(–) $03^s - 28^0 - 00'$

$00^s - 13^0 - 50'$

9)13°-50'(1
9
4x60+50 =290
9)290(32
288
2

उच्च बल = 1–32 = 1.54 बिस्वा

बुध :

$12 + 02^s - 27^0 - 35'$

(–) $11^s - 15^0 - 00'$

$03^s - 12^0 - 35'$

3x30=90
+12
=102

9)102°-35'(11
99
3x60+35 =215
9)215(24
216
-1

उच्च बल = 11–24 = 11.40 बिस्वा

गुरु : $12 + 06^{s}–16^{0}–00'$ $12^{s}–00^{0}–00'$ (–) $09^{s}–05^{0}–00'$ $09^{s}–11^{0}–00'$ $09^{s}–11^{0}–00'$ $02^{s}–19^{0}–00'$ उच्च बल = 8–47 = 8.78 बिस्वा	2x30=60 +19 =79	9)79°-00'(8 72 7x60 =420 9)420(47 423 -3
शुक्र : $12 + 02^{s}–21^{0}–43'$ $12^{s}–00^{0}–00'$ (–) $05^{s}–27^{0}–00'$ $08^{s}–24^{0}–43'$ $08^{s}–24^{0}–43'$ $03^{s}–05^{0}–17'$ उच्च बल = 10–35 = 10.59 बिस्वा	3x30=90 +5 =95	9)95°-17'(10 90 5x60+17 =317 9)317(35 315 2
शनि : $03^{s}–20^{0}–05'$ (–) $00^{s}–20^{0}–00'$ $03^{s}–00^{0}–05'$ उच्च बल = 10–01 = 10.00 बिस्वा	3x30=90	9)90°-05'(10 90 0+5 =5 9)5(1 9 -4

3. हद्दा बल

हद्दा भी फारसी/उर्दू का शब्द है जिसका अर्थ है हद या सीमा। प्रत्येक राशि के 30^{0} में पांच–पांच हद बनायी गयी हैं किंतु उनका मान बराबर न होकर अलग–अलग मिलता है जो न्यूनतम 2^{0} व अधिकतम 12^{0} तक होता है। प्रत्येक हद का कोई ग्रह स्वामी या हद्देश होता है। राशि में स्थित किसी ग्रह के स्पष्ट अंशों के आधार पर हद्देश का निर्णय होता है। फिर मैत्री चक्र के अनुसार हद्देश इस ग्रह का मित्र/शत्रु/सम के आधार पर ग्रह के हद्दा बल का निश्चय किया जाता है।

हद्दा व हद्देश का निर्णय करने के लिए हद्दा सारिणी की सहायता लेना आवश्यक है क्योंकि न तो हद्दा, न हद्देश के क्रम को किसी नियमानुसार याद रखना संभव है।

राशि सं.	1 हद्दा/हद्देश	2 हद्दा/हद्देश	3 हद्दा/हद्देश	4 हद्दा/हद्देश	5 हद्दा/हद्देश
1	$0–6^0$ गु	$6^0–12^0$ शु	$12^0–20^0$ बु	$20^0–25^0$ मं	$25^0–30^0$ श
2	0–8 शु	8–14 बु	14–22 गु	22–27 श	27–30 मं
3	0–6 बु	6–12 शु	12–17 गु	17–24 मं	24–30 श
4	0–7 मं	7–13 शु	13–19 बु	19–26 गु	26–30 श
5	0–6 गु	6–11 शु	11–18 श	18–24 बु	24–30 मं
6	0–7 बु	7–17 शु	17–21 गु	21–28 मं	28–30 श
7	0–6 श	6–14 बु	14–21 गु	21–28 शु	28–30 मं
8	0–7 मं	7–11 शु	11–19 बु	19–24 गु	24–30 श
9	0–12 गु	12–17 शु	17–21 बु	21–26 मं	26–30 श
10	0–7 बु	7–14 गु	14–22 शु	22–26 श	26–30 मं
11	0–7 शु	7–13 बु	13–20 गु	20–25 मं	25–30 श
12	0–12 शु	12–16 गु	16–19 बु	19–28 मं	28–30 श

हद्दा सारिणी से स्पष्ट है कि सूर्य व चंद्रमा को हद्देश नहीं बनाया जाता।

हद्दा बल निर्णय के नियम इस प्रकार हैं –

ग्रह	अपनी हद्दा में हों तो	:	15.00
''	अपने मित्र की में हों तो	:	11.25
''	सम की हद्दा में हों तो	:	7.50
''	शत्रु की हद्दा में हों तो	:	3.75

उदाहरण कुंडली में हद्दा बल गणना :

ग्रह	राशि	अंश	हद्देश	मैत्री	बल
सूर्य	कर्क	$14^0–45'$	बुध	सम	7.50
चंद्र	तुला	$00^0–17'$	शनि	शत्रु	3.75
मंगल	सिंह	$11^0–50'$	शनि	सम	7.50
बुध	मिथुन	$27^0–35'$	शनि	सम	7.50
गुरु	तुला	$16^0–00'$	गुरु	स्वराशि	15.00
शुक्र	मिथुन	$21^0–43'$	मंगल	मित्र	11.25
शनि	कर्क	$20^0–05'$	गुरु	शत्रु	3.75

4. द्रेष्काण बल

यह बल द्रेष्काण चक्र के आधार पर बनाया जाता है। किंतु यह द्रेष्काण चक्र पाराशरीय द्रेष्काण सारिणी से भिन्न है जिसके आधार पर द्रेष्काण वर्ग कुंडली बनायी जाती है। यद्यपि कुछ विद्वान पाराशरीय पद्धति से बनी द्रेष्काण वर्ग कुंडली को आधार मान कर भी द्रेष्काण बल निकालने के पक्ष में हैं।

ताजिक द्रेष्काण चक्र

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
0^0–10^0	मं	बु	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
10^0–20^0	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु	गु
20^0–30^0	शु	श	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	सू	चं	मं

बल के नियमानुसार ग्रह अपने ही द्रेष्काण में हो तो 10, मित्र ग्रह में हो तो 7½, सम ग्रह 5 तथा शत्रु द्रेष्काण में हो तो 2½ बिस्वा बल प्राप्त होता है।

उदाहरण कुंडली में उपरोक्त द्रेष्काण चक्रानुसार ग्रहों को इस प्रकार बल मिलता है :

ग्रह	द्रेष्काण ग्रह	मैत्री	बल
सू	बु	सम	5
चं	चं	स्व	10
मं	गु	मित्र	7½
बु	सू	सम	5
गु	श	शत्रु	2½
शु	सू	सम	5
श	चं	शत्रु	2½

5. नवांश बल

यह बल नवांश कुंडली के आधार पर ग्रहों को मिलता हैं यहां ताजिक व पाराशरीय नवांश वर्ग कुंडली में कोई भिन्नता नहीं है। सुविधा के लिए नवांश वर्ग कुंडली सारिणी नीचे दी जा रही है।

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंश—कला												
3^{0}—20′	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
6^{0}—40′	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
10^{0}—00′	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6
13^{0}—20′	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
16^{0}—40′	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
20^{0}—00′	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
23^{0}—20′	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
26^{0}—40′	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
30^{0}—00′	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

उदाहरण कुंडली में नवांश कुंडली के आधार पर नवांश बल साधन इस प्रकार होता है— स्वराशि में 5 अंक, मित्र के नवांश में 3¾ सम में 2½ तथा शत्रु नवांश में 1¼ अंक बल प्राप्त होता है।

ग्रह	राशि	स्वामी	मैत्री	बल
सू	8	मं	सम	2.50
चं	7	शु	मित्र	3.75
मं	4	चं	मित्र	3.75
बु	3	बु	स्व	5.00
गु	11	श	शत्रु	1.25
शु	1	मं	मित्र	3.75
श	10	श	स्व	5.00

नवांश वर्ग कुंडली

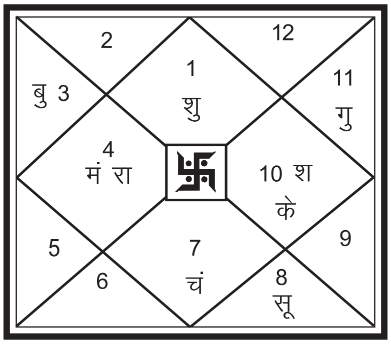

पंच वर्गीय बल सारिणी :

1. राशि बल,
2. उच्च बल,
3. हद्दा बल,
4. द्रेष्काण बल,
5. नवांश बल

ऊपर निकाले गए पांचों बलों का योग करके उसे 4 से भाग देने पर हमें सभी ग्रहों का विंशोपाक बल प्राप्त होगा। सुविधा के लिए सभी बल दशमलव अंकों में लिखे जा रहे हैं।

बल	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1. राशि बल	7.50	22.50	15.00	30.00	22.50	7.50	7.50
2. उच्च बल	9.47	3.64	1.54	11.40	8.78	10.59	10.01
3. हद्दा बल	7.50	3.75	7.50	7.50	15.00	11.25	3.75
4. द्रेष्काण बल	5.00	10.00	7.50	5.00	2.50	5.00	2.50
5. नवांश बल	2.50	3.75	3.75	5.00	1.25	3.75	5.00
योग	31.97	43.64	35.29	58.90	50.03	38.09	28.76
योग÷4	7.99	10.91	8.82	14.72	12.51	9.52	7.19

द्वादश वर्गीय बल :

द्वादश वर्गीय बल से ग्रहों की शुभता या अशुभता का विचार और अधिक विस्तार से किया जाता है किंतु यहां शुभता–अशुभता को संख्या में परिवर्तित नहीं किया जाता जैसा कि पंचवर्गीय बल में किया जाता है। बल निर्धारण का विचार ग्रहों की 12 वर्ग कुंडलियों में स्थिति के अनुसार किया जाता है। शुभ अथवा पाप वर्ग में स्थिति के अनुसार किया जाता है। शुभ अथवा पाप वर्ग में स्थिति निम्न नियमानुसार की जाती है :–

शुभ वर्ग : उच्च, स्व अथवा मित्र राशि में स्थित ग्रह

पाप वर्ग : नीच अथवा शत्रु राशि में स्थित ग्रह

सम वर्ग : सम ग्रह की राशि में स्थित ग्रह

इसके लिए वर्ष कुंडली के आधार पर मैत्री चक्र बना लेना चाहिए। ताजिक में 12 वर्ग पाराशरी के 16 वर्गों से कुछ पृथक भी है जैसे कि– पंचमाश, षष्ठांश, अष्टांश तथा एकादशांश।

इस पुस्तक के अंत (परिशिष्ठ) में सभी 12 वर्ग कुंडलियों को बनाने के लिए आधार तालिकायें दी हुई हैं। 12 वर्गों के नाम इस प्रकार हैं–

1. राशि (अर्थात् वर्ष कुंडली) 2. होरा 3. द्रेष्काण

4. चतुर्थांश 5. पंचमांश 6. षष्ठांश

7. सप्तमांश 8. अष्टमांश 9. नवमांश

10. दशमांश 11. एकादशांश 12. द्वादशांश

पंचवर्गीय बल से हमें ग्रहों के विंशोपाक बल के अनुसार उनके सामर्थ्य का अनुमान होता है जबकि द्वादशवर्गीय बल से केवल ग्रहों की शुभाशुभ करने की इच्छा का ज्ञान होता है जो ग्रहों के इष्टफल व कष्टफल से अधिक साम्य रखता है।

विषय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए उदाहरण कुंडली के आधार पर 12 वर्गों की रचना उनकी वर्ग तालिकाओं के अनुसार निम्न प्रकार से होती हैं :–

	राशि	**अंश**	**कला**
लग्न	4	2	50
सूर्य	3	14	45
चंद्र	6	00	20
मंगल	4	11	51
बुध	2	27	36
गुरु	6	16	00
शुक्र	2	21	43
शनि	3	20	04
राहु	11	2	26
केतु	5	2	26

1. वर्ष कुंडली या राशि वर्ग

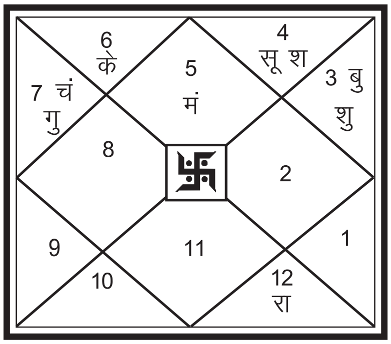

वर्ष कुंडली का मैत्री चक्र :

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
मित्र	–	मं बु शु	चं गु बु शु	चं गु मं	बु शु मं	चं गु मं	–
शत्रु	चं गु श	सू गु श	–	शु	सू चं श	बु	सू चं गु
सम	मं बु शु	–	सू श	सू श	–	सू श	मं बु शु

2. होरा वर्ग कुंडली

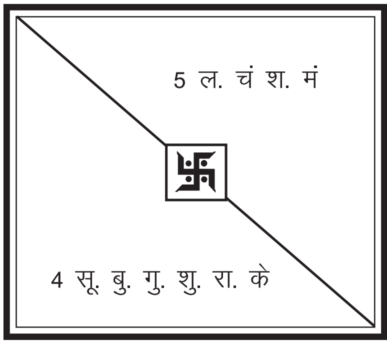

3. द्रेष्काण

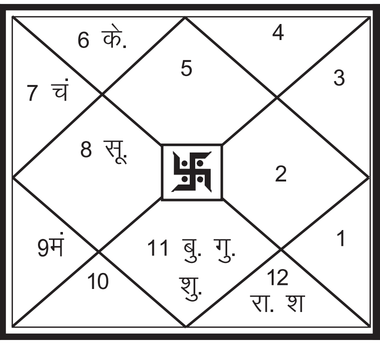

4. चतुर्थांश कुंडली

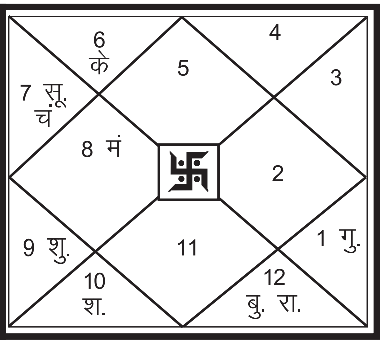

5. पंचमांश

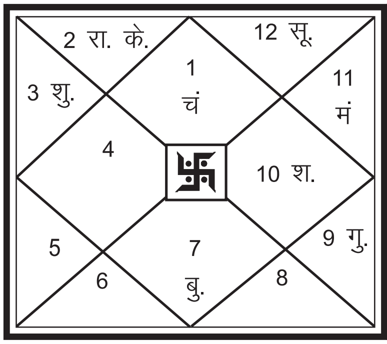

6. षष्ठांश कुंडली

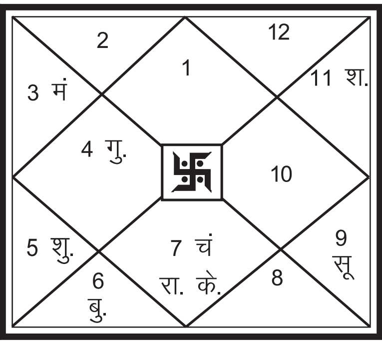

7. सप्तांश कुंडली

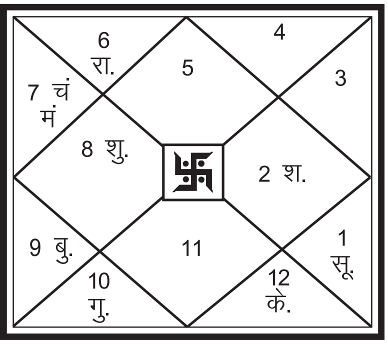

8. अष्टमांश कुंडली

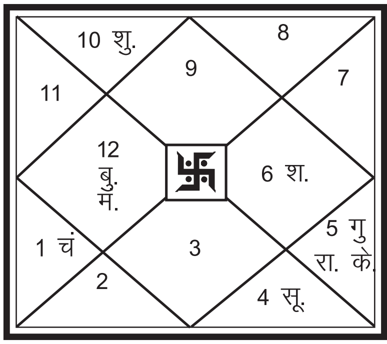

9. नवमांश कुंडली

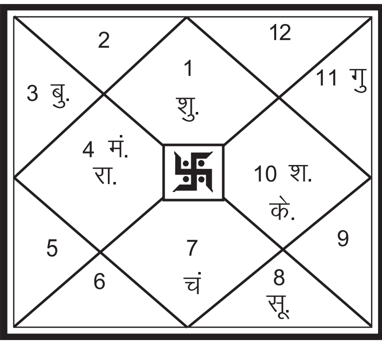

10. दशमांश कुंडली

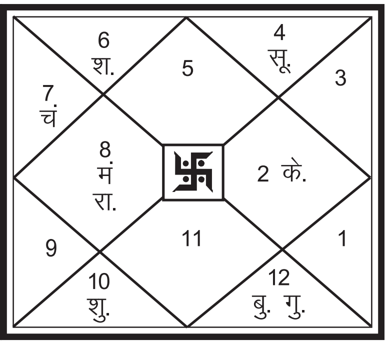

11. एकादशांश कुंडली

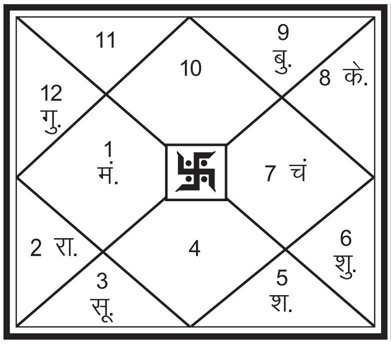

12. द्वादशांश कुंडली

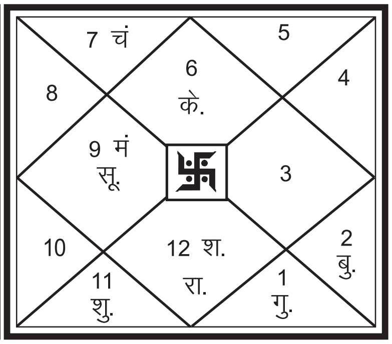

ग्रहों का द्वादश वर्गीय बल

वर्ग/ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1. राशि वर्ग	4 पा	7 शु	5 स	3 शु	7 शु	3 पा	4 पा
2. होरा	4 पा	5 पा	5 स	4 शु	4 शु	4 शु	5 पा
3. द्रेष्काण	8 स	7 शु	9 शु	11 स	11 पा	11स	11 शु
4. चतुर्थांश	7 पा	7 शु	8 शु	12 पा	1 शु	9 शु	10 शु
5. पंचमांश	12 पा	1 शु	11 स	7 पा	9 शु	3 पा	10 शु
6. षष्ठांश	9 पा	7 शु	3 शु	6शु	4 शु	5 स	11 शु
7. सप्तमांश	1 शु	7 शु	7 शु	9 शु	10 पा	8 शु	2 स
8. अष्टमांश	4 पा	1 शु	12 शु	12 पा	5 पा	10 स	6 स
9. नवमांश	8 स	7 शु	4 पा	3 शु	11 पा	1 शु	10 शु
10. दशमांश	4 पा	7 शु	8 शु	12 पा	12 शु	10 स	6 स
11. एकादशांश	3 स	7 शु	1 शु	9 शु	12 शु	6 पा	5 पा
12. द्वादशांश	9 पा	7 शु	9 शु	2 पा	1 शु	11 स	12 पा
शुभ वर्गा	1	11	8	6	8	4	5
पाप वर्गा	8	–	1	5	4	3	4
सम वर्गा	3	1	3	1	–	5	3

शु = शुभ, पा = पाप, स = सम, अंक संख्या = राशि संख्या

ध्यान रहे ताजिक में ग्रह बल निकालने की प्रामाणिक विधि तो पंचवर्गीय बल ही है। द्वादश वर्गीय बल को उसका पूरक ही माना जा सकता है। उसे पर्याय के रूप में लेना उचित नहीं होगा। यह तो ग्रह की केवल तुलनात्मक शुभता–अशुभता को मुख्य रूप से दर्शाता है। इसीलिए द्वादश वर्गीय बल को पाराशरी इष्ट फल/कष्ट फल के समकक्ष माना जा सकता है जबकि पाराशरी षड्बल को ताजिक के पंचवर्गीय बल के समकक्ष माना जा सकता है।

शुभता–अशुभता को अधिक स्पष्ट करने के लिए सम वर्ग की संख्या को आधा शुभ वर्ग व आधा पाप वर्ग में जोड़ कर व्याख्या करने पर स्थिति बिल्कुल साफ हो जाती है। यदि ग्रह के शुभ वर्गों की संख्या 6 से अधिक होती है तो वह वर्ष कुंडली का शुभ ग्रह कहलाएगा। इसके विपरीत जिस ग्रह के पाप वर्गों की संख्या 6 से अधिक होगी तो वह वर्ष कुंडली का पापी ग्रह कहलाएगा। ग्रह की मुद्दा दशा में जातक को तदानुसार फल प्राप्त होंगे।

अभ्यास प्रश्न

1. ताजिक में ग्रहों के बल निर्धारण की कितनी विधियां हैं? किसी एक विधि का विस्तार से वर्णन करें।

2. हर्षबल साधन विधि की क्या विशेषताएं हैं? यदि वर्ष प्रवेश रात्रि का हो तो दी गई कुंडली में सभी सात ग्रहों का हर्ष बल निकालें। आपके अनुसार कौन सा ग्रह वर्षेश बनने का अधिकारी है तथा क्यों?

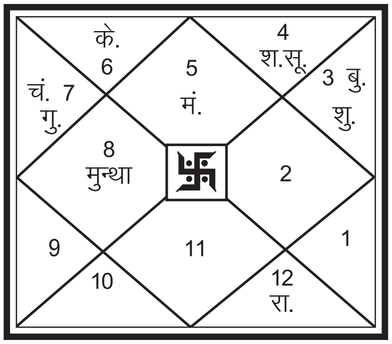

3. पंचवर्गीय बल साधन विधि को सर्वश्रेष्ठ विधि क्यों कहा जाता है? इस विधि में कौन से पांच प्रकार के बल निकाले जाते हैं ?

4. पंचवर्गीय बल साधन में मैत्री चक्र का क्या महत्व है? मैत्री चक्र में ग्रहों के संबंध किस आधार पर निर्धारित किए जाते हैं? उदाहरण कुंडली का मैत्री चक्र बनाएं।

5. अनुपातिक बल कोष्ठक के अनुसार ग्रहों को कौन सी चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है? इन श्रेणियों में ग्रहों को कितना राशि बल, हद्दा बल, द्रेष्काण बल तथा नवांश बल प्राप्त होता है?

6. पंच वर्गीय बल में उच्च बल साधन किस आधार पर किया जाता है ? वर्ष कुंडली में तीन ग्रहों का ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैः–

सूर्य	3^s	14^0	$45'$
बुध	2^s	27^0	$35'$
शनि	3^s	20^0	$05'$

उपरोक्त ग्रहों का उच्च बल निकालें।

7. वर्ष कुंडली का मैत्री चक्र निम्न प्रकार है :–

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्र	–	मं. बु. शु.	चं. गु. बु. शु.	चं. गु. मं.	बु. शु. मं.	चं. गु. मं.	–
शत्रु	चं. गु. श.	सू. गु. श.	–	शु.	सू. चं. श.	बु.	सू. चं. गु.
सम	मं. बु. शु.	–	सू. श.	सू. श.	–	सू. श.	मं. बु. शु.

दी गई नवांश कुंडली के आधार पर नवांश बल की गणना करें।

नवांश वर्ग कुंडली

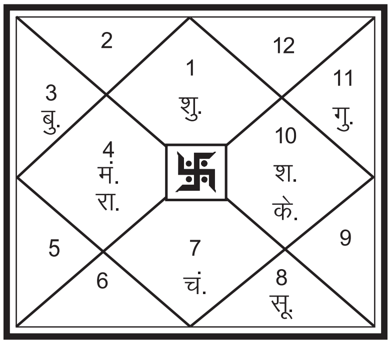

8. द्वादश वर्गीय बल तथा पंचवर्गीय बल की तुलना करें। आप कौन से बल को अधिक महत्व देंगे? कारण सहित वर्णन करें।

6. वर्ष पंचाधिकारी तथा वर्षेश निर्णय

जिस प्रकार 'मुन्था' ताजिक ज्योतिष का एक विशेष अवयव है उसी के समान महत्वपूर्ण एक और अवयव है जिसे 'वर्षेश' कहते हैं अर्थात् वर्ष कुंडली का सबसे बलवान ग्रह। ताजिक में वर्ष कुंडली के पांच अधिकारी माने जाते हैं। ये पंचाधिकारी निम्न ग्रह होते हैं –

1. **जन्म लग्नेश** : जन्म लग्न का अधिपति

2. **वर्ष लग्नेश** : वर्ष लग्न का अधिपति

3. **मुन्थेश** : मुन्था की राशि का स्वामी

4. **समयेश/दिन रात्रि पति** : (i) यदि वर्ष प्रवेश समय दिन का है तो सूर्य अधिष्ठित राशि का स्वामी
 (ii) यदि रात का है तो चंद्र अधिष्ठित राशि का स्वामी समयेश होता है। (समय का निर्णय सूर्योदय–सूर्यास्त पर आधारित होता है)

5. **त्रिराशिपति** : इसका चुनाव निम्नलिखित त्रिराशिपति चक्र के अनुसार किया जाता है।

त्रिराशिपति चक्र :

वर्ष लग्न की राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
दिनपति	सू	शु	श	शु	गु	चं	बु	मं	श	मं	गु	चं
रात्रिपति	गु	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	गु	चं

वर्ष लग्न की राशि के अंतर्गत वर्ष प्रवेश समय के अनुसार दिन या रात्रिपति में से कोई ग्रह त्रिराशिपति बनता है।

वर्षेश निर्णय के नियम

1. उपरोक्त पंचाधिकारी ग्रहों में से जो ग्रह सबसे अधिक बलवान सिद्ध हो तथा जिसकी वर्ष लग्न पर सबसे शुभ या मूल्यवान दृष्टि हो वह वर्षेश बनता है।

2. यदि कोई ग्रह बल के आधार पर सबसे बलवान निकलता हो किंतु वर्ष लग्न पर उसकी दृष्टि न हो तो वह वर्षेश बनने का अधिकारी नहीं होगा।

3. यह भी हो सकता है कि एक ही ग्रह पांच में से कई स्थानों का अधिकारी बने, ऐसे में उस ग्रह को अधिकार बली माना जाता है तथा प्रतियोगी ग्रहों के बल समान होने पर उसे वर्षेश चुना जाएगा।

4. यदि किसी भी अधिकारी ग्रह की दृष्टि वर्ष लग्न पर न पड़ती हो तो ऐसे में मुन्थेश को वर्षेश चुना जाएगा।
5. यदि दो प्रतियोगी ग्रहों का बल समान हो तथा लग्न पर दोनों की दृष्टि भी पड़ती हो तो उनकी दृष्टि की शुभता का प्रतिशत उनके वर्षेश निर्णय का आधार बनेगा।
6. यदि उपरोक्त नियमों के अनुसार चंद्रमा वर्षेश बनता हो तो उसे वर्षेश तभी माना जाएगा जब वह स्व या उच्च राशि का हो या पूर्णिमा का चंद्र हो या गुरु से युत/दृष्ट हो अन्यथा या तो चंद्र अधिष्ठित राशि का स्वामी या वह ग्रह जिससे चंद्रमा का इत्थशाल योग बनता हो, वर्षेश बनने का अधिकारी होगा।

ऐसा नियम इसलिए बनाया गया है क्योंकि चंद्रमा की प्रकृति चंचल है तथा वर्षेश से यह अपेक्षा की जाती है कि वह दृढ़ निश्चयी होगा। इसी कारण कुछ विद्वान तो चंद्रमा को वर्षेश बनाने के पक्ष में कतई नहीं है चाहे वह बली ही क्यों न हो।

यहां इत्थशाल योग के बारे में जिक्र आया है, यह एक ताजिक योग है जिसका विस्तार से विवरण ताजिक योगों से संबंधित अध्याय में किया जाएगा।

ग्रहों के बल निर्धारण का निश्चय कैसे किया जाता है यह पिछले अध्याय में चर्चित किया गया है।

उदाहरण कुंडली में पंचाधिकारी निम्न ग्रह बनते हैं :

1. जन्म लग्नेश : शनि (लग्न राशि कुंभ का अधिपति)
2. वर्ष लग्नेश : सूर्य (वर्ष लग्न राशि सिंह का अधिपति)
3. मुन्थेश : मंगल (मुन्था राशि वृश्चिक का अधिपति)
4. समयेश या दिन रात्रि पति : चंद्रमा (वर्ष प्रवेश दिन का है तथा सूर्य कर्क राशि में स्थित है)
5. त्रिराशिपति : गुरु (वर्ष लग्न सिंह राशि का दिनपति त्रिराशिपति चक्रानुसार)

हर्षबल के आधार पर वर्षेश निर्णय

पिछले अध्याय में सभी ग्रहों का हर्षबल निकाला गया है। सूर्य तथा चंद्र दोनों को 10 बिस्वा हर्षबल प्राप्त हुआ अतः इन दोनों में से किसी एक को वर्षेश चुना जा सकता है। यह निर्भर करता है कि कौन सा ग्रह वर्षेश के नियमों को पूरा करता है।

- सबसे पहले देखा जाएगा कि ग्रह वर्ष के पंचाधिकारियों में सम्मिलित हो। सूर्य तथा चंद्र दोनों ही पंचाधिकारियों में सम्मिलित हैं। सूर्य वर्ष लग्नेश है तथा चंद्र समयेश है।
- सूर्य व चंद्र दोनों का हर्षबल समान है।
- वर्षेश बनने की अगली शर्त है कि ग्रह की दृष्टि वर्ष लग्न पर हो। यहां चंद्र की लग्न पर 11वीं गुप्त मित्र दृष्टि पड़ती है जबकि सूर्य की दृष्टि लग्न पर है ही नहीं। अतः चंद्र वर्षेश बनने का अधिकारी हुआ।

- किंतु एक अन्य नियम के अनुसार चंद्र की प्रकृति चंचल होने के कारण उसे वर्षेश तभी बनया जा सकता है जब वह स्व अथवा उच्च राशि का हो, पूर्णिमा का चंद्र हो या पक्षबली हो अथवा गुरु से युत/दृष्ट हो। वर्ष कुंडली में यहां चंद्र तीसरे भाव में गुरु ये युत है, शुक्ल पक्ष का है तथा सूर्य से दूरी पर स्थित है (सूर्य से चौथे स्थान पर)।
- चंद्र पर बुध व शुक्र की पांचवीं प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि (75 % शुभता) तथा मंगल की तीसरी मित्र दृष्टि (65% शुभता) पड़ती है।

अतः हर्षबल के आधार पर देखा जाए तो चंद्र के पक्ष में ही वर्षेश बनने का अधिकार आता है यद्यपि कुछ विद्वान तो बली चंद्र को भी वर्षेश बनाने के पक्ष में नहीं है। ऐसे में अच्छा है कि हम पंचवर्गीय बल साधन को ही अधिक प्राथमिकता दें। वैसे भी हर्षबल साधन गणना की सुविधा की दृष्टि से अधिक स्वीकार्य माना जाता है।

पंचवर्गीय बल के आधार पर वर्षेश निर्णय

पिछले अध्याय में वर्ष के पांच अधिकारियों का बल इस प्रकार निकाला गया है :

स्वामित्व	ग्रह	विंशोपाक बल
1. मुन्थेश	मंगल	8.82
2. जन्म लग्नेश	शनि	7.19
3. वर्ष लग्नेश	सूर्य	7.99
4. त्रिराशिपति	गुरु	12.51
5. समयेश	चंद्र	10.51

- सर्वाधिक पंचवर्गीय बल गुरु को प्राप्त हुआ है।
- गुरु की वर्ष लग्न पर ग्यारहवीं मित्र दृष्टि भी पड़ती है।

यहां वर्षेश बनने के सभी नियमों का पालन हो रहा है। पंचवर्गीय बल साधन एक प्रामाणिक बल साधन विधि मानी जाती है विशेष रूप से हर्षबल के संदर्भ में। अतः अब कोई संशय नहीं कि चंद्र के स्थान पर गुरु को ही वर्षेश बनने का अधिकार प्राप्त होता है।

यहां द्वादश वर्गीय बल का वर्षेश चयन में कोई महत्व नहीं है क्योंकि इसमें केवल ग्रहों की शुभता/अशुभता का ही विस्तार से विचार किया जाता है न कि विंशोपाक बल का।

वैसे द्वादशवर्गीय बल के आधार पर सर्वाधिक शुभ ग्रह चंद्र है, दूसरे स्थान पर मंगल तथा तीसरे स्थान पर गुरु।

अभ्यास प्रश्न

1. वर्ष कुंडली के 5 अधिकारी कौन से ग्रह होते हैं?
2. वर्ष पंचाधिकारियों में से वर्षेश का निर्णय किस आधार पर किया जाता है?
3. चंद्र को वर्षेश बनाने में क्या कठिनाइयां हैं? किन विशेष परिस्थितियों में चंद्र को वर्षेश बनाना उचित है? चंद्र के स्थान पर किस ग्रह को वर्षेश बनाना उचित है?

7. मुद्दा दशाएं

मुद्दा का अर्थ है एक वर्ष। मुख्य 3 प्रकार की दशाएं ताजिक में सम्मिलित की गई हैं :–

1. विंशोत्तरी मुद्दा दशा

2. योगिनी मुद्दा दशा

3. पात्यायनी या हीनांश पात्यांश मुद्दा दशा

सभी दशाओं का चक्र एक वर्ष में पूर्ण हो जाता है।

1. विंशोत्तरी मुद्दा दशा :

यह दशा जन्म नक्षत्र पर आधारित है। इसका सूत्र है ।

$$\frac{\text{गताब्द + जन्म नक्षत्र} - 2}{9} = \text{शेष तुल्य दशा सूर्य से गिनने पर}$$

विंशोत्तरी 120 वर्ष के दशा काल को एक वर्ष के अनुपातिक काल में परिवर्तित करें तो एक वर्ष में 12 मास, एक मास में 30 दिन तथा एक सावन वर्ष में 360 दिन होते हैं। इस आधार पर –

120 वर्ष	–	360 दिन
1 वर्ष	–	3 दिन (ध्रुवांक)

विंशोत्तरी मुद्दा दशा में विभिन्न ग्रहों की दशाओं के दिन निम्न प्रकार होंगे :

1. सूर्य =	6X3	= 18 दिन
2. चंद्र =	10X3	= 30 दिन
3. मंगल=	7X3	= 21 दिन
4. राहु =	18X3	= 54 दिन
5. गुरु =	16X3	= 48 दिन
6. शनि =	19X3	= 57 दिन
7. बुध =	17X3	= 51 दिन
8. केतु =	7X3	= 21 दिन
9 शुक्र =	20X3	= 60 दिन
	योग	= **360 दिन**

उदाहरण कुंडली में –

वर्ष प्रवेश दिनांक : 1–8–2006

गताब्द : 33

जन्म नक्षत्र : मघा : नक्षत्र क्रमांक : 10

विंशोत्तरी मुद्दा दशा = गताब्द + जन्म नक्षत्र –2 = 33+10–2 = शेष 5

9 9

अर्थात् सूर्य से गिनने पर पांचवीं दशा गुरु की होती है। गिनती वर्ष प्रवेश दिनांक से प्रारंभ होगी।

1–8–2006

48

18–9–2006 तक गुरु की मुद्दा दशा

57

15–11–2006 ʻʻ शनि की मुद्दा दशा

51

6–1–2007 ʻʻ बुध की मुद्दा दशा

21

27–1–2007 ʻʻ केतु की मुद्दा दशा

60

28–3–2007 ʻʻ शुक्र की मुद्दा दशा

18

16–4–2007 ʻʻ सूर्य की मुद्दा दशा

30

16–5–2007 ʻʻ चंद्रमा की मुद्दा दशा

21

7–6–2007 ʻʻ मंगल की मुद्दा दशा

54

31–7–2007 ʻʻ राहु की मुद्दा दशा

कुछ विद्वान आरंभ होने वाली पहले ग्रह की दशा को जन्म नक्षत्र के भुक्त भोग्य अनुपात में विभाजित करके पहले ग्रह के भोग्य काल को ही प्रारंभ में गिनते हैं तथा अंत में फिर उसी ग्रह के भुक्त काल से मुद्दा दशा की समाप्ति करते हैं। मेरे विचार से इतनी सूक्ष्मता की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि व्यवहारिक रूप से इसका कोई विशेष लाभ देखने में नहीं आता।

उदाहरण कुंडली में **जन्म चंद्र स्पष्ट** = 4^s–09°–36'

इसकी कलायें बनाने पर तथा 800 कला (नक्षत्र मान) से = 7776÷800

विभाजित करने पर = $9 \frac{576}{800}$

भोग्य कलायें = 800–576 = 224

इसी अनुपात में गुरु की मुद्दा दशा को विभाजित करने पर

गुरु की भोग्य मुद्दा दशा = $\frac{48x224}{800}$ = 13.4 या 13 दिन

इस विधि में गुरु की दशा के 13 दिन प्रारंभ में गिने जाएंगे तथा शेष 35 दिन दशा के अंत में। दशा गणना निम्न प्रकार से की जाएगी।

1–8–2006	
13	
14–8–2006	तक गुरु की मुद्दा दशा
57	
11–10–2006	'' शनि '' ''
51	
2–12–2006	'' बुध '' ''
21	
23–12–2006	'' केतु '' ''
60	
23–2–2007	'' शुक्र '' ''
18	
11–3–2007	'' सूर्य '' ''
30	
11–4–2007	'' चंद्रमा '' ''
21	
2–5–2007	'' मंगल '' ''
54	
26–6–2007	'' राहु '' ''
35	
1–8–2007	'' गुरु '' ''

विंशोत्तरी मुद्दा अंतर्दशा :

अंतर्दशा निकालने के लिए दो विकल्प उपलब्ध हैं :

(i) विंशोत्तरी विधि :

क्योंकि मुद्दा दशा विंशोत्तरी दशा वर्षों पर निर्भर करती है अतः मूल रूप से अंतर्दशा ज्ञात करने के लिए भी वही नियम ग्राह्य होने चाहिए। उदाहरण के लिए यदि शनि की मुद्दा दशा के अंतर्गत सभी ग्रहों की अंतर्दशाएं निकालनी हों तो निम्न प्रकार निकलेंगी –

शनि–शनि	=	$\frac{57x57}{360}$	=	9.04 दिन
शनि–बुध	=	$\frac{57x51}{360}$	=	8.08 ʻʻ
शनि–केतु	=	$\frac{57x21}{360}$	=	3.33 ʻʻ
शनि–शुक्र	=	$\frac{57x60}{360}$	=	9.49 ʻʻ
शनि–सूर्य	=	$\frac{57x18}{360}$	=	2.85 ʻʻ
शनि–चंद्र	=	$\frac{57x30}{360}$	=	9.75 ʻʻ
शनि–मंगल	=	$\frac{57x21}{360}$	=	3.33 ʻʻ
शनि–राहु	=	$\frac{57x54}{360}$	=	8.54 ʻʻ
शनि–गुरु	=	$\frac{57x48}{360}$	=	7.59 ʻʻ

योग = 57.00 दिन

उपरोक्त आधार पर सभी ग्रहों की अंतर्दशा सारिणी बनाई जा सकती है।

(ii) शास्त्रीय विधि :

इस विधि के अंतर्गत सभी ग्रहों के ध्रुवांक अथवा मूल्य निश्चित किए गए हैं जो निम्नलिखित हैं :

सूर्य–4, चंद्र–8, मंगल–5, बुध–7, गुरु–10, शुक्र–6, शनि–9, राहु–5, केतु–6

अब जिस ग्रह की मुद्दा दशा में अन्य ग्रह की अंतर्दशा निकालनी हो उस ग्रह की दशा को अंतर्दशानाथ के ध्रुवांक से गुणा कर, गुणन फल को 60 से भाग दें (क्योंकि ग्रहों के ध्रुवांकों/मूल्यों का योग 60 होता है)।

अब हम इस विधि से शनि मुद्दा दशा के अंतर्गत सभी ग्रहों की अंतर्दशायें निम्न प्रकार से निकालेंगे–

शनि–शनि $= \frac{57 \times 9}{60} =$ 8.55 दिन

शनि–बुध $= \frac{57 \times 7}{60} =$ 6.65 ''

शनि–केतु $= \frac{57 \times 6}{60} =$ 5.70 ''

शनि–शुक्र $= \frac{57 \times 6}{60} =$ 5.70 ''

शनि–सूर्य $= \frac{57 \times 4}{60} =$ 3.80 ''

शनि–चंद्र $= \frac{57 \times 8}{60} =$ 7.60 ''

शनि–मंगल $= \frac{57 \times 5}{60} =$ 4.75 ''

शनि–राहु $= \frac{57 \times 5}{60} =$ 4.75 ''

शनि–गुरु $= \frac{57 \times 10}{60} =$ 9.50 ''

योग = 57.00 दिन

इस प्रकार दोनों विधियों से अंतर्दशाओं का योग मुद्दा दशा के बाराबर ही आता है किंतु अंतर्दशा काल में भिन्नता है। विंशोत्तरी विधि की अपेक्षा शास्त्रीय विधि को प्राथमिकता देना अधिक तर्क संगत लगता है क्योंकि यह ताजिक ज्योतिष का एक और विशेष अवयव है।

2. योगिनी मुद्दा दशा :

योगिनी दशा चक्र 36 वर्ष का होता है जबकि मुद्दा या 1 सावन वर्ष का समय 360 दिन होता है।

36 वर्ष --> 360 दिन

1 वर्ष --> 10 दिन (ध्रुवांक)

इस आधार पर योगिनी मुद्दा के दिन निम्न प्रकार होंगे :

क्रम	**योगिनी दशा**	**दशा स्वामी**	**दशाकाल (वर्ष)**	**मुद्दा दशा (दिन)**
1.	मंगला	चंद्र	1	10 दिन
2.	पिंगला	सूर्य	2	20 "
3.	धान्या	गुरु	3	30 "
4.	भ्रामरी	मंगल	4	40 "
5.	भद्रिका	बुध	5	50 "
6.	उल्का	शनि	6	60 "
7.	सिद्धा	शुक्र	7	70 "
8.	संकटा	केतु	8	80 "
		योग	36	360

योगिनी मुद्दा दशा सूत्र : $\frac{\text{गताब्द + जन्म नक्षत्र + 3}}{8}$ = शेष तुल्य

मंगला से गिनने पर

उदाहरण कुंडली में $= \frac{33+10+3}{8} =$ शेष 6

मंगला से गिनने पर 6 क्रमांक पर दशा उल्का आती है।

तदानुसार

1–8–2006		11–3–2007		
60		20		
1–10–2006	तक उल्का	31–3–2007	तक	पिंगला
70		30		
11–11–2006	'' सिद्धा	30–4–2007	''	धान्या
80		40		
1–3–2007	'' संकटा	10–6–2007	''	भ्रामरी
10		50		
11–3–2007	'' मंगला	31–7–2007	''	भद्रिका

योगिनी मुद्दा अन्तर्दशा :

सूत्र : $\frac{\text{योगिनी मुद्दा दशा के दिन x योगिनी अंन्तर्दशा के मुद्दा दशा दिन}}{360}$

इस सूत्र के आधार पर, उदाहरण के लिए, अब उल्का मुद्दा दशा की अंतर्दशाएं निम्न प्रकार निकलेंगीः–

उल्का–उल्का	=	$\frac{60x60}{360}$	= 10.00 दिन
उल्का–सिद्धा	=	$\frac{60x70}{360}$	= 11.67 ''
उल्का–संकटा	=	$\frac{60x80}{360}$	= 13.35 ''
उल्का–मंगला	=	$\frac{60x10}{360}$	= 1.66 ''
उल्का–पिंगला	=	$\frac{60x20}{360}$	= 3.33 ''
उल्का–धान्या	=	$\frac{60x30}{360}$	= 5.00 ''
उल्का–भ्रामरी	=	$\frac{60x40}{360}$	= 6.66 ''
उल्का–भद्रिका	=	$\frac{60x50}{360}$	= 8.33 ''
		योग	**= 60.00 दिन**

इसी प्रकार आवश्यकता अनुसार अन्य अंतर्दशाएं भी निकाली जा सकती हैं।

3. पात्यांश/पात्यायिनी मुद्दा दशा :

यह दशा ताजिक में शास्त्रीय श्रेणी की मानी जाती है। इससे पहले बतायी गई विंशोत्तरी या योगिनी मुद्दा दशाएं सुगमता तथा परंपरा की दृष्टि से ग्राह्य मानी जाती हैं किंतु प्रामाणिक स्थान पात्यायिनी को ही प्राप्त है।

इस दशा में लग्न व सात ग्रहों को सम्मिलित किया गया है। उनके भोगांशों अथवा रेखांशों को राशि छोड़कर लिखा जाए तो वे कृषांश कहलाते हैं।

इसके पश्चात् इन आठों कृषांशों को आरोही क्रम में लिख लिया जाता है। इसी क्रमानुसार वर्ष की मुद्दा दशाएं चलेंगी।

इसके बाद इनके पात्यांश निकाले जाते हैं। पात्यांश को तफावतांश, न्यूनांश, हीनांश भी कहा जाता है। अगले कृषांश में से पहले वाला घटाकर जो शेष बचे उसे पहले ग्रह का पात्यांश कहते हैं किंतु सबसे पहले ग्रह का कृषांश ही उसका पात्यांश होता है।

आठों पात्यांशों का योग सबसे अधिक कृषांश (यानी आरोही क्रम में अंतिम कृषांश) के बराबर आ जाता है। यदि ऐसा न हो तो समझ लें आप से गणना में त्रुटि हुई है, उसे सुधार लें। अधिक सुविधा के लिए पात्यांशों की कलाएं भी बनाई जा सकती हैं।

अंत में वर्ष के 365 या 360 दिन मानकर आठों अवयवों की उनके पात्यांशों के अनुपात में मुद्दा दशाएं निकाली जाती हैं।

उपरोक्त प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम उदाहरण कुंडली की पात्यायिनी मुद्दा दशाएं निकालेंगे।

1. वर्ष कुंडली के आठों अवयवों के भोगांश/रेखांश निम्नलिखित हैं :–

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	4	3	6	4	2	6	2	3
अंश	02	14	00	11	27	16	21	20
कला	50	45	20	51	36	00	43	04

2. उपरोक्त भोगांशों को अब राशि छोड़कर कृषांशों में परिवर्तित कर लेते हैं।

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अंश	2	14	00	11	27	16	21	20
कला	50	45	20	51	36	00	43	04

3. अब उपरोक्त कृषांशों को आरोही क्रम में लिखते हैं।

	चंद्र	लग्न	मंगल	सूर्य	गुरु	शनि	शुक्र	बुध
अंश	00	02	11	14	16	20	21	27
कला	20	50	51	45	00	04	43	36

4. अब अगले में से पहला घटाकर पात्यांश बनाते हैं। याद रहे पहला कृषांश अपना पात्यांश भी होता है।

	चंद्र	लग्न	मंगल	सूर्य	गुरु	शनि	शुक्र	बुध	योग
अंश	00	02	09	02	01	04	01	05	27
कला	20	30	01	54	15	04	39	53	36

नोट करें पात्यांशों का योग सबसे अधिक बुध के कृषांश के बराबर स्वतः ही आ गया है अतः गणना में कोई त्रुटि नहीं हुई।

5. उपरोक्त पात्यांशों को कलाओं में परिवर्तित करने पर

	चंद्र	लग्न	मंगल	सूर्य	गुरु	शनि	शुक्र	बुध	योग
कलाएं	20	150	541	174	75	244	99	353	1656

6. पात्यायिनी मुद्दा दशाएं अब उनके पात्यांशों के अनुपात में निकाल ली जाती हैं। वर्ष में 365 या 360 दिन लेते हैं।

चंद्रमा की दशा $= \frac{20 \times 365}{1656} = 0.22 \times 20 = 4$ दिन

लग्न ʻʻ $= \frac{150 \times 365}{1656} = 0.22 \times 150 = 33$ दिन

मंगल ʻʻ	=	0.22x541	=	119 दिन
सूर्य ʻʻ	=	0.22x174	=	38 ʻʻ
गुरु ʻʻ	=	0.22x75	=	17 ʻʻ
शनि ʻʻ	=	0.22x244	=	54 ʻʻ
शुक्र ʻʻ	=	0.22x99	=	22 ʻʻ
बुध ʻʻ	=	0.22x353	=	78 ʻʻ
	योग		=	**365 दिन**

7. वर्ष प्रवेश से उपरोक्त क्रम में दशा समय की गणना करके उनकी तिथियां निम्न प्रकार होंगी :—

1—8—2006	
4	
4—8—2006	तक चंद्र की मुद्दा दशा
33	
6—9—2006	” लग्न ” ”
119	
3—1—2007	” मंगल ” ”
38	
10—2—2007	” सूर्य ” ”
17	
27—2—2007	” गुरु ” ”
54	
22—4—2007	” शनि ” ”
22	
14—5—2007	” शुक्र ” ”
78	
31—7—2007	” बुध ” ”

पात्यायिनी मुद्दा अंतर्दशा साधन :

सूत्र : $\dfrac{\text{महादशा नाथ के दिन x अंतर्दशा नाथ की महादशा के दिन}}{365}$

यह सूत्र विंशोत्तरी मुद्दा अंतर्दशा के समान ही है किंतु जहां विंशोत्तरी में सभी ग्रहों की मुद्दा दशा के दिन निश्चित हैं, पात्यायिनी मुद्दा दशा के दिन अलग—अलग कुंडलियों के लिए भिन्न—भिन्न संख्या में प्राप्त होंगे। उदाहरण वर्ष कुंडली में यदि शनि पात्यांश दशा की मुद्दा अंतर्दशाएं निकालनी हों तो निम्न प्रकार से निकाली जाएंगी :—

शनि—शनि $= \dfrac{54 \times 54}{365} = 7.99$ दिन

शनि—शुक्र $= \dfrac{54 \times 22}{365} = 3.26$ ”

शनि—बुध $= \dfrac{54 \times 78}{365} = 11.53$ ”

शनि—चंद्र $= \dfrac{54 \times 4}{365} = 0.60$ ”

शनि–लग्न	=	$\frac{54x33}{365}$	=	4.88 ''
शनि–मंगल	=	$\frac{54x119}{365}$	=	17.60 ''
शनि–सूर्य	=	$\frac{54x38}{365}$	=	5.62 ''
शनि–गुरु	=	$\frac{54x17}{365}$	=	2.52 ''
		योग	=	54.00 ''

ध्यान दें : यहां अंतर्दशाओं के क्रम पात्यायिनी मुद्दा दशाओं के अनुसार ही रखे गये हैं। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी अंतर्दशाएं निकाली जा सकती हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. मुद्दा का क्या अर्थ है? कौन सी मुख्य तीन प्रकार की मुद्दा दशाएं ताजिक में सम्मिलित की गई है?
2. विंशोत्तरी मुद्दा दशा निकालने का क्या सूत्र है?
3. विंशोत्तरी मुद्दा दशा में विभिन्न ग्रहों का क्रमांक सहित दशा काल लिखें।
4. यदि वर्ष प्रवेश दिनांक वर्तमान वर्ष का 5 जून हो, गताब्ध 29 वर्ष, जन्म नक्षत्र : उत्तर फाल्गुनी हो तो सभी ग्रहों का विंशोत्तरी मुद्दा दशा चक्र बनाएं।
5. यदि जन्म कुंडली का चंद्र स्पष्ट $11^{रा}–15^{0}–54'$ हो, वर्ष प्रवेश वर्तमान वर्ष का 15 अक्तूबर तथा गताब्ध 35 वर्ष हो तो भोग्य दशा सहित विंशोत्तरी मुद्दा दशा पूरे वर्ष के लिए बनाएं।
6. विंशोत्तरी मुद्दा अंतर्दशा निकालने के दो विकल्प बताएं तथा किसी एक विधि से गुरु की सभी अंतर्दशाओं का समय क्रमानुसार लिखें।
7. विंशोत्तरी मुद्दा अंतर्दशा शास्त्रीय विधि के आधार पर शुक्र की मुद्दा दशा के अंतर्गत सभी ग्रहों की अंतर्दशाएं निकालें।

8. योगिनी मुद्दा दशा का सूत्र क्या है? संकटा मुद्दा दशा के अंतर्गत सभी अंतर्दशाएं निकालें।

9. वर्ष प्रवेश दिनांक वर्तमान वर्ष का 15 दिसंबर, प्रवेशाब्ध 40 वां वर्ष, जन्म नक्षत्र शतभिषा, तदनुसार वर्ष की योगिनी मुद्दा दशाएं निकालें।

10. दी गई वर्ष प्रवेश कुंडली के लिए पात्यायिनी मुद्दा दशा चक्र वर्तमान वर्ष के लिए बनाएं। वर्ष प्रवेश दिन 10 मार्च मानें। वर्ष के 365 दिन गिनें।

लग्न	राशि	अंश	कला
लग्न	10	5	17
सूर्य	3	14	44
चंद्र	4	9	35
मंगल	0	0	48
बुध	2	29	33
गुरु	9	13	34
शुक्र	4	14	22
शनि	2	6	21

वर्ष कुंडली

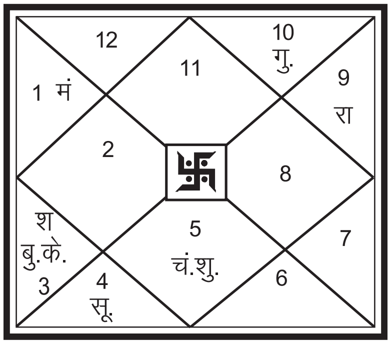

8. मुद्दा दशा फल

जो नियम जन्म कुंडली के ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा आदि के लिए बनाये गए हैं अर्थात् पाराशरी ज्योतिषी में जिन नियमों का साधारणतया पालन किया जाता है, वे ही नियम मुद्दा दशाओं के लिए भी लागू होते हैं। जिस प्रकार वर्ष कुंडली जन्म कुंडली का केवल विस्तार मात्र है न कि एक स्वतंत्र कुंडली, उसी प्रकार मुद्दा दशाओं की अवधि जन्म कुंडली की प्रत्यंतर दशाओं के समकक्ष आती हैं।

मुद्दा दशा के स्वामी के शुभाशुभ तथा बलाबल का विचार वर्ष कुंडली के अतिरिक्त जन्म कुंडली से करना भी उतना ही आवश्यक है। इसी प्रकार महादशा/अंतर्दशा के फल जन्म कुंडली के आधार पर कैसे हैं, उसे ध्यान में रखकर मुद्दा दशा का विचार करना चाहिए। जन्म कुंडली तथा वर्ष कुंडलियों का तुलनात्मक अध्ययन ही हमें संभावित फलों की ओर सही दिशा में लेकर जायेगा। इसके साथ ही वर्ष कुंडली के विशेष अवयव यानी वर्षेश, मुन्था, योग व सहम का विचार भी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इन्हीं के बलाबल पर वर्ष में घटने वाली मुख्य घटनाएं निर्भर करेंगी।

आगे विभिन्न ग्रहों की दशाओं का फल तथा उनकी विभिन्न राशियों में स्थिति का प्रभाव दिया जा रहा है। किंतु ध्यान रहे ये फल केवल एक आयाम पर आधारित हैं जबकि पूर्ण आकलन के लिए हमें सभी आयामों का एक साथ विचार करके फल कथन करना होता है। पुनारावृत्ति के लिए दशा फल का विचार करते समय ये विभिन्न विचारणीय आयाम निम्न प्रकार होंगे :–

(i) वर्ष कुंडली में कौन से भावों का स्वामी होकर ग्रह कौन से भाव में स्थित है।

(ii) वर्ष कुंडली में ग्रह किस राशि में स्थित है तथा उस पर किन ग्रहों की कैसी ताजिक दृष्टि पड़ रही है।

(iii) मुद्दा दशा के स्वामी ग्रह पर वर्षेश, मुन्थेश व जन्म लग्नेश का कैसा प्रभाव पड़ रहा है तथा वह किन ग्रहों के साथ युत है।

(iv) जन्म कुंडली में मुद्दा दशा के स्वामी की शुभाशुभता, बलाबल, भाव व राशिगत स्थिति कैसी हैं।

(v) जन्म कुंडली के कौन से ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतर दशा चल रही है तथा इस आधार पर किस प्रकार के फल अपेक्षित हैं। इन दशा स्वामियों की स्थिति वर्ष कुंडली में कैसी हैं।

(vi) किसी विशेष प्रश्न पर विचार करने के लिए कार्येश व लग्नेश के बीच ताजिक योगों का बलाबल तथा संबंधित सहम का फल विचार कैसा है।

उपरोक्त बहुआयामी विश्लेषण के आधार पर ही हमें फल–निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए जबकि किसी भी पुस्तक में साधारणतया एक समय में किसी एक आयाम विशेष का विचार ही संभव हो पाता है। उसे निर्देश के रूप में ग्रहण करें। विभिन्न ग्रहों की प्रकृति व स्वभाव तथा राशिगत स्थिति के अनुसार फल निम्नलिखित है–

1. सूर्य दशा : यदि सूर्य शुभ व बलवान हो तो उसकी दशा में राज्य कृपा, धन, धर्म, यश, पदोन्नति, कार्यों में सफलता, यात्राओं आदि के शुभ फल प्राप्त होते हैं।

यदि वर्ष व जन्म दोनों ही कुंडलियों में सूर्य अशुभ व निर्बल हो तो राज्यभय अथवा दण्ड, अपयश, स्वास्थ्य हानि, धर्म हानि, ऋण वृद्धि, स्वजनों से वियोग, निरर्थक यात्राएं तथा अपव्यय आदि अशुभ फल देता है।

राशिगत फल	:
मेष व सिंह	: यदि उपचय भावस्थ भी हो तो अति शुभ
वृषभ व तुला	: गले के रोग तथा स्त्री, पुत्र के स्वास्थ्य की चिंता
मिथुन व कन्या	: कन्या संतान व श्वास तंत्र के रोग
कर्क	: कफ रोग
वृश्चिक	: साहस व प्रताप में वृद्धि, अग्नि, विष तथा चोरी भय
धनु व मीन	: धन, यश की वृद्धि
मकर व कुंभ	: अशुभ फल

2. चंद्र दशा : यदि बलवान व शुभ हो तो अपनी दशा में मान–सम्मान, सफलता, प्रसन्नता, जलज वस्तुओं के व्यवसाय में लाभ, स्वास्थ्य, धन–आभूषण, चुनाव में सफलता, मानसिक संतुष्टि आदि शुभ फल प्रदान करता है।

यदि निर्बल व पापी हो तो मानसिक अशांति, मानसिक व्याधियां, धन व कीर्ति नाश करता है।

राशिगत फल :

मेष	: स्त्री सुख, विदेश यात्रा, रोग व क्लेश
वृष व कर्क	: धन, वाहन, दांपत्य सुख, प्रेम, कलाप्रियता, यात्रा
मिथुन व कन्या	: विदेश गमन, धन–संपत्ति का लाभ
सिंह व वृश्चिक	: राज्य विवाद व भय, स्वजनों से क्षति, मानसिक अशांति, धन–हानि
तुला	: धन–लाभ, सौन्दर्य व कला प्रेम
धनु व मीन	: संतान सुख, धन व धर्म का लाभ
मकर व कुंभ	: तीर्थ यात्रा, दुर्व्यसन, नेत्ररोग, ऋण, पीड़ा

3. मंगल दशा : शुभ व बलवान मंगल साहस व यश की वृद्धि, भाईयों से सुख, नए कार्यों का शुभारंभ, झगड़ों का निबटारा, विरोधियों पर विजय व धन प्राप्ति कराता है। अशुभ व निर्बल हो तो शत्रुओं व भाइयों से हानि, रक्त–विकार, चोट, दुर्घटना, चोरी, ऋण व व्यसन–वृद्धि करता है।

राशिगत फल :

मेष, मकर, सिंह	: यश, साहस, धन धान्य में वृद्धि, राज्य कृपा, विजय, भ्रातृ सुख
वृष	: रोग, दुस्साहस परंतु परोपकार व लाभ प्राप्ति
मिथुन, कुंभ व मीन	: विदेश यात्रा, कुटिल वृत्ति, अतिव्यय, त्वचा रोग, ऋण, पित्त व वायु रोग, दरिद्रता चिंता, कदाचार
कर्क व तुला	: क्लेश, अपकीर्ति, भाइयों से हानि, स्त्री पुत्र से पीड़ा, चिंता, विवादों में हार
कन्या व धनु	: भूमि, संतान व धनलाभ, व्यवसाय–वृद्धि

4. बुध दशा : शुभ व बलवान बुध की मुद्दा दशा में विद्या, ज्ञान, शिल्प व कौशल की वृद्धि, विद्वानों से संबंध, कृषि कार्यों व व्यापार में वृद्धि व लाभ, अनायास लाभ प्राप्ति, पदोन्नति तथा परिवार से सहयोग प्राप्त होता है।

निर्बल व अशुभ बुध विद्याध्ययन में अवरोध, पारिवारिक क्लेश, व्यापार में हानि तथा त्वचा, स्नायु, वात् व कफ संबंधी रोग देता है।

राशिगत फल :

मेष व वृश्चिक	: छल–कपट, धन–हानि, कामी प्रवृत्ति, अनाचारी व अपव्ययी
वृष व तुला	: व्यापार वृद्धि व लाभ, धन व यश वृद्धि, परिवार चिंता, विष भय, स्वास्थ्य लाभ
मिथुन व कन्या	: विद्या व व्यापारिक कार्यों में सफलता, मंगल उत्सव नव साहित्य सृजन, वाणी लाभ, प्रतिभा–विकास, धन, यश व स्वास्थ्य का लाभ
कर्क व धनु	: काव्य व कला प्रेम, विदेश यात्रा, धन लाभ राज्य सुख, उच्च पद प्राप्ति
सिंह व मीन	: धन, ज्ञान व यश हानि, स्वजनों से विरोध, विष, अग्नि भय, मानसिक तनाव
मकर व कुंभ	: नीच संगति, दरिद्रता, रोग, अस्थिरता, बंधु–बांधवों से कष्ट

5. गुरु दशा : बलवान व शुभ होकर गुरु की मुद्दा दशा में ज्ञान, धर्म, धन–वस्त्राभूषण, उच्च पदस्थ अधिकारियों से संबंध, राज्याधिकार, तीर्थ यात्रा, दान पुण्य, सुख समृद्धि, पारिवारिक व संतान सुख आदि शुभ फल मिलते हैं।

गुरु निर्बल व अशुभ हो तो राज्य कोप, तिरस्कार, नैतिक पतन, पारिवारिक अशांति, स्वास्थ्य हानि, धन–हानि आदि अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

राशिगत फल :

मेष व वृश्चिक	:	राज्य कृपा, अधिकार वृद्धि, यश–सम्मान, संतान सुख, परिवार–सुख, धन व स्वास्थ्य लाभ।
वृष व तुला	:	विवेक व ज्ञान का अभाव, विदेश गमन, अपमान, पारिवारिक क्लेश, शत्रु–वृद्धि, रोग व विकार।
मिथुन व मकर	:	धन व संपत्ति का क्षय, विरोध व शत्रु वृद्धि, पारिवारिक क्लेश, संतान–वियोग, गुप्तांगों के रोग, अपमान।
कर्क, सिंह, धनु व मीन	:	राज्य सम्मान, सफलता, पदोन्नति, सुख–समृद्धि, पारिवारिक सुख–शांति, संतान, विद्या लाभ, धार्मिक साधना, सिद्धि, दान पुण्य, शत्रु–पराभव।
कन्या व कुंभ	:	कन्या संतान, स्त्री पक्ष से लाभ, साधना, विद्या, धर्म तथा सामान्य अर्थ लाभ

6. शुक्र दशा : बलवान व शुभ शुक्र की मुद्दा दशा में आमोद–प्रमोद, काम सुख, मनोरंजन, धन, वस्त्राभूषण, भोग–विलास उन्नति आदि शुभ फल प्राप्त होते हैं।

निर्बल व अशुभ शुक्र स्त्री पक्ष से पीड़ा, मान–प्रतिष्ठा हानि, धन व स्वास्थ्य हानि, यौन रोग, संबंधियों से दुःख व क्लेश, विदेश गमन आदि अशुभ फल देता है।

राशि गत फल :

वृष, तुला, मीन	:	उपरोक्त बलवान शुक्र के समान शुभ फल।
मेष, सिंह, वृश्चिक	:	अशुभ फल, पित्त व यौन रोग।
कर्क, कन्या, मिथुन	:	अशुभ फल, शारीरिक व मानसिक कष्ट।
धनु, मकर, कुंभ	:	अशुभ फल, वात, कफ रोग।

7. शनि दशा : बलवान व शुभ शनि अपनी मुद्दा दशा में कल–कारखाने, यातायात, भवन निर्माण सामग्री, खनिज व तेल पदार्थ आदि व्यवसाय, राजनीतिक सफलता, विदेश व विजातियों से संबंध, यश–कीर्ति आदि शुभ फल देता है।

इसके विपरीत निर्बल व अशुभ शनि की दशा मानसिक पीड़ा, चिंता, पारिवारिक क्लेश, शारीरिक कष्ट, राज्य भय, विरक्ति व वैराग्य, वात–विकार व गुदा रोग आदि अशुभ फल देता है।

राशिगत फल :

तुला, मकर, कुंभ	:	शुभ, पश्चिमी देशों की सफल यात्रा, भूमि भवन, धन–संपत्ति, चुनावी सफलता, नेतृत्व, अधिकार वृद्धि

मेष, वृश्चिक, सिंह	:	निरर्थक व्यय, हर कार्य में असफलता, स्वजनों का विरोध, उद्विग्नता, उदासी, नीच संगति, आर्थिक कृपणता
कर्क, कन्या, धनु, मीन	:	शुभ फलदायक, भूमि लाभ, धन–संपत्ति, धर्म–पुण्य
वृष, मिथुन	:	दुर्व्यसन, चिंता, पीड़ा, धन हानि या न्यून लाभ
8. राहु दशा	:	**राशिगत फल :**
मेष, वृश्चिक, मकर, मीन	:	साधारण फल, शत्रु भय, चोट, बाधा, रोग, आर्थिक कष्ट, नीच कार्यरत, बंधु विरोध
वृष, मिथुन, कन्या, कुंभ	:	राज्य कृपा, पदोन्नति, सफलता, विजय, अधिकार वृद्धि, लोकप्रियता, व्यसनों से हानि, कला, प्रेम।
सिंह, मकर	:	संकीर्ण मनोवृत्ति, निर्धनता, चिंता, चोट, वात–रोग
कर्क, धनु	:	मननशील, यश–सम्मान, उच्चपद, चुनावी सफलता
9. केतु दशा	:	**राशिगत फल :**
मेष, कर्क, कन्या, मीन	:	स्वास्थ्य, धन, यश लाभ, पारिवारिक सुख, नवीन कार्यों में सफलता, सत्कर्म, समृद्धि, प्रसिद्धि, विद्या।
वृष, तुला, कुंभ, सिंह	:	अल्प सुख व लाभ, चिंता, पीड़ा, धन–हानि, बंधु–बान्धुवों से वियोग, संकट, बाधा
मिथुन, वृश्चिक	:	कीर्ति, धन लाभ किंतु बंधन, रोग, पीड़ा, रोग
धनु, मकर	:	सिर व नेत्र पीड़ा, नए कार्यों में असफलता तथा पुरानों से लाभ में न्यूनता, झगड़े भय

उदाहरण कुंडली में विंशोत्तरी मुद्दा दशाओं के फल :

1.8.2006 से 18.9.2006 : गुरु : भाव 3 में स्थित तथा वर्षेश :

अपने कार्यों के द्वारा जातक अपने सहयोगियों व उच्चाधिकारियों की प्रशंसा का पात्र बनेगा, सामाजिक व कार्य क्षेत्र की वृद्धि होगी। परिस्थितियों से समझौता करके सफलता अर्जित करेगा। रोग ग्रस्त होने की भी संभावना होगी। छोटी यात्राएं होंगी। वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। गुरुजनों से इच्छित सहयोग मिलेगा। आय तथा व्यय बढ़े–चढ़े रहेंगे।

19.9.2006 से 15.11.2006 : शनि : भाव 12 में स्थित :

जातक की शारीरिक व मानसिक स्थिति नकारात्मक प्रभाव में रहेगी। प्रयास व उत्साह की कमी रहेगी। निरर्थक कार्यों पर समय, ऊर्जा व धन की हानि होगी। परिवार के सदस्यों से भी मन मुटाव की स्थिति

बनती हैं। कार्यों में इच्छित सफलता न मिलने के कारण यह समय तनाव व परेशानी का होगा।

16.11.2006 से 6.1.2007 : बुध : भाव 11 में स्थित :

जातक को मित्रों व सहकर्मियों से पूरा सहयोग व लाभ मिलेगा। लंबित महत्वाकाक्षाएं व मनोरथों की पूर्ति का समय होगा। व्यवसाय, नौकरी, पदोन्नति, आय–वृद्धि, आरोग्य अथवा स्वास्थ्य लाभ के लिए उपयुक्त समय है। कोई लंबी सुखदपूर्ण यात्रा होने की संभावना है। भाई या मित्र की ओर से शुभ समाचार मिल सकता है, वैसे भी नए मित्र बनाने के लिए समय अनुकूल है। दांपत्य संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे, संतान सुख प्राप्त होगा।

7.1.2007 से 27.1.2007 : केतु : भाव 2 में स्थित :

अपनी भाषा व अभिव्यक्ति पर नियंत्रण रखना अनिवार्य होगा अन्यथा स्वजनों से संबंध बिगड़ेंगे। शारीरिक कष्ट बना रहेगा। धन–संपत्ति की हानि होने की संभावना है। मानसिक तनाव व अशांति बनी रहेगी। किसी नए कार्य में हाथ न डालें वरना असफलता ही हाथ लगेगी। समय प्रतिकूल रहेगा।

28.1.2007 से 28.3.2007 : शुक्र : भाव 11 में स्थित :

बुध की मुद्दा दशा की भांति यह समय बहुत अनुकूल रहेगा। मित्रों, सहयोगियों, बंधु–बांधवों के पूर्ण सहकार से हर क्षेत्र में सफलता अर्जित होगी। इच्छाओं व मनवांछित अभिलाषाओं की प्राप्ति का समय है। परिवार व संतान सुख की वृद्धि होगी। व्यवसाय, नौकरी में वृद्धि, उन्नति, उच्चपद प्राप्ति, मान–सम्मान व आय वृद्धि अपेक्षित स्तर की होगी। आमोद–प्रमोद, सुख साधन, वस्त्राभूषण पर व्यय भी होगा।

29.3.2007 से 16.4.2007 : सूर्य : भाव 12 में स्थित : वर्ष लग्नेश

लग्नेश की द्वादश भाव में स्थिति तथा पापी ग्रह शनि के साथ युति के कारण इस मुद्दा दशा में शुभ फल प्राप्त होने के संकेत नहीं हैं। पेट, सिर, उदर, नेत्र के रोग संभव हैं। स्वास्थ्य ढीला ही रहेगा। मान–सम्मान व अधिकारों को क्षति पहुंच सकती है। व्यर्थ के व्यय, यात्राएं, सरकारी जुर्माना व हानि होने की संभावना है। स्वजनों से विरोध हो सकता है। अतः यह समय सोच–समझ कर निकालें।

17.4.2007 से 16.5.2007 : चंद्रमा : भाव 3 में स्थित :

चंद्रमा द्वादशेश होकर तृतीयस्थ है अतः पुरुषार्थ व साहस की कमी होगी। जातक समझौता, सुलह करके कार्यों में सफलता प्राप्त करेगा। भाई, बहनों से तथा माता पिता से भी मधुर संबंध बनेंगे तथा सहयोग रहेगा। स्थान, व्यवसाय, नौकरी में परिवर्तन की संभावना बनेगी। छोटी, बड़ी यात्राओं तथा पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

17.5.2007 से 7.6.2007 : मंगल : लग्न में स्थित : मुन्थेश

मंगल मुन्थेश होकर तथा शुभ प्रभाव में होकर लग्न में स्थित है, नैसर्गिक पापी ग्रह किंतु वर्ष कुंडली में शुभ भावों का अधिपति भी है अतः मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। जातक ऊर्जावान, उत्साही, पुरुषार्थी व

आत्म विश्वास से भरा रहेगा किंतु इच्छित परिणाम न मिलने पर नियंत्रण खोने की संभावना होगी। शारीरिक अस्वस्थता, छोटी–मोटी चोट, दुर्घटना, पारिवारिक क्लेश के कारण बाधाएं भी बनेंगी, इस कारण कार्यों में सफलता आत्म नियंत्रण से ही मिल सकेगी।

8.6.2007 से 31.7.2007 : राहु : भाव 8 में स्थित :

राहु की मुद्दा दशा का समय भी जातक के सयंम का परीक्षण समय होगा। शारीरिक अस्वस्थता, व्यवसाय/नौकरी में प्रयासों की असफलता, मन में अनजाना भय, स्वजनों का विरोध या असहयोग, निर्णय लेने में असमंजस की स्थिति आदि अनेक नकारात्मक प्रभाव जातक को तनाव ग्रस्त रखेंगे तथा आध्यात्मिक मन्थन के लिए प्रेरित करेंगे।

अभ्यास प्रश्न

1. मुद्दा दशा फल क्या केवल वर्ष कुंडली पर आधारित है? आपके अनुसार कौन से नियमों का अनुसरण करना आवश्यक है?

2. मुद्दा दशा फल के ताजिक ज्योतिष के नियमों तथा पाराशरी दशा फल नियमों में कोई मूलभुत अंतर है? जन्म कुंडली का प्रभाव क्या मुद्दा दशा के फलों को प्रभावित करता है? फल विश्लेषण के लिए आप किन तथ्यों को महत्व देंगे?

3. सूर्य, बुध तथा शनि के राशिनुसार मुद्दा दशा फल लिखें।

4. चंद्र, मंगल तथा गुरु के विंशोत्तरी मुद्दा दशाओं के फलों का विवरण राशिनुसार लिखें।

5. शनि, राहु, केतु ग्रहों के राशिगत मुद्दा दशा के शुभाशुभ फलों को विस्तार से लिखें।

9. वर्षेश फल विचार

वर्ष फलकथन में वर्षेश, मुन्थेश, तथा वर्ष लग्नेश ये तीन प्रमुख आधार हैं तथा इनमें भी वर्षेश का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। वर्षेश की स्थिति वर्ष कुंडली में कैसी है तथा वह कितना बली है इस पर पूरे वर्ष का फल कथन निर्भर करता है।

बल के आधार पर वर्षेश के 3 प्रकार होते हैं :–

1. पूर्ण बली : जिसका पंचवर्गीय विंशोपाक बल 12 बिस्वा या 12 अंक से अधिक हो।
2. मध्यम बली : जिसका पंचवर्गीय बल 6 से 12 के मध्य हो।
3. अल्प बली : जिसका बल 6 से भी कम हो वह हीनबली कहलाता है।

कुछ विद्वान एक श्रेणी और बढ़ाकर चार श्रेणी बना देते हैं।

1. पूर्ण बली : 15–20 विंशोपाक बल
2. मध्यम बली : 10–15 ''
3. अल्प बली : 5–10 ''
4. शून्य बली : 0–5 ''

अब चूंकि वर्ष कुंडली जन्म कुंडली का ही एक वर्ष का विस्तार मात्र है इसलिए वर्षेश का जन्म कुंडली में षड्बल भी देखना चाहिए। वर्षेश पर अन्य ग्रहों की युति व दृष्टि का भी प्रभाव उसके फलों पर पड़ता है। अतः सभी तात्कालिक प्रभावों का अध्ययन व मूल्यांकन परिस्थिति व स्वविवेक के आधार पर करके फल कथन में सूक्ष्मता लाने का प्रयास करना चाहिए। यहां भिन्न–भिन्न ग्रहों का वर्षेश के रूप में फल तथा उन पर अन्य ग्रहों के प्रभाव का विवेचन आगे किया गया है।

वर्षेश सूर्य का फल :

पूर्ण बली : राज्य कृपा, यश व सम्मान में वृद्धि, धन–संपत्ति, भूमि का लाभ, नाना प्रकार के सुख, अच्छा स्वास्थ्य, शत्रुओं का नाश होता है।

मध्यम बली : उपरोक्त फलों में कमी, राज्य भय, शत्रु भय, बाधाओं व विरोध का सामना करना पड़ता है।

अल्प/शून्य बली : राज्य दंड व शत्रुओं का भय, स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां, चिंता, वाद–विवाद, धन हानि, कष्ट पूर्ण स्थान परिवर्तन, पुत्र व पिता से अनबन अथवा पिता को शारीरिक कष्ट आदि फल होते हैं।

वर्षेश सूर्य लग्न/लग्नेश से युत/दृष्ट/योग में हो तो अशुभ फल जैसे राज्य भय, पित्त विकार, पूर्व दिशा से हानि आदि होते हैं विशेषकर जब वह पाप प्रभाव में हो।

चंद्रमा प्रभाव : जब सूर्य चंद्र से दृष्ट हो तो उस वर्ष विदेश यात्रा, धन लाभ, श्वेत वस्तुओं से विशेष

लाभ, शत्रु नाश, भोजन वस्त्रादि का लाभ। यदि पाप प्रभाव हो तो शारीरिक कष्ट, मित्र वियोग होता है।

मंगल प्रभाव : साहस व अधिकार वृद्धि, यश–कीर्ति, राज्य सम्मान, धन–संपत्ति का लाभ । यदि पाप प्रभाव हो तो चोरी, अग्नि भय, दक्षिण दिशा से भय, चुगली, व्यर्थ की चिंताएं होती हैं।

बुध प्रभाव : मित्रों से विरोध व हानि, शत्रु वर्ग से कष्ट, स्त्री, पुत्रादि को रोग, स्वयं को त्वचा व स्नायु रोगों का भय व शारीरिक कृशता।

गुरु प्रभाव : धर्म, सत्संग व धन का लाभ, व्यसनों से छुटकारा, उत्साह व कार्यों में सफलता, पुत्र/संतान प्राप्ति व उनसे सुख। किंतु पाप प्रभाव हो तो आत्म सम्मान को चोट, अहंकार वृद्धि, संतान से कष्ट आदि अशुभ फल मिलते हैं।

शुक्र प्रभाव : शारीरिक रोग जैसे कफ विकार, सिर व पेट विकार, जलीय विकार, यौन–रोग आदि। इसके अतिरिक्त स्त्रियों से कष्ट या वियोग का भय होता है।

शनि प्रभाव : शत्रु वर्ग से हानि, मान–प्रतिष्ठा हानि, स्वजनों से विरोध या वियोग, असफलता व उदासी।

राहु/केतु प्रभाव : पूरे वर्ष असामयिक मानसिक व शारीरिक कष्ट, सर्प व पशुओं से भय, पश्चिम दिशा व कृष्ण वर्ण के व्यक्तियों से हानि का भय।

वर्षेश चंद्रमा का फल :

पूर्ण बली : राज्य कृपा, धन, विलास–सामग्री, स्त्री–सुख, श्वेत वस्तुओं से विशेष लाभ, उच्च पद या पदोन्नति।

मध्यम बली : राज्य भय, धन हानि, स्त्री–सुख में बाधा, दुर्बलता, विरक्ति, दुःख व वैराग्य देता है।

अल्प/शून्य बली : शारीरिक कफ व वायु विकार, टी. बी, प्लुरिसी, सीजोफ्रेनिया, उन्माद, मानसिक संताप, राज्य दण्ड व शत्रु–भय, मृत्यु भय आदि अशुभ फलों की प्राप्ति होती है विशेषकर यदि चंद्रमा पर पाप प्रभाव हो या उसकी अशुभ भाव में स्थिति हो।

चंद्रमा संवेदनशील ग्रह तथा लग्नवत होने के कारण अधिक प्रभावित होता है। इसलिए चंद्रमा को वर्षेश तभी बनाया जाता है जब वह पूर्ण बली हो अन्यथा चंद्र अधिष्ठित राशि के स्वामी अथवा चंद्रमा से इत्थशाल करने वाले ग्रह को वर्षेश बनाने का प्रावधान है। वैसे तो विद्वानों के अनुसार चंद्रमा के फल सूर्य के समान ही होते हैं किंतु जहां सूर्य एक कठोर ग्रह है वहां चंद्रमा कोमल ग्रह है तथा वह प्रभाव शीघ्र व अधिक मात्रा में ग्रहण करता है।

सूर्य प्रभाव : चंद्रमा सूर्य से युत/दृष्ट हो तो उस वर्ष शारीरिक कृषता, नेत्र–विकार, ज्वर, पाचन विकार आदि रोग तथा राज्य व अग्नि से भय होता है।

मंगल प्रभाव	: वैसे तो मंगल की युति/दृष्टि मंगलमय ही मानी गई है किंतु यदि पाप प्रभाव भी हो तो दुर्घटना, चोट व रक्त विकार का भय होता है।
बुध प्रभाव	: विद्या व बुद्धि संबंधी कार्यों में सफलता, मित्रों व भाइयों से सुख, उत्तर दिशा से लाभ। पाप प्रभाव हो तो मित्रों से विरोध या हानि, शत्रु–भय व स्नायु रोग की संभावना होती है।
गुरु प्रभाव	: विशेष फलदायक, धन, यश, ज्ञान, भक्ति, संतान, वाहन, विवाह आदि का सुख, श्रेष्ठ व उच्च व्यक्तियों से मित्रता होती है। यदि पाप प्रभाव हो तो फलों में न्यूनता आती है किंतु अशुभ फल नहीं होते।
शुक्र प्रभाव	: दोनों ग्रह समान धर्मी होने से स्त्री–सुख, कन्या संतान, प्रेम विवाह, मनोरंजन व भोग–विलास का सुख, श्वेत वस्तुओं से विशेष लाभ होता है।
शनि प्रभाव	: हानिकारक प्रभाव, राज्य व शत्रु भय, चिंता, शोक, उद्विग्नता, चर्मरोग, मतिभ्रम, कृषता, पश्चिम दिशा से विशेष हानि होती है।
राहु/केतु प्रभाव	: शनि से भी अधिक हानिकारक, मानसिक चिंता, पारिवारिक क्लेश, नीच विचार, नीच व्यक्तियों से संबंध, वायु–विकार व अनेक बाधाएं। केतु के प्रभाव से दुर्घटना, चोट, रक्त विकार का भय होता है।

वर्षेश मंगल का फल :

पूर्ण बली	: यश, विजय, राज्य कृपा, सम्मान, सेना/पुलिस की नौकरी में पदोन्नति/उच्चाधिकार, भ्रातृ सुख, उत्सह, कार्य क्षमता में वृद्धि, शुभ कार्य संपन्न आदि शुभ फल।
मध्यम बली	: उपरोक्त फलों में न्यूनता, क्रोध, रक्त–विकार, चोट, चोरी, निरर्थक यात्रा, शस्त्र तथा अग्नि भय।
अल्प बली	: शत्रु से हानि, चोरी, धन व कार्य नाश, झगड़े–फसाद, परिवार व मित्रों से क्लेश, भूमि–मकान की हानि आदि। यदि ऐसे वर्षेश से लग्न/लग्नेश प्रभावित हो तो पित्त प्रकोप, पर स्त्रियों में आसक्ति, दुर्घटना, विवाद, कलह आदि अशुभ फलों में और भी वृद्धि हो जाती है।
सूर्य प्रभाव	: सूर्य से युत/दृष्ट मंगल साहस व पुरुषार्थ वृद्धि, शत्रुओं/विरोधियों पर विजय, राजकीय सम्मान पूर्व दिशा से लाभ व पश्चिम दिशा से हानि, पित्त व ज्वर वृद्धि, भय व धन हानि आदि शुभाशुभ फल करता है।
चंद्र प्रभाव	: अनेक प्रकार के सुखों की प्राप्ति, स्त्री सुख, वायव्य दिशा से विशेष लाभ, भ्रातृ–सुख, धन–संपत्ति का लाभ।
बुध प्रभाव	: पशुधन की हानि, अग्नि, शत्रु भय, रक्त विकार चर्म रोग, स्नायु व मिर्गी रोग, उत्तर दिशा से हानि/शुभ प्रभाव होने पर अशुभ फलों में कमी व शुभता की संभावना भी हो सकती है।

गुरु प्रभाव : अति शुभ फल, मान–प्रतिष्ठा, भक्ति, दान–पुण्य, शौर्य–साहस में वृद्धि, ईशान दिशा से विशेष लाभ।

शुक्र प्रभाव : क्रोध व काम की वृद्धि, वैभव में कमी, शारीरिक कष्ट, शत्रुओं से हानि तथा आग्नेय दिशा से विशेष भय होता है।

शनि प्रभाव : हतोत्साह, उदासीनता, कुटिल बुद्धि, नीच–संगति, दुर्व्यसन, थकान व नीरसता, काले पदार्थों से हानि।

राहु/केतु प्रभाव : पुरुषार्थ की हानि, अधर्म में रुचि, राहु अतिशय आसक्ति की ओर धकेलता है व बुद्धि भ्रमित करता है तथा केतु वैराग्य व अनासक्ति की ओर ले जाता है। दोनों ही शोक–संताप, मानसिक व शारीरिक कष्ट तथा कार्य–व्यवसाय में हानि पहुंचाते हैं।

वर्षेश बुध का फल :

पूर्ण बली : बुद्धि जनित कार्यों व व्यवसायों में लाभ व वृद्धि, मित्रों, भाई बंधुओं व परिवार से सुख/लाभ, नए कार्यों, व्यापार में लाभ तथा अनेक प्रकार के सुख व प्रसन्नता।

मध्यम बली : उपरोक्त फलों मे ंन्यूनता, मित्रों व स्वजनों से कलह, बड़ों व राजकीय अधिकारियों से झगड़ा कराता है।

अल्प बली : वाणी दोष, मिथ्या प्रलाप, वाद–विवाद से हानि, चर्म रोग व स्नायु विकार, परीक्षा/प्रतियोगिता में असफलता आदि। वर्षेश बुध की लग्न/लग्नेश से युति, दृष्टि या इत्थशाल बुध के शुभ फलों मे वृद्धि कारक होती हैं

सूर्य प्रभाव : सूर्य से युत/दृष्ट बुध राज्य व स्वजनों से लाभ, तीर्थ यात्रा, उत्सव, आकस्मिक धन प्राप्ति, वाहन सुख, पशुलाभ आदि शुभ फलों के साथ ज्वर, पित्त–विकार व शत्रु–भय जैसे अशुभ फल भी देता है। अस्त होने पर कष्ट बढ़ते हैं।

चंद्र प्रभाव : सामान्य रूप से शुभ फल किंतु साथ ही त्वचा रोग, कफ–विकार, धन–हानि व मित्रों से वैमनस्य आदि अशुभ फलों की भी संभावना रहती है।

मंगल प्रभाव : अशुभ प्रभावकारी, स्नायु व त्वचा रोग, पारिवारिक कलह, स्थान–हानि, चोरी, लांछन, कलंक, चिंता, भय, चोरी, सिर के रोग, धातु आदान प्रदान में हानि, दक्षिण दिशा से हानि।

गुरु प्रभाव : शुभ प्रभाव, राज्य–सम्मान, यश वृद्धि, विद्या व ज्ञान, पठन–पाठन, लेखन कार्यों से लाभ, विद्वान उच्च व्यक्तियों से संपर्क, तीर्थ–यात्रा, व्यवसाय से लाभ, ईशान दिशा से लाभ। अशुभ प्रभाव हो तो कफ जन्य रोग व भय आदि फल होते हैं।

शुक्र प्रभाव : शुभकारी प्रभाव, विद्या–बुद्धि के कार्यों में लाभ व वृद्धि, स्त्री–सुख, देव, गुरु व मित्रों में भक्ति तथा प्रेम, उत्सवों व मान–सम्मान में वृद्धि, सुख संतुष्टि।

शनि प्रभाव : अशुभकारी प्रभाव, नीच संगति, दुर्व्यसन, दुष्ट व नीच बुद्धि, पीड़ा, संताप व उदासीनता, नपुंसकता, धर्म के प्रति अश्रद्धा, शीत विकार, धन–नाश, रति–विकार।

राहु/केतु प्रभाव : शुभ प्रभाव हो तो राहु के कारण अति उत्साह, मतिभ्रम, वायु–रोग, नीच वर्ग से लाभ व नैऋत्य दिशा से लाभ प्राप्ति। केतु के कारण नीच वर्ग से हानि।

वर्षेश गुरु का फल :

पूर्ण बली : अतिशुभ फल, सुख–शांति, धर्म, धन व यश–सम्मान में वृद्धि, संतान प्राप्ति अथवा सुख, उत्तम विचार।

मध्यम बली : उपरोक्त फलों में न्यूनता, राज्य अधिकारियों व उच्च लोगों से मेलजोल, पठन–पाठन, लेखन, ज्ञानवृद्धि। यदि पाप प्रभाव हो तो धन हानि व पारिवारिक अशांति, अहंकार वृद्धि।

अल्प बली : राज्य भय, अपकीर्ति, धनहानि, पारिवारिक कलह, मधुमेह, स्थूलता, पाचक अंगों के रोग, पीलिया, कफ विकार। वर्षेश गुरु लग्न/लग्नेश से युत/दृष्ट हो तो धन–संपत्ति, यश–सम्मान, संतान प्राप्ति आदि शुभ फल प्राप्त होते हैं।

सूर्य प्रभाव : यदि गुरु अस्त न हो तो धन, संपत्ति, यश–सम्मान, राज्य कृपा तथा पूर्व दिशा से विशेष लाभ। साथ–साथ ज्वर, पित्त, कफ, मधुमेह आदि शारीरिक कष्ट की संभावना।

चंद्र प्रभाव : अतिशुभ, सभी प्रकार के सुख, स्त्री, पुत्र, मित्र, धन व भोजन के सुख, श्वेत वस्तुओं व वायव्य दिशा से लाभ, पाप प्रभाव होने पर कफ–विकार भी संभव है।

मंगल प्रभाव : भूमि भवन, यश व धन लाभ, विवादित झगड़े, मुकदमों में जीत, लाल वस्तुओं व दक्षिण दिशा से लाभ, पाप प्रभाव हो तो राज्य दण्ड, शत्रुभय, धन हानि, ज्वर पीड़ा।

बुध प्रभाव : विद्या, ज्ञान, बुद्धि के कार्यों में सफलता, गुरुजनों के प्रति श्रद्धाभाव, उत्तर दिशा से विशेष लाभ।

शुक्र प्रभाव : अशुभ प्रभाव, स्त्री–पीड़ा, बुद्धि भ्रष्ट, धन–हानि, शारीरिक कष्ट व मानसिक चिंता, आग्नेश दिशा से हानि।

शनि प्रभाव : नीच संगति, नीच वृत्ति, दुर्व्यसनों की ओर झुकाव व उनसे हानि, नीच वर्ग व विदेशी लोगों तथा पश्चिम दिशा से हानि, स्थान परिवर्तन व मान–हानि।

राहु/केतु प्रभाव : स्वजनों से शत्रुता तथा पराये व विजातीय/विदेशी/नीच लोगों के प्रति झुकाव/प्रेम/विवाह, स्थानांतरण, मानसिक अशांति आदि फल प्राप्त होते हैं।

वर्षेश शुक्र के फल :

पूर्ण बली : स्त्री सुख, भोग–विलास की वस्तुओं की प्राप्ति, अच्छा स्वास्थ्य, व्यवसाय में लाभ, पदोन्नति, राज्य कृपा, मंगल कार्य।

मध्यम बली : उपरोक्त फलों में न्यूनता, व्यापार मंदी, आय संबंधी अनिश्चितता, चिंता, गुप्त दुःख।

अल्प बली : धन हानि, व्यापार में घाटा, लांछन, व्यसन, पतन, स्वजनों से मन मुटाव, अविश्वास, जग हंसाई आदि अशुभता। वर्षेश शुक्र की लग्न/लग्नेश से युति/दृष्टि/योग सुखी दांपत्य जीवन, हर्ष उल्लास , कन्या संतान प्राप्ति, वाहन, वस्त्र, आभूषण आदि की प्राप्ति कराता है।

सूर्य प्रभाव : अशुभ परिणाम चाहे शुक्र अस्त न भी हो, शत्रु राज्य, अग्नि भय, नेत्र रोग, पित्त विकार, अतिव्यय, मित्र–विरोध।

चंद्र प्रभाव : अस्थिर व चंचल मन, स्त्री सुख की वृद्धि किंतु वर्ष भर नाना प्रकार के शारीरिक, आर्थिक, मानसिक कष्ट।

मंगल प्रभाव : धन लाभ व दक्षिण दिशा से लाभ किंतु उत्साह हीनता, शारीरिक पीड़ा, पतनोन्मुखी प्रवृत्ति, पशुधन हानि।

बुध प्रभाव : बुद्धि, चातुर्य से भाग्य व धन वृद्धि, मित्र, संबंधियों से सुख, मांगलिक कार्य, सुख–समृद्धि।

गुरु प्रभाव : शुभ फल, अध्यात्म, गुरु व संतों के प्रति श्रद्धा, सुख समृद्धि, संतान, स्त्री, सुख। विवाह, पदोन्नति, आय वृद्धि, तीर्थयात्रा, श्वेत वस्तुओं व ईशान से लाभ।

शनि प्रभाव : भूमि–भवन प्राप्ति, काले रंग की वस्तुओं के व्यापार से लाभ, पश्चिम दिशा से लाभ, वृद्धा स्त्री से संबंध, वाहन प्राप्ति किंतु पशुओं से हानि की संभावना।

राहु/केतु प्रभाव : पारिवारिक क्लेश, नीच वृत्ति के लोगों से संबंध, वायु विकार, गुप्तांगों के रेग आदि अशुभ फल।

वर्षेश शनि का फल :

पूर्ण बली : भूमि भवन की प्राप्ति, विधर्मी लोगों से लाभ तथा ऐसी सरकार से पद व धन का लाभ, शनि से संबंधित कार्यों/व्यवसायों से विशेष लाभ।

मध्यम बली : उपरोक्त फल अल्प मात्रा में, कृषि कार्य, कोयला, तेल, भवन निर्माण सामग्री आदि से साधारण लाभ।

अल्प बली : अशुभ फल, व्यवसाय में हानि, मान–हानि, स्वजनों से विरोध, दुःख, भय, मानसिक विकार, शारीरिक कष्ट। वर्षेश शनि यदि लग्न/लग्नेश से युति/दृष्टि संबंध बनाये तो भी अशुभ फलदायक ही होता है तथा उपरोक्त अल्प बली जैसे फल देता है।

सूर्य प्रभाव : सूर्य से युत/दृष्ट शनि राज्य, शत्रु व अग्नि भय, विदेश यात्रा, सज्जन पुरुषों से मतभेद, स्वयं तथा परिवार की स्वास्थ्य हानि, पित्त व वायु विकार के रोग देता है।

चंद्र प्रभाव : अशुभ प्रभाव, धन हानि, बंधु बांधवों व मित्रों से वियोग/विरोध, वायु तथा जलीय विकार के रोग देता है।

मंगल प्रभाव : अशुभ फल, चोरी, अग्नि कांड व शत्रुओं से भय, बंधुओं से विरोध, रक्त विकार, दुर्घटना, अस्थि भ्रंश।

बुध प्रभाव : शुभ फल कारी, भाग्य, सुख, प्रसन्नता, धन, वस्त्र, आभूषण, ज्योतिष, अध्यात्म ज्ञान वृद्धि, उत्तर दिशा से लाभ।

गुरु प्रभाव : शुभ प्रभाव, धन–संपत्ति, भूमि का लाभ, धर्म, गुरु, संतजनों में प्रीति व श्रद्धा, उच्च पद, ईशान से लाभ।

शुक्र प्रभाव : शुभ फल, उत्साह, सहवास–सुख, बंधु वर्ग से प्रेम, कुल प्रतिष्ठा वृद्धि, सुख–समृद्धि, कफ व वायु विकार।

राहु/केतु प्रभाव : अशुभ फल, शारीरिक चोट, त्वचा रोग, गुदा रोग, वायु व रक्त विकार, सर्पदंश, मूर्छा आदि का रोग।

विशेष : उपरोक्त फल कथन में केवल युति या दृष्टि प्रभाव ध्यान रखा गया है उनके अतिरिक्त राशिगत (उच्च/नीच/स्वराशि), भावगत (शुभ, त्रिक भाव स्थिति) योग गत (ताजिक के शुभ या अशुभ योग), सहमगत आदि सभी का शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है तथा फल कथन में उनका समावेश आवश्यक है।

अभ्यास प्रश्न

1. यदि सूर्य अथवा शनि वर्ष कुंडली में वर्षेश बनें तो विंशोपाक बल के आधार पर उनसे किस प्रकार के फल अपेक्षित हैं? इनमें से किसी ग्रह पर अन्य सभी ग्रहों की युति/दृष्टि आदि के प्रभाव का विस्तृत विवरण लिखें।

2. चंद्रमा किन शर्तों पर वर्षेश बनने का अधिकारी है? वर्षेश बनने पर चंद्रमा के कैसे फल प्राप्त होते हैं, उस पर अन्य ग्रहों की युति/दृष्टि आदि का क्या प्रभाव पड़ता है, विस्तार से बतायें।

3. वर्षेश होने पर बुध, गुरु, शुक्र व शनि से कैसे फल मिलते हैं, संक्षिप्त में वर्णन करें। इनमें से किसी एक ग्रह पर अन्य ग्रहों के प्रभाव का क्या फल होता है, संक्षेप में लिखें।

10. ताजिक योग

ताजिक में 16 योगों का विशेष महत्व माना जाता है। वैसे इनके अतिरिक्त 32 और योगों का उल्लेख ज्योतिष विद्वान नवाब खान खानाह ने आपने दो ग्रंथों में किया है जिनके नाम हैं– द्वा त्रिशांदि योगावली तथा खेट कौतुक। यहां षोड्श योगों का ही विस्तृत विवरण किया जायेगा।

ताजिक के विद्वानों का मत है कि केवल योगों के आधार पर भी फल कथन में चमत्कारिक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। इन योगों के निर्माण में ग्रहों की ताजिक दृष्टियों तथा दीप्तांशों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है ताजिक दृष्टियां परस्पर व निम्न प्रकार की होती हैं :–

1. मित्र दृष्टि :

प्रत्यक्ष	:	5/9	शुभता–75%
गुप्त	:	3/11	शुभता–65 तथा 35%

2. शत्रु दृष्टि :

प्रत्यक्ष	:	1/7	शुभता–10%
गुप्त	:	4/10	शुभता–25%

ताजिक में 2/12 तथा 6/8 का संबंध दृष्टि उत्पन्न नहीं करता इसलिए इसे अदृष्टि अथवा समदृष्टि भी कहा जाता है। ताजिक योगों में ग्रहों का दीप्तांशों में होना भी आवश्यक होता है। ग्रहों के दीप्तांश पुनः निम्नलिखित हैं–

सूर्य	:	15^0
चंद्रमा	:	12^0
मंगल	:	8^0
बुध तथा शुक्र	:	7^0
गुरु तथा शनि	:	9^0

दृष्टा तथा दृष्ट ग्रहों के दीप्तांशों को जोड़कर आधा कर लें। यदि दोनों ग्रहों की अंशगत दूरी इस आधे के समान या इससे कम हो तो वे दीप्तांशों के अंतर्गत माने जायेंगे वरना नहीं। ताजिक योग बनने के लिए ग्रहों का दीप्तांशों में होना नितांत आवश्यक है अन्यथा ताजिक दृष्टि में होते हुए भी वे ग्रह ताजिक योग बनाने में समर्थ नहीं होंगे।

उदाहरण के लिए मंगल के राशिगत अंश 18 हों तथा गुरु के 25^0 और वे दृष्टि संबंध बनाते हों तो दीप्तांशों में होने के लिए उनकी अंशगत दूरी 8½° (मं 8, गु. 9 दीप्तांश 8+9/2=$8½^0$) या इससे कम होनी चाहिए जो कि (25–18=7^0) 7^0 ही है अतः वे दीप्तांशों में है। यदि गुरु के अंश 27 होते तो वे दीप्ताशों से बाहर होने के कारण ताजिक योग के लिए सक्षम नहीं होते।

आगे दिए गए ताजिक योगों का अध्ययन करते समय उपरोक्त बतायी गई ताजिक दृष्टियों तथा दीप्तांशों को ध्यान में रखें। यह भी समझ लें कि दृष्टि चाहे मित्र दृष्टि हो अथवा शत्रु दृष्टि, योग निर्माण दोनों से ही होता है भले ही दृष्टि की शुभता योग की गुण वत्ता को प्रभावित करे।

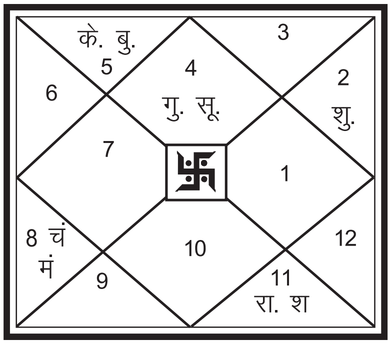

1. इक्कबाल योग (शुभ)

1. इक्कबाल योग : वर्ष कुंडली में यदि सभी ग्रह केंद्र (1, 4, 7, 10) या पणफर (2, 5, 8, 11) भावों में स्थित हों तो यह योग बनता है। यह शुभ योग है तथा इसके परिणाम स्वरूप जातक को इस वर्ष सभी प्रकार के सुख साधन, धन–धान्य पारिवारिक शांति, कार्य सिद्धि व उन्नति प्राप्त होती है। इकबाल का अर्थ है वर्चस्व यानी वर्ष में जातक के वर्चस्व में वृद्धि होती है। दी गई कुंडली में सभी ग्रह 1, 2, 5, 8 व 11 भाव में स्थित हैं।

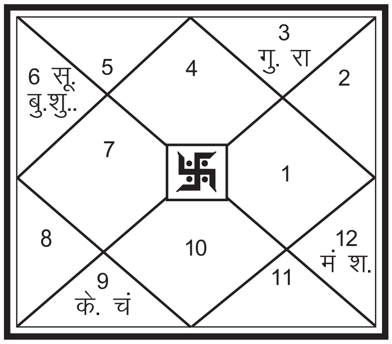

2. इंदुवर योग (अशुभ)

2. इंदुवार योग : जब वर्ष कुंडली में सभी ग्रह अपोक्लिम भावों (3, 6, 9, 12) में स्थित हों तो इंदुवार नामक अशुभ योग बनता है जैसा कि कुंडली में दर्शाया गया है। जातक के लिए इस वर्ष परिवार में दुःख, क्लेश व रोग होते हैं तथा राज्य से भय होता है। पूरा वर्ष मानसिक उद्वेग व चिंता बनी रहती है। देखें इन्दुवार योग कुंडली।

3. इत्थशाल या मुत्थशिल योग : यह ताजिक का सबसे महत्वपूर्ण व शुभ योग है। इसके बनने के लिए निम्न शर्तें आवश्यक हैं :–

(i) कोई भी दो ग्रह जिनके बीच यह योग बने, वे परस्पर ताजिक दृष्टि में हों।
(ii) दोनों ग्रह दीप्तांशों में भी हों।
(iii) शीघ्र गति वाले ग्रह के राशिगत अंश कम तथा मंद गति वाले के अधिक हों।

यहां शीघ्रगामी ग्रह का अर्थ है जिसकी दैनिक गति अधिक हो जैसे चंद्रमा सूर्य से शीघ्रगामी है, सूर्य मंगल से, मंगल गुरु से इत्यादि। राशिगत अंश से तात्तर्य है राशि रहित ग्रह के अंश या कृषांक। यदि ग्रहों के रेखांश पूर्ण अंशों में दिए गये हों जैसे 159^0–20′ तो उसे पहले राशि अंशों में बदल लें यानी $5^{रा}$–9^0–20′ अब राशि रहित अंश हुए 9^0–20′ जिसके आधार पर हमें देखना है कि शीर्घगामी ग्रह के अंश कम हों तथा मंदगामी के अधिक।

ऐसा माना जाता है कि शीघ्रगामी ग्रह का कुछ तेज निकलकर मंदगामी ग्रह में प्रवेश करके दोनों इत्थशाली ग्रहों के मध्य एक प्रगाढ़ संबंध बनाता है जो मैत्री से भी अधिक घनिष्ट होता हैं। इसके अतिरिक्त शीघ्रगति ग्रह के कृषांश कम होने के कारण वह वर्ष प्रवेश के शीघ्र बाद में मंद गति ग्रह के समान अंश प्राप्त कर लेगा। जो भी कारण हो इत्थशाल योग बहुत प्रभावशाली माना जाता है किंतु फल

की शुभाशुभता अन्य स्थितियों पर भी निर्भर करती है। उदाहरण के लिए–

- यदि शीघ्रगति वाला ग्रह वक्री हो तो इत्थशाल का फल नहीं मिलता क्योंकि दोनों इत्थशाली ग्रहों के बीच अंतर बढ़ता जाएगा।
- किंतु यदि मंदगति वाला ग्रह वक्री हो तो उनके बीच का अंतर घटता जायेगा इसलिए इत्थशाल अधिक प्रभाव शाली बनेगा।
- यदि दोनों इत्थशाली ग्रह वक्री, अस्त, नीच अथवा निर्बल/पीड़ित हों तो इत्थशाल का फल नहीं मिलता।
- यदि लग्नेश या वर्षेश का इत्थशाल शुभ भावों के स्वामियों से हो तो फल भी शुभ होता है। यदि यह इत्थशाल त्रिक भावों (6, 8, 12) के स्वामियों से हों तो फल भी अशुभ होते हैं।

इत्थशाल योग के प्रकार :

(i) पूर्ण इत्थशाल (ii) वर्तमान इत्थशाल (iii) भविष्य इत्थशाल

(i) पूर्ण इत्थशाल : जब इत्थशाली ग्रहों की अंशगत दूरी 1^0 या इसके कम हो तो पूर्ण इत्थशाल कहलाता है।

प्रस्तुत कुंडली 3.(i) में चंद्र तथा गुरु परस्पर 5/9 ताजिक दृष्टि में है तथा उनकी अंशगत दूरी केवल 35 कला है।

(ii) वर्तमान इत्थशाल : यदि इत्थशाली ग्रहों की अंशगत दूरी 1^0 से अधिक हो तो उसे वर्तमान इत्थशाल कहते हैं।

प्रस्तुत कुंडली 3.(ii) में यह योग सूर्य तथा मंगल के बीच 1/7 ताजिक दृष्टि के अंतर्गत बनता है। दोनों ग्रह दीप्तांशों (1^0 से अधिक) में हैं।

(iii) भविष्य इत्थशाल : यदि दो ग्रह दीप्तांशों के अंतर्गत तो हों किंतु अभी ताजिक दृष्टि न हो। इसके साथ ही शीघ्रगामी ग्रह राशि के अंत में चल रहा हो (यानी 28^0 से 30^0 पर) तथा अगली राशि में प्रवेश करते ही मंदगामी ग्रह से दृष्टि संबंध बनाये तो इसे भविष्य इत्थशाल कहते हैं।

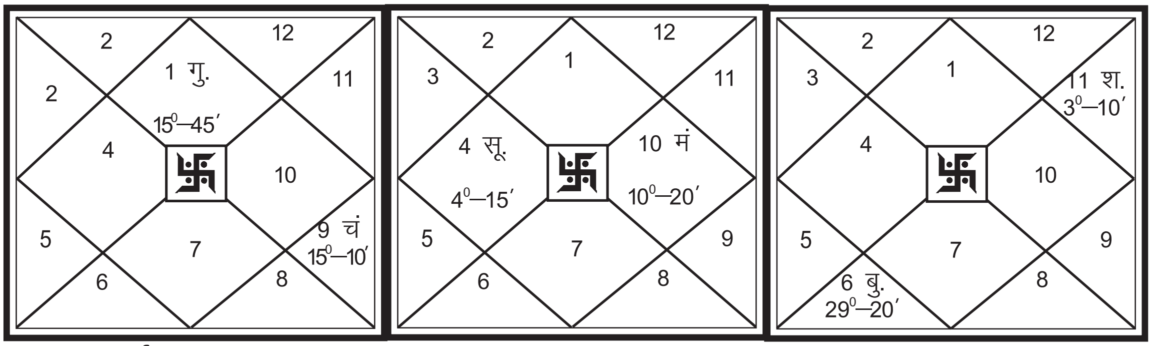

3.(i) पूर्ण इत्थशाल (शुभ) **3.(ii) वर्तमान इत्थशाल (शुभ)** **3.(iii) भविष्य इत्थशाल (शुभ)**

इसे राश्यांत इत्थशाल भी कहते हैं।

जैसा कि प्रस्तुत वर्ष कुंडली 3.(iii) में दिखाया गया है। बुध तथा शनि में 6/8 का संबंध होने से अभी ताजिक दृष्टि का अभाव है किंतु दोनों ग्रह दीप्तांशों में हैं, शीघ्रगामी बुध राश्यांत पर है तथा सप्तम भाव में प्रवेश करते ही शनि से 5/9 दृष्टि संबंध बनाकर वर्तमान इत्थशाल में परिवर्तित हो जाएगा।

विशेष :

- जिस भाव से संबंधित विषय हो, उस भावेश को कार्येश कहा जाता है। वैसे तो किन्हीं दो ग्रहों के बीच इत्थशाल हो सकता है तथा वर्ष कुंडली में एक साथ कई इत्थशाल योग बन सकते हैं किंतु यदि लग्नेश व कार्येश के बीच इत्थशाल बनें तो उसका विशेष प्रभाव होता है। कुंडली में जितने अधिक इत्थशाल बने उतना ही अच्छा प्रभाव पड़ता है।
- उपरोक्त तीनों प्रकार के इत्थशाल सामान्यतया एक ही स्तर के तथा शुभ माने जाते हैं यद्यपि और कारणों से इनकी गुणवत्ता में अंतर हो सकता है।
- इत्थशाल योग का फल संबंधित ग्रहों की मुद्दा दशा में प्राप्त होता है। कुछ विद्वानों का मत है कि वर्ष प्रवेश से गिनने पर जितने दिन बाद शीघ्रगामी ग्रह के अंश मंदगामी ग्रह के समान हो जाएंगे उतने दिन बाद फल मिलता है। एक अन्य विचार के अनुसार इत्थशाली ग्रहों के राशिगत अंशों के अंतर को 12 से गुणा करने पर जो संख्या आये, वर्ष प्रवेश के उतने दिन बाद उसका फल घटित होता है।
- कार्येश का इत्थशाल लग्नेश के अतिरिक्त वर्षेश से भी देखना चाहिए।

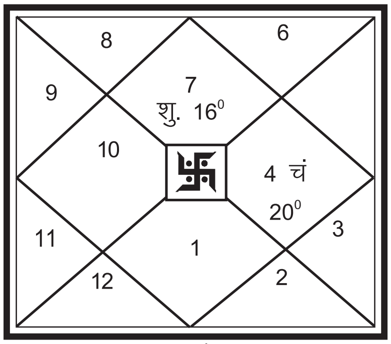

4. इशराफ योग (अशुभ)

4. इशराफ योग : जब दो ग्रह ताजिक दृष्टि में हों, दीप्तांशों में भी हों किंतु शीघ्रगामी ग्रह के राशिगत अंश मंदगामी से अधिक हों। इस कारण दोनों ग्रहों के मध्य अंतर बढ़ता जाएगा। यह इत्थशाल के विपरीत योग हैं तथा अशुभ फल देने वाला है। इसे 'मुशरिफ' योग भी कहा जाता है।

प्रस्तुत कुंडली में शीघ्रगामी चंद्रमा के अंश लग्नेश शुक्र से अधिक हैं।

विशेष : यदि दोनों ग्रह शुभ हों तो कार्य नाश की संभावना नहीं होती तथा वे दीप्तांशों से बाहर भी हों या अंशगत दूरी 12^0 से अधिक हो जाए तो अशुभ फल विशेष नहीं होता। किंतु यदि तीव्रगति ग्रह मंद गति ग्रह के आगे स्थित होकर वक्री हो तो इशराफ के फल इत्थशाल जैसे शुभ हो जाते हैं।

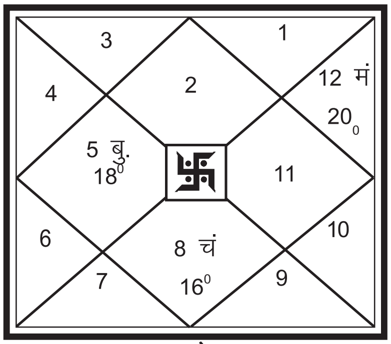

5. नक्त योग (शुभ)

5. नक्त योग : जब दो ग्रह ताजिक दृष्टि में न हों किंतु दोनों से शीघ्रगामी ग्रह इस प्रकार स्थित हो कि वह दोनों ग्रहों से ताजिक दृष्टि में तथा दीप्तांशों में भी हो। इस तीसरे अधिक शीघ्रगामी ग्रह के माध्यम से दोनों ग्रहों के मध्य एक प्रकार से इत्थशाल संबंध बन जाता है।

प्रस्तुत कुंडली में बुध तथा मंगल के बीच ताजिक दृष्टि नहीं है किंतु उन दोनों से शीघ्रगामी चंद्रमा न केवल उनसे दृष्टि संबंध बनाता है बल्कि दोनों से दीप्तांशों में भी है। अतः चंद्रमा बुध का कुछ तेज मंगल को हस्तांतरित कर देता है। यह योग शुभ है, कार्य सिद्धि कराता है किंतु एक तीसरे मध्यस्थ व्यक्ति के माध्यम से सफलता मिलती है। मध्यस्थ ग्रह कुंडली में कहीं भी स्थित हो सकता है।

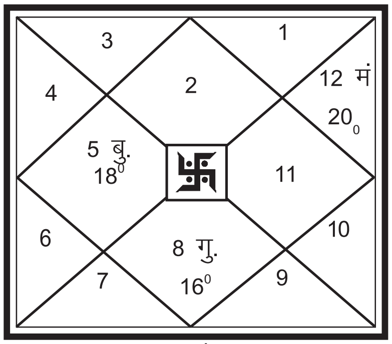

6. यमया योग (शुभ)

6. यमया योग : यह नक्त योग का ही दूसरा रूप है। अंतर केवत यह है कि तीसरा मध्यस्थ ग्रह दोनों ग्रहों से मंदगामी होता है।

प्रस्तुत कुंडली में बुध व मंगल में पहले की तरह दृष्टि संबंध नहीं है किंतु तीसरा मध्यस्थ ग्रह गुरु दोनों से मंदगामी है तथा दोनों से दीप्तांशों में भी है। यहां गुरु बुध का कुछ तेज मंगल को हस्तांतरित कर रहा है। यह भी नक्त की तरह शुभ योग ही है किंतु अब कार्य सिद्धि किसी विशेष सामर्थ्यवान व्यक्ति के माध्यम से संभव है।

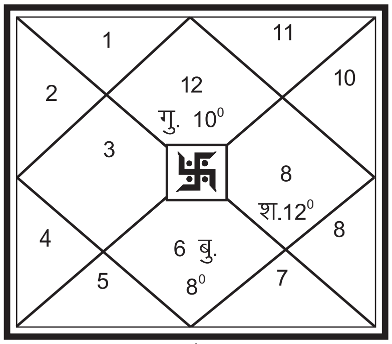

7. मणऊ योग (अशुभ)

7. मणऊ योग : जब दो ग्रह इत्थशाल योग बनाते हों किंतु कोई पापी ग्रह उनमें से किसी एक के साथ युत हो अथवा दीप्तांशों में होते हुए किसी एक अथवा दोनों ग्रहों पर शत्रु दृष्टि डाले तो मणऊ योग बनता है। यह अशुभ योग है जो इत्थशाल के शुभ प्रभाव को निरस्त करके कार्य नाश करता है।

प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश गुरु तथा सप्तमेश बुध के मध्य इत्थशाल योग को पापी ग्रह शनि दोनों ग्रहों पर अपनी गुप्त शत्रु दृष्टि से निरस्त कर रहा है जिससे दांपत्य सुख की हानि हो रही है।

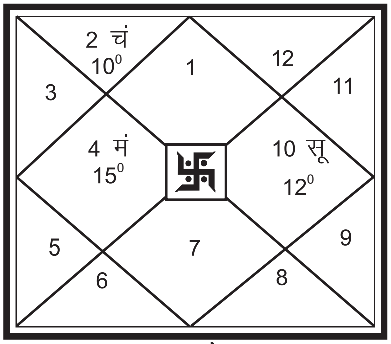

8. कम्बूल योग (शुभ)

8. कम्बूल योग : जब दो ग्रहों में इत्थशाल हो तथा चंद्रमा भी उनमें से किसी एक के साथ इत्थशाल करता हो तो कम्बूल योग बनता है।

प्रस्तुत कुंडली में मंगल तथा सूर्य के बीच इत्थशाल है तथा चंद्रमा भी दोनों ग्रहों के साथ इत्थशाल कर रहा है। ये एक प्रकार से इत्थशाल का ही विस्तार है जिसमें तीसरे ग्रह चंद्रमा (जो लग्नवत है) की भी सकारात्मक भूमिका है।

इस शुभ योग में एक से अधिक इत्थशाल योग होने के कारण कुंडली के स्तर में भी वृद्धि होती है तथा तीनों ग्रह अपने अपने भावों के शुभ फल देने में समर्थ होते हैं।

कार्य सिद्धि का अनुपात संबंधित ग्रहों की कुंडली में स्थिति पर निर्भर करता है। गुणवत्ता के आधार पर कम्बूल योग की 4 श्रेणियां हो सकती हैं।

उत्तम : जब ग्रह उच्च अथवा स्वराशि के हों।
मध्यम : जब ग्रह अपनी हद्दा, द्रेष्काण अथवा नवांश में स्थित हों।
सम : जब ग्रह अपने सम ग्रह की राशि में स्थित हों।
अधम : जब ग्रह अपनी नीच अथवा शत्रु राशि में स्थित हों।

तात्पर्य यह है कि तीनों ग्रह जितने अधिक शुभ व बलवान होकर स्थित होंगे उतना ही कम्बूल योग की शुभता में वृद्धि होगी। कई और भी कारणों से कम्बूल योग निर्बल हो सकता है जैसे द्विजन्मा वर्ष (जब जन्म व वर्ष लग्न एक हों) अशुभ मुन्था/मुन्थेश, अन्य अशुभ ताजिक योग, अशुभ जन्म दशा आदि।

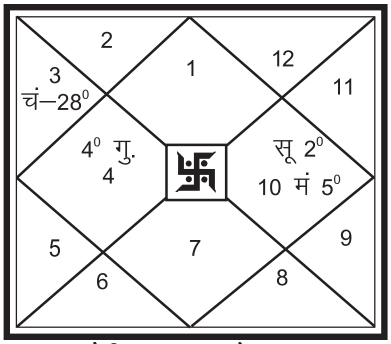

9. गैरी कम्बूल योग (शुभ)

9. गैरी कम्बूल योग : गैर का अर्थ है अन्य। कम्बूल संभवतः फारसी के मकबूल (प्रिय) शब्द का अपभ्रंश है। गैरी कम्बूल योग में लग्नेश व कार्येश में इत्थशाल होता है, चंद्रमा राशि के अंत में स्थित होता है तथा वह इत्थशाली ग्रहों से ताजिक दृष्टि में नहीं होता। यह चंद्रमा शून्य मार्गी होता है अर्थात् न तो स्वोच्च, न शुभ युत/दृष्ट, न स्व द्रेष्काण न स्व नवांश, न इत्थशाल रत, यानी कुल मिलाकर निर्बल। किंतु अगली राशि में प्रवेश करते ही यही शून्य मार्गी चंद्रमा किसी बलवान ग्रह से (गैर या अन्य ग्रह) इत्थशाल करे तथा लग्नेश कार्येश से भी इत्थशाल करे तो गैरी कम्बूल योग बनता है (कुछ विद्वानों के अनुसार चंद्रमा शून्य मार्गी न भी हो तो भी योग बनना चाहिए)।

प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश मंगल तथा पंचमेश सूर्य में इत्थशाल दशम भाव में बनता है किंतु तीसरे भाव में स्थित चंद्रमा उनसे ताजिक दृष्टि में नहीं है। चंद्रमा राश्यांत (28^0) है तथा अगली राशि में प्रवेश करते ही नवमेश तथा उच्च के गुरु से इत्थशाल करेगा तथा सूर्य व मंगल से भी इत्थशाल योग बनायेगा।

जहां कम्बूल में तीन ग्रह सम्मिलित थे वहां गैरी कम्बूल योग में चार ग्रह हो गए, यानि सात में से अब चार ग्रह इत्थशाली हो गए, अतः कार्य सिद्धि तो निश्चित है किंतु यह किसी अन्य प्रभावशाली व्यक्ति की सहायता से ही संभव होगी। कम्बूल योग में कार्यसिद्धि स्वयं के प्रयासों से थी, गैरी कम्बूल में किसी अन्य प्रभावशाली व्यक्ति की मदद से सफलता मिलती है। दोनों शुभ योग हैं।

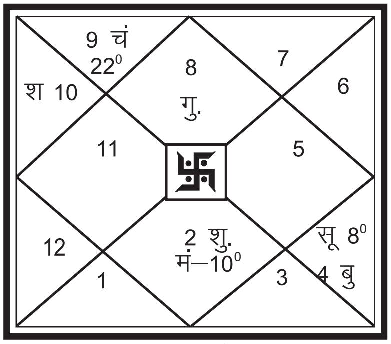

10. खल्लासर योग (अशुभ)

10. खल्लासर योग : लग्नेश व कार्येश में इत्थशाल हो लेकिन चंद्रमा शून्य मार्गी हो तथा किसी भी ग्रह से इत्थशाल न करता हो तो खल्लासर नामक अशुभ योग बनता है। लग्नेश के समकक्ष चंद्रमा की विशेष निर्बलता के कारण इत्थशाल योग होकर भी प्रभाव हीन हो गया है।

प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश मंगल तथा दशमेश सूर्य के मध्य बना इत्थशाल चंद्रमा की निर्बलता के कारण 'खल्लास' अथवा निरस्त हो गया है।

11. रद्द योग : जब लग्नेश व कार्येश (अथवा अन्य दो ग्रह) परस्पर इत्थशाल करें परंतु उनमें से कोई ग्रह अस्त, नीच, शत्रु राशि अथवा 6, 8, 12 अशुभ स्थान में स्थित हो अथवा क्रूर ग्रह से युक्त/दृष्ट हो तो रद्द नामक अशुभ योग बनता है जो बने बनाए इत्थशाल को रद्द या निरस्त कर देता है।

प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश शुक्र नीच होकर 12 वें स्थान में तथा चंद्रमा अपोक्लिम व छटे स्थान में स्थित हैं। इत्थशाल होते हुए भी रद्द हो गया है।

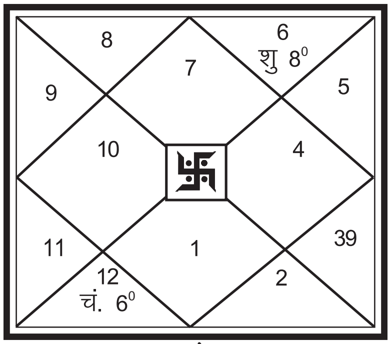

11. रद्द योग (अशुभ)

विशेष :

ताजिक भूषण के अनुसार शीघ्रगामी ग्रह अपोक्लिम भाव (3, 6, 9, 12) में होकर यदि केंद्रस्थ मंदगामी ग्रह से इत्थशाल करें तो पहले कार्यों में बाधा पड़ेगी किंतु बाद में कार्य सिद्धि होगी। इसके विपरीत स्थिति (मंदगामी अपोक्लिम में होकर केंद्रस्थ शीघ्रगामी ग्रह से इत्थशाल करें) में पहले कार्य बनता दिखाई पड़ता है परंतु बाद में कार्यनाश हो जाएगा।

12. दुफालिकुत्थ योग : जब लग्नेश तथा कार्येश में इत्थशाल हो किंतु मंदगामी ग्रह अपनी स्व, उच्च राशि का होकर बलवान हो और शीघ्रगामी ग्रह इसके विपरीत निर्बल हो (पंचवर्गीय बल के अनुसार) तो कार्य साधक है किंतु सफलता काफी दौड़–धूप व निराशा के बाद प्राप्त होती है। दोनों में से कोई ग्रह वक्री, अस्त या शत्रुराशिस्थ नहीं होना चाहिए। प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश सूर्य व निर्बल चंद्रमा के बीच यह योग उपरोक्त शर्तों के अनुसार बन रहा है।

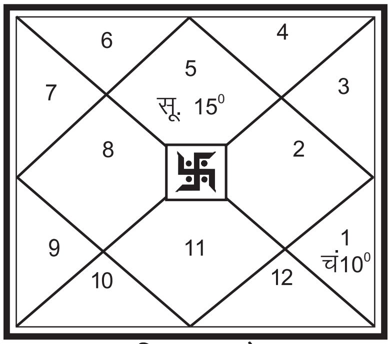

12. दुफालिकुत्थ योग (शुभ)

13. कुत्थ योग : जब वर्ष कुंडली में लग्नेश व कार्येश आदि बलवान हों तो कुत्थ योग बनता है। यह शुभ योग है। यहां कार्येश लग्नेश आदि से अभिप्राय है वर्षेश, मुन्थेश, मुन्था आदि तथा बलवान से अर्थ है उनका विंशोपाक पंचवर्गीय बल 10 से अधिक हों तथा उनकी स्थिति केंद्र/पणफर स्थानों में हो। तात्पर्य है वर्ष कुंडली के प्रमुख अवयव यदि बलवान हों तो कार्यों में सफलता निश्चित है।

14. दुत्थकुत्थीर या कुत्थीर योग : जब लग्नेश व कार्येश निर्बल होकर इत्थशाल करे तथा उनमें से एक किसी ऐसे ग्रह से भी इत्थशाल करे जो स्वराशि या उच्चराशि में स्थित हो। यह योग किसी प्रभावशाली व्यक्ति की सहायता से कार्य सिद्धि कराता है।

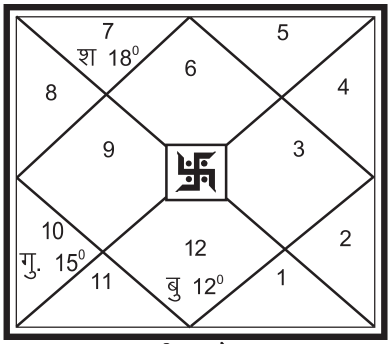

14. कुत्थीर योग (शुभ)

प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश बुध व सुखेश/सप्तमेश गुरु परस्पर इत्थशाल में हैं, दोनों अपनी नीच राशि में स्थित होकर निर्बल हैं। इनमें से गुरु उच्चराशिस्थ शनि के साथ भी इत्थशाल कर रहा है। अतः दांपत्य भाव के शुभ फल किसी प्रभावशाली व्यक्ति की सहायता से प्राप्त होंगे।

15. तम्बीर योग : इस योग में न तो लग्नेश व कार्येश में इत्थशाल होता है न दृष्टि संबंध। किंतु इनमें से एक ग्रह राश्यांत पर होता है तथा आगामी राशि में प्रवेश करने पर किसी अन्य ग्रह से, जो स्व या उच्च राशि का हो, इत्थशाल करता है अथवा दीप्तांशों में आ जाता है। यह भी शुभ योग कहलाता है किंतु इसमें शुभता थोड़ी ही होती है बल्कि ग्रह निर्बल हों तो कार्य नाश भी हो सकता है। शुभ होने पर भी कार्य सिद्धि किसी अन्य व्यक्ति की सहायता से होती है।

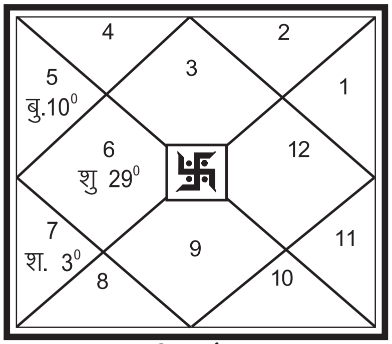

15. तम्बीर योग (शुभ)

प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश बुध व पंचमेश शुक्र के मध्य न दृष्टि संबंध है न इत्थशाल। शुक्र 29^0 का है तथा अगली राशि में प्रवेश करने पर उच्च राशिस्थ शनि के साथ इत्थशाल करेगा तथा पंचम भाव के शुभ फल किसी अन्य की सहायता से प्राप्त होंगे।

16. दुर्रुफ योग : यह कुत्थ योग के विपरीत तथा अशुभ योग होता है। इसमें लग्नेश, कार्येश (वर्षेश, मुन्थेश, मुन्था आदि) निर्बल होकर वर्ष कुंडली में स्थित होते हैं तथा कार्य नाश कराते हैं। निर्बल से यहां अभिप्राय है कि प्रमुख ग्रह वक्री, अस्त, त्रिक स्थान में स्थित, नीच, शत्रुक्षेत्री अथवा पंचवर्गीय/हर्षबल में हीन बली हैं।

चंद्र दुर्रुफ योग : यदि वर्ष कुंडली में चंद्रमा विशेष निर्बल हो तो भी चंद्र दुर्रुफ अशुभ योग के कारण कार्य नाश करा सकता है क्योंकि चंद्रमा को लग्नवत माना जाता है। चंद्रमा को निर्बल करने वाली स्थितियां आचार्य नील कण्ड के अनुसार इस प्रकार है :–

सूर्य से द्वादश भाव में स्थित हो, वृश्चिक के पूर्वार्द्ध या तुला के उत्तरार्द्ध में हो, राशि स्वामी की युति/दृष्टि से रहित हो, राशि के अंत या आदि के छोर पर हो, संधिगत होकर क्षीण हो, जन्म कुंडली में भी अशुभ हो, शुक्ल पक्ष में मंगल या कृष्णपक्ष में शनि की शत्रु दृष्टि से युक्त हो।

खान खानाह नवाब के अन्य ताजिक योग : ''खेट कौतुक'' तथा ''द्वात्रिंशद्योगावली'' नामक संस्कृत–फारसी मिश्रित भाषाओं में लिखित खान–खानाह नवाब की पुस्तकों में 33 अन्य ताजिक योगों का उल्लेख है जिनमें से अधिक लोकप्रिय योगों के नाम निम्न प्रकार हैं :–

1. मुक्तावली	2. काबिल	3. लालील	4. लत्ता
5. रिहा	6. गोशना	7. दोशना	8. चीन
9. कलांवर	10. वारा	11. दिल्ला	12. मादला
13. कुलाल	14. कुलाली	15. खुशाला	16. खुशाली
17. फलूशा	18. फलासी	19. वदारा	20. वदारी
21. तमाल	22. तमाली	23. तगी	24. तेगी
25. तेज	26. यमी	27. जीव	28. खंजाब

उदाहरण कुंडली में उपस्थित ताजिक योग

ग्रह	राशि	अंश	कला
लग्न	4	02	50
सूर्य	3	14	45
चंद्र	6	00	20
मंगल	4	11	51
बुध	2	27	36
गुरु	6	16	00
शुक्र	2	21	43
शनि	3	20	04
राहु	11	02	26
केतु	5	02	26

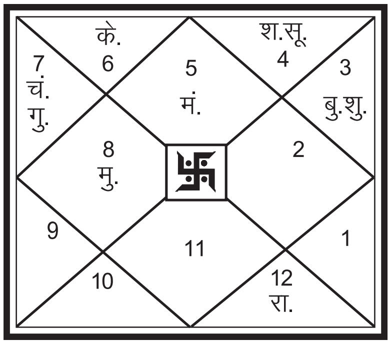

वर्ष कुंडली
1.8.2006, मंगलवार
वर्ष प्रवेश : 07.11, दिल्ली

योग का नाम	योग कारक ग्रह	कारण
1. इत्थशाल योग	(i) सूर्य–गुरु (ii) सूर्य–शनि (iii) मंगल–गुरु (iv) गुरु–शनि	सभी जोड़े ग्रह अपने दीप्तांश में आपस में दृष्ट हैं तथा तीव्र गति ग्रह मंद गति वाले ग्रहों से पीछे हैं।
2. ईशराफ योग	(i) बुध–शुक्र (ii) शुक्र–गुरु	दोनों ग्रहों के जोड़े अपने दीप्तांशों तथा परस्पर ताजिक दृष्टि में है किंतु तीव्र गति ग्रह मंद गति वाले ग्रह से आगे हैं।
3. मणऊ योग	(i) सूर्य–गुरु (ii) सूर्य–शनि	दो ग्रह इत्थशाल योग में तो है किंतु पापी ग्रह शनि की युति सूर्य के साथ तथा शत्रु दृष्टि सूर्य तथा गुरु दोनों पर है।
4. रद्द योग	(i) सूर्य–गुरु (ii) सूर्य–शनि (iii) मंगल–गुरु	सभी जोड़े ग्रह अपने इत्थशाल में तो हैं परंतु उनमें से एक ग्रह पीड़ित है। सूर्य 12 वें भाव में शनि से युत है, गुरु शनि की शत्रु दृष्टि में है, शनि स्वयं अस्त है।

निष्कर्ष : वर्ष कुंडली में चार इत्थशाल योग बनते हैं जिनमें वर्ष लग्नेश सूर्य व जन्म लग्नेश शनि तथा वर्षेश गुरु भी सम्मिलित हैं किंतु साथ ही कई अशुभ योगों के कारण जातक इत्थशाल के शुभ फलों से वंचित रहेगा।

अभ्यास प्रश्न

1. ताजिक योगों में दीप्तांशों का क्या महत्व है? योग बनाने वाले ग्रहों के दीप्तांशों की गणना किस प्रकार की जाती है? सूर्य व शनि तथा चंद्रमा व शुक्र ग्रहों के उदाहरण सहित समझाएं।

2. किन्हीं मुख्य दस ताजिक योगों के नाम बताएं तथा उनमें से किसी दो का विस्तृत विवरण उदाहरण सहित दें।

3. ताजिक के कोई पांच शुभ योगों का वर्णन उदाहरण के साथ लिखें।

4. ताजिक में इत्थशाल योग का क्या महत्व है? पूर्ण, वर्तमान तथा भविष्य इत्थशाल योगों की क्या आवश्यक शर्तें हैं, उदाहरण सहित विस्तार से लिखें।

5. कम्बूल योग कैसे बनता है। उदाहरण सहित लिखें। किन कारणों से यह योग निर्बल हो जाता है? गैरी कम्बूल योग की क्या विशेषताएं हैं ? क्या यह अशुभ योग है? दोनों में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करें।

6. इन्दुवार, इशराफ, खल्लासर तथा रद्द ताजिक योगों की उत्पति किस प्रकार होती है? शुभ योगों पर इनका क्या प्रभाव पड़ता है? दुर्रुफ तथा चंद्र दुर्रुफ योग कैसे बनते हैं तथा इनका क्या प्रभाव पड़ता है।

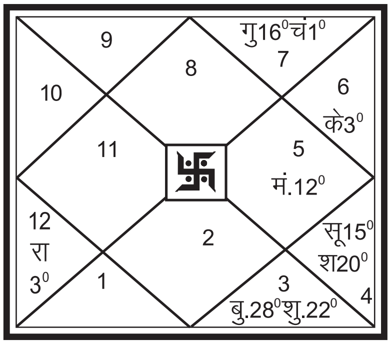

7. दी गई वर्ष कुंडली में कितने इत्थशाल योग बन रहे हैं, कौन से ग्रहों के मध्य, कारण सहित लिखें। क्या जातक को इन योगों का पूर्ण फल प्राप्त होगा ?

8. दी गई वर्ष कुंडली में कितने प्रकार के अशुभ योगों की उत्पत्ति हो रही है? कौन से ग्रहों के मध्य शुभ इत्थशाल योग बन रहा है?

9. दी गई कुंडली में कोई तीन शुभ व तीन अशुभ योगों की उत्पत्ति कारण सहित बताएं।

10. दी गई कुंडली में बनने वाले किन्हीं पांच योगों का कारण सहित विवरण दें। निष्कर्ष स्वरूप जातक को इस वर्ष कैसे फल मिलेंगे?

11. सहम

यह ताजिक ज्योतिष का एक विशेष अवयव है। फारसी में सहम का अर्थ है तीन। तीन रेखांशों /भोगांशों को आपस में घटा जोड़ करके एक चौथा भोगांश प्राप्त किया जाता है जिसे सहम कहते हैं। यह राशि एक संवेदनशील अवयव है जो किसी विशेष विषय पर प्रकाश डालता है। वर्ष कुंडली में आवश्यकता अनुसार सहम विशेष को अंकित कर उसकी भाव स्थिति, भाव तथा भावेश पर अन्य शुभाशुभ ग्रहों की युति/दृष्टि के आधार पर फल कथन किया जाता है। सहम की विशेषता ये है कि भाव के अनेक कारकत्वों में से यह किसी एक के ऊपर ही प्रकाश डालता है।

भिन्न ताजिक ग्रंथों में सहमों की संख्या का भिन्न उल्लेख मिलता है। आचार्य नीलकण्ठ ने 50, आचार्य वेकंटेश ने 48 तथा आचार्य केशव ने 25 सहमों को प्रधानता दी है।

सहम निकालने की प्रक्रिया :

शोध्य : जिस ग्रह/भाव को घटाया जाए व शोध्य होता है।

शोधक : जिस ग्रह/भाव में से शोध्य को घटाया जाए वह शोधक है।

क्षेपक : घटाने की क्रिया के पश्चात् जिस ग्रह/भाव को जोड़ा जाए उसे क्षेपक कहते हैं।

विशेष संस्कार : यदि क्षेपक शोध्य तथा शोधक के मध्य वर्ष कुंडली में स्थित न हो तो उक्त सहम में एक राशि या 30^0 जोड़कर सहम स्पष्ट निकाला जाता है। यह शुद्धि/संस्कार सभी सहमों में समान रूप से लागू होता है। एक राशि जोड़ने को सैकता भी कहा जाता है।

वर्ष प्रवेश समय दिन/रात्रि: वर्ष प्रवेश समय के अनुसार सहम निकालने के सूत्र दिन व रात्रि के भिन्न होते हैं। दिन या रात्रि का विचार सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय पर आधारित होता है। दिन के सूत्र के शोधक व शोध्य रात्रि सूत्र में विपरीत कर दिए जाते हैं।

विभिन्न सहमों के सूत्र : वर्ष प्रवेश जब **दिन** में हो ।

1. पुण्य सहम : चंद्र (–) सूर्य (+) लग्न (रात्रि समय हो तो : सूर्य(–)चंद्र(+)लग्न)
2. विद्या : सूर्य (–) चंद्र (+) लग्न
3. यश (बल/देह) : गुरु (–) पुण्य (+) लग्न
4. मित्र : गुरु (–) पुण्य (+) शुक्र
5. महात्म्य : पुण्य (–) मंगल (+) लग्न
6. आशा : शनि (–) शुक्र (+) लग्न
7. सामर्थ्य : मंगल (–) लग्नेश (+) लग्न
   (यदि लग्नेश मंगल हो तो : गुरु (–) मंगल (+) लग्न)

8. भ्रातृ	:	गुरु (–) शनि (+) लग्न (दिन व रात्रि दोनों के लिए)
9. गौरव	:	गुरु (–) चंद्र (+) सूर्य
10. पितृ/तात	:	शनि (–) सूर्य (+) लग्न
11. मातृ/अम्बु	:	चंद्र (–) शुक्र (+) लग्न
12. पुत्र	:	गुरु (–) चंद्र (+) लग्न (रात्रि में भी)
13. जीव/उपाय	:	शनि (–) गुरु (+) लग्न
14. कर्म	:	मंगल (–) बुध (+) लग्न
15. रोग	:	लग्न (–) चंद्र (+) लग्न (रात्रि में भी)
16. कलि (कलह)	:	गुरु (–) मंगल (+) लग्न
17. शास्त्र (ज्ञान)	:	गुरु (–) शनि (+) बुध
18. बंधु	:	बुध (–) चंद्र (+) लग्न (रात्रि के लिए भी)
19. मृत्यु	:	अष्टम भाव (–) चंद्र (+) लग्न (रात्रि में भी)
20. पर देश/देशांतर	:	नवम भाव (–) नवमेश (+) लग्न (रात्रि में भी)
21. लाभ/धन	:	एकादश भाव (–) एकादशेश (+) लग्न (रात्रि में भी)
22. परदारा (adultery)	:	शुक्र (–) सूर्य (+) लग्न (रात्रि में भी)
23. वाणिज्य/वणिक/बन्दक	:	चंद्र (–) बुध (+) लग्न (रात्रि में भी)
24. कार्य सिद्धि	:	शनि (–) सूर्य (+) सूर्य राशीश
रात्रि समय	:	शनि (–) चंद्र (+) चंद्र राशीश
25. विवाह	:	शुक्र (–) शनि (+) लग्न (रात्रि में भी)
26. संताप	:	शनि (–) चंद्र (+) षष्ठ भाव (रात्रि में भी)
27. श्रद्धा	:	शुक्र (–) मंगल (+) लग्न (रात्रि में भी)
28. प्रीति	:	विद्या (–) पुण्य (+) लग्न (रात्रि में भी)
29. जाड्य (मूर्खता)	:	मंगल (–) शनि (+) बुध
30. शत्रु	:	मंगल (–) शनि (+) लग्न
31. दरिद्रता	:	पुण्य (–) बुध (+) बुध
32. बंधन	:	पुण्य (–) शनि (+) लग्न
33. अपमृत्यु	:	अष्टम भाव (–) मंगल (+) लग्न (रात्रि में भी)
34. जल पत्तन	:	कर्क 15^0 (–) शनि (+) लग्न
35. कन्या	:	शुक्र (–) चंद्र (+) लग्न (रात्रि में भी)
36. ऋण	:	शनि (–) शुक्र (+) लग्न (रात्रि में भी)

37. गज / वाहन : चंद्र (–) गुरु (+) लग्न (रात्रि में भी)
38. निधि (आकस्मिक) : वर्ष लग्न (–) चतुर्थेश (+) लग्न (रात्रि में भी)
39. प्रसव / प्रसूति : गुरु (–) बुध (+) लग्न
40. मन्मथ / काम : चंद्र (–) लग्नेश (+) लग्न
41. गुरु : सूर्य (–) चंद्र (+) लग्न
42. राजा / राज्य : शनि (–) सूर्य (+) लग्न
43. क्षमा : गुरु (–) मंगल (+) लग्न
44. गुरुता : मेष 10^0 (–) सूर्य (+) लग्न
रात्रि में : वृष 3^0 (–) चंद्र (+) लग्न (रात्रि में)
45. अर्थ : द्वितीय भाव (–) द्वितीयेश (+) लग्न (रात्रि में भी)
46. व्यापार : मंगल (–) बुध (+) लग्न (रात्रि में भी)
47. अन्य कर्म : चंद्र (–) शनि (+) लग्न
48. शौर्य : पुण्य (–) मंगल (+) लग्न
49. कृषि : मंगल (–) शनि (+) लग्न (रात्रि में भी)
50. अश्व : पुण्य (–) सूर्य + एकादश भाव

वर्ष प्रवेश रात्रि में हो तो :

रात्रि समय के लिए दूसरे अवयव में से पहले को घटाएं अर्थात् दिन के शोधक व शोध्य को विपरीत कर लें, शोध्य अब शोधक बन जाएगा तथा शोधक शोध्य। जहां दिन व रात्रि के सूत्र समान हैं वहां पहले ही उल्लेख कर दिया गया है। कुछ सहमों के लिए भाव स्पष्ट करने की भी आवश्यकता पड़ती है।

उदाहरण कुंडली में कुछ प्रमुख सहमों की गणना :

	राशि	अंश	कला
लग्न	4	02	50
सूर्य	3	14	45
चंद्र	6	00	20
मंगल	4	11	51
बुध	2	27	36
गुरु	6	16	00
शुक्र	2	21	43
शनि	3	20	04
राहु	11	02	26
केतु	5	02	26

वर्ष कुंडली
1.8.2006, 07.11 दिन, दिल्ली

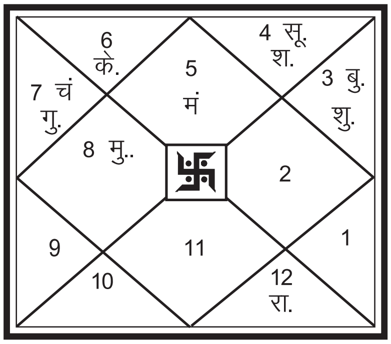

1. पुण्य सहम = चंद्र (–) सूर्य (+) लग्न

	6–00–20 (शोधक)	
(–)	3–14–45 (शोध्य)	• क्योंकि शोध्य तथा शोधक के मध्य क्षेपक (लग्न) स्थिति है अतः संस्कार या सैकता कर एक राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी।
	2–15–35	
(+)	4–02–50 (क्षेपक)	
	6–18–25	

अर्थात् तुला 18^0–25′, स्वामी शुक्र

2. विद्या सहम = सूर्य (–) चंद्र (+) लग्न

	3–14–45	• क्योंकि चंद्र (शोध्य) से सूर्य (शोधक) के मध्य लग्न (क्षेपक) नहीं पड़ता अतः संस्कार/सैकता करके एक राशि जोड़ने की आवश्यकता पड़ी।
(–)	6–00–20	
	9–14–25	
(+)	4–02–50	
	1–17–15	
	1–00–00	
	2–17–15	

अर्थात् मिथुन 17^0–15′, स्वामी बुध

3. यश सहम= गुरु (–) पुण्य (+) लग्न

	6–16–00	(यद्यपि पुण्य तथा गुरु एक ही राशि में स्थित हैं, परंतु पुण्य के अंश अधिक होने के कारण लग्न पुण्य तथा गुरु के मध्य ही पड़ता है, अतः संस्कार की कोई आवश्यकता नहीं)
(–)	6–18–25	
	11–27–35	
(+)	4–02–50	
	4–00–25	

अर्थात् सिंह 00^0–25′, स्वामी सूर्य

4. मित्र सहम = गुरु (–) पुण्य (+) शुक्र

	6–16–00	(यहां भी पुण्य तथा गुरु के मध्य शुक्र स्थित होने से संस्कार की आवश्यकता नहीं)
(–)	6–18–25	
	11–27–35	
(+)	2–21–43	
	2–19–18	

अर्थात् मिथुन 19^0–18′, स्वामी बुध

5. कार्य सिद्धि सहम = शनि (–) सूर्य (+) सूर्य राशीश

	3–20–04	सूर्य तथा शनि एक ही राशि में हैं किंतु शनि के अंश सूर्य से अधिक
(–)	3–14–45	होने के कारण सूर्य राशीश यानी चंद्रमा, सूर्य व शनि के मध्य नहीं पड़ता।
	0–5–19	अतः एक राशि जोड़कर संस्कार किया।
(+)	6–00–20 (चं)	
	6–05–39	
(+)	1–00–00	
	7–05–39	

अर्थात् वृश्चिक 5^0–39′, स्वामी मंगल

इसी प्रकार अन्य कोई भी सहम निकाला जा सकता है।

सामान्य निर्देश :

- सहमों का नामकरण तर्क संगत है इसलिए तर्कसंगत सहम का ही विचार करना चाहिए जैसे विवाहित व्यक्ति के लिए विवाह सहम देखना व्यर्थ है। मृत्यु सहम या रोग सहम तभी देखने चाहिए जब जन्म कुंडली की मारक दशांतर्दशा चल रही हो।
- क्योंकि वर्ष कुंडली जन्म कुंडली का ही विस्तार है इसलिए सहमों का विचार जन्म व वर्ष दोनों कुंडलियों से करना अभीष्ट होगा। जब किसी सहम की स्थिति दोनों कुंडलियों में बलवान होगी तभी सहम पूर्ण फलित होगा। एक में शुभ व दूसरे में अशुभ स्थिति हो तो परिणाम भी मिश्रित ही होंगे।
- सहम का विचार किसी भी अन्य ग्रह अथवा मुन्था के समान ही है, इसके अलग से कोई विशेष नियम नहीं है।
- सहम जब अपने स्वामी से युत/दृष्ट हो, शुभ स्थान में, या शुभ ग्रहों के मध्य स्थित हो तो बलवान माना जाता है।
- सहम यदि वर्षेश, मुन्था/मुन्थेश या वर्ष लग्नेश के साथ स्थित हो तो बलवान होकर अवश्य शुभ फल देता है।
- यदि सहम का स्वामी कार्येश अथवा शुभ ग्रहों से इत्थशाल करे तो उस वर्ष अवश्य फल देता है। यदि सहम का संबंध कारक ग्रहों से तथा शुभ हो तो भी फलदायक होता है जैसे पुत्र सहम का गुरु से, यश सहम का सूर्य से, सामर्थ्य सहम का मंगल, मित्र सहम का बुध से आदि।
- फल विचार भी तर्क संगत होना चाहिए। शुभ सहम जब शुभ प्रभाव में तथा बलवान हों तो शुभ फल देते हैं, जब अशुभ प्रभाव में या बलहीन हों तो निष्फल हो जाते हैं। इसी प्रकार अशुभ सहम पाप प्रभाव में होकर अशुभ फल देते हैं तथा शुभ प्रभाव में होने पर अशुभता से छुटकारा दिलाते हैं। जैसे ऋण सहम यदि अशुभ प्रभाव में हो तो ऋण वृद्धि होगी किंतु शुभ प्रभाव में हो तो ऋण से छुटकारा दिलाएगा। अतः ज्योतिषी से अपेक्षित है कि वह फल कथन में अपनी बुद्धि व ज्ञान का सही उपयोग करें। इसी प्रकार जब कई कारण या कई प्रकार से विचार करने पर एक फल की ओर इशारा होता

हो तभी फल कथन सार्थक होता है।

- कुछ सहमों की गणना में किसी विशेष भाव मध्य की आवश्यकता पड़ती है जैसे धन सहम, लाभ सहम, संताप सहम आदि। अतः सहम विचार से पहले भाव चलित कुंडली बना लेना आवश्यक होगा।
- सहमों का राजा पुण्य सहम कहलाता है। पश्चिमी ज्योतिष में भी इसका काफी महत्व है जहां ये Pars Fortuna के नाम से जाना जाता है। इसलिए पुण्य सहम को ताजिक के अन्य विशेष अवयवों के समान, अर्थात् वर्षेश, मुन्था, मुन्थेश, वर्ष लग्नेश के समान ही महत्व देना चाहिए।
- ताजिक नीलकंठी के अनुसार जो सहम राशि का स्वामी अपने उच्च, स्वगृह, स्वोच्च, स्वहद्दा तथा स्वमुसल्लह (स्वनवांश) में रहता हुआ लग्न को देखता हो तो वह बलवान माना जाएगा। यदि सहमेश की सहम राशि पर दृष्टि हो, सहम शुभ प्रभाव में हो तो सहम का फल सामर्थ्य बढ़ जाता है।
- जो सहम वर्ष लग्न के अष्टमेश से युत/दृष्ट हो या अष्टमेश व पापी ग्रहों से परस्पर इत्थशाल करता हो तो वह अपने नाम के अनुरूप फल प्रदान नहीं कर पाता।
- जन्मकुंडली में सबसे पहले सभी सहमों के बलाबल का विचार करें उसके पश्चात जिन सहमों की फल प्राप्ति संभव दिखे, उन्हीं को विचार कर वर्ष कुंडली में स्थापित करें। जिस सहम का स्वामी बलहीन हो, उसे वर्ष में कभी भी न विचारें।

विभिन्न सहमों के फल

- यदि पुण्य सहम सबल हो, सहमेश व शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो, तो धर्म व धन दोनों का आगम होता है। यदि वर्ष लग्न से त्रिक भाव में पुण्य सहम हो तो धर्म, भाग्य व यश की हानि होती है। किंतु ऐसे में यदि सहम शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वर्ष के पूर्वार्ध में अशुभ तथा उत्तरार्ध में शुभ फल प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार जब भी सहम पर शुभ व अशुभ प्रभाव एक साथ पड़ते हों तो पहले अशुभ तथा बाद में शुभ फल मिलते हैं।
- उपरोक्त प्रकार से ही जन्म काल तथा वर्षकाल के सभी सहमों का विचार करना चाहिए। किंतु अशुभ सहम जैसे रोग, शत्रु, कलि तथा मृत्यु सहम का फल विपरीत रीति से विचारना चाहिए। ये सहम जितना बलवान होंगे उतना ही उस सहम फल की हानि करेंगे तथा जितने निर्बल स्थान में होंगे उतना ही उस सहम की वृद्धि करेंगे। तात्पर्य यह है कि अशुभ सहमों पर शुभ प्रभाव होने पर उनके अशुभ फलों में कमी आती है तथा अशुभ प्रभाव बढ़ने से उनके फल और भी हानिकर हो जाते हैं।
- कार्य सिद्धि सहम शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो तथा उनके साथ इत्थशाल करता हो तो वह संग्राम में विजयदायक, शत्रुनाशक तथा उत्कर्षकारी होता है। यदि उस पर शुभ–अशुभ दोनों प्रभाव हों तो विजय बड़ी कठिनाई से होती है।
- यदि कलि सहम पापी ग्रहों से इत्थशाल करे तो लड़ाई–झगड़े में मृत्यु की संभावना रहती है, यदि शुभ ग्रहों से युक्त या अवलोकित हो तो लड़ाई में विजय प्राप्त होती है किंतु यदि शुभाशुभ दोनों

प्रभाव हों तो कलह और विवाद होता है।

- यदि विवाह सहम अपने स्वामी तथा शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो अथवा मुत्थशिल (इत्थशाल) योग बनाता हो तो विवाह कार्य निर्विघ्न संपन्न हो जाता है। यदि शुभ–अशुभ दोनों प्रभाव पड़े तो विवाह कार्य बड़ी मुश्किल से पूरा होता है। किंतु यदि विवाह सहम पापग्रहों से युत/दृष्ट हो और वर्ष लग्न के अष्टमेश के साथ इत्थशाल करता हो तो उस वर्ष विवाह नहीं होता।
- इसी प्रकार यश सहम शुभ प्रभाव में हो तो यश वृद्धि, युद्ध में विजय, विविध प्रकार के सुख साधन, वाहनादि की प्राप्ति होती है। किंतु पाप प्रभाव में होने पर बहुत समय का उपार्जित यश नष्ट हो जाता है। यश सहमेश की अष्टम में स्थिति, पापी ग्रह के साथ ईशराफ योग अथवा उसके अस्त होने पर कुल की कीर्ति नष्ट हो जाती है।
- आशा सहमेश यदि त्रिक के अतिरिक्त किसी भाव में स्थित हो, शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो तो इच्छानुसार धन, संपत्ति, वाहनादि प्राप्त होते हैं।
- यदि रोग सहम का स्वामी किसी पापी ग्रह से युत/दृष्ट हो तो रोग की उत्पत्ति होती है, यदि इत्थशाल हो तो मृत्यु/मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। यदि सहमेश निर्बल हो तो बड़े कष्ट से मृत्यु होती है। यदि रोग सहमेश की शुभ भाव में स्थिति हो, शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो तो रोग नहीं होता, यदि शुभाशुभ दोनों प्रकार के प्रभाव हों तो रोग का भय रहता है।
- यदि पितृ सहम शुभ प्रभाव में हो तो जातक अपने पिता को धन, मान व सुख प्रदान करता है। यदि पाप प्रभाव में हो तो पिता को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। यदि पितृ सहमेश चर राशि (1, 4, 7, 10) में स्थित हो, पाप प्रभाव में हो तो पिता की मृत्यु परदेश अथवा घर से दूर स्थान में होती है। यदि पितृ सहम का स्वामी पूर्ण बली हो तो राज्य से सम्मान मिलता है, यश वृद्धि होती है। यदि पितृ सहम तथा पुत्र सहम दोनों में परस्पर इत्थशाल हो, पापी ग्रहों का प्रभाव भी हो तो पहले पिता को रोग तथा बाद में सुख मिलता है।
- यदि बंधन सहम अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो तो कारावास नहीं होता। यदि उस पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो तथा सहमेश किसी पाप ग्रह के साथ मुत्थशिल योग कर रहा हो तो कारागार, बंधन कष्ट अवश्य होता है।
- गौरव सहम/सहमेश शुभ प्रभाव में हों तो धन, यश, राज्य सम्मान का सुख मिले, यदि पाप प्रभाव में हो तो प्राप्त अधिकारों का नाश हो। यदि उस पर शुभ–अशुभ दोनों प्रभाव हों तो पहले यश, धन की हानि तथा बाद में प्राप्ति का योग बनता है।
- यदि कर्म सहम व कर्म भाव के स्वामी शुभ प्रभाव में हों तो धन, संपत्ति, वाहनादि की प्राप्ति होती है, यदि वे दग्ध (अस्त) या वक्री हों तो सभी कार्यों में असफलता मिलती है विशेष रूप से यदि वे शनि से युत/दृष्ट हों। यदि राज सहम तथा कर्म सहम के स्वामी किसी पापी ग्रह के साथ ईशराफ योग में हों तो राज्य तथा कर्म दोनों के नाशकारक होते हैं।

सहम फल का काल निर्णय : प्रायः सहम संबंधी फल सहमेश की मुद्दा दशा में अथवा उस ग्रह की मुद्दा दशा में मिलता है जिसका सहमेश के साथ इत्थशाल हो। ताजिक नीलकंठी के अनुसार जिस सहम के शुभाशुभ दिवस जानने की इच्छा हो, उस सहम के राशि स्वामी को सहम में से घटाएं। जो अंश शेष बचें, उसमें सहम राशि के 'उदयांश' से गुणा कर 300 से भाग दें। जो अंश आएं वही सहम फल प्राप्ति की दिन संख्या होती है। उदाहरणस्वरूप यदि

		रा.	अं.	क.	वि.
पुण्य सहम	=	$5^{\text{रा}}$	5^0	25'	1"
सहमेश बुध	= (-)	$3^{\text{रा}}$	6^0	14'	12"
घटाने पर शेष	=	$1^{\text{रा}}$	29^0	10'	49"
अथवा	=	$0^{\text{रा}}$	59^0	10'	49"

इसे कन्या राशि के = $(59^0 10' 49'') \times \frac{335}{300} = \frac{59.18 \times 335}{300}$

उदयांश 335 से गुणा व 300 से भाग करने पर = $\frac{19825}{300}$ = 66 दिन

अर्थात् वर्ष प्रवेश से 66 दिन पश्चात् पुण्य सहम का फल मिलेगा।

उद्यांश : एक अहोरात्र या 24 घंटे में पूर्व क्षितिज पर एक एक करके 12 राशियां उदित होती हैं। इसलिए औसतन एक राशि लगभग 2 घंटे लेती है।

2 घंटे = 5 घटी = 5X 60 = 300 विघटी

300 विघटी के काल को उद्यांश कहा जाता है। वास्तव में राशि का उदय काल समान न होकर अलग–अलग राशियों के लिए अलग–अलग होता है। यह 300 विघटी से अधिक भी हो सकता है तथा कम भी। यह स्थान के अक्षांश पर निर्भर करता है।

यदि औसत उदयांश 300 विघटी को ही ले लिया जाये तो 300 विघटी से भाग करने की आवश्यकता भी समाप्त हो जाती है। तब हमें केवल सहम के अंशाों में से सहमेश के अंश ही घटाने होंगे तथा जो अंश बचेंगे वर्ष प्रवेश के उतने दिन बाद सहम फल प्राप्त होगा।

उपरोक्त उदाहरण में 59^0 10' 49" बचते हैं अर्थात् 59 दिन पश्चात पुण्य सहम का फल प्राप्त होगा। पहले ये समय 66 दिन आया था।

अन्य सुझाव

- श्री बी. वी. रमण के अनुसार सहम तथा एकादशेश के बीच अंशों में अंतर, सहम फल के दिनों की संख्या इंगित करता है।
- एक अन्य विद्वान के अनुसार वर्ष लग्न तथा सहम के बीच अंशात्मक अंतर सहम फल के दिनों को दर्शाता है।

- सहम के फल के समय के संबंध में कई विचार प्रचलित हैं। सामान्यतः सहमेश की मुद्दा दशा में उसकी स्थिति के अनुरूप शुभाशुभ फल प्राप्त होते हैं। जैसे शुभ प्रभावरत पुत्र सहम के स्वामी की दशा में संतान प्राप्ति हो सकती है।
- एक अन्य विचार के अनुसार जो सहम शुभ स्थिति में हो वह वर्ष के उत्तरार्द्ध में शुभ फल देता है। इसी प्रकार पाप प्रभावरत सहम वर्ष के पूर्वार्द्ध में अपना अशुभ फल देता है।
- एक अन्य मत के अनुसार सहम व उसके स्वामी का राश्यादिक अंतर निकाल कर, उसमें राश्यादिक सूर्य को जोड़ने पर जो राशि प्राप्त हो, उस राशि में सूर्य की संक्रांति होने पर सहम फलित होगा।

  अतः अच्छा यही है कि व्यवहार में सभी सूत्रों को परखने के बाद ही निर्णय किया जाये कौन सा सूत्र अधिक सटीक उतरता है।

अभ्यास प्रश्न

1. सहम से आप क्या समझते हैं? किन्हीं दस सहमों के नाम लिखें। पुण्य सहम तथा यश सहम किस प्रकार बनते हैं, उदाहरण देकर समझाएं।

2. वर्ष प्रवेश समय का सहमों की गणना में क्या प्रभाव पड़ता है? शोध्य, शोधक तथा क्षेपक किसे कहते हैं तथा इनका उपयोग सहम निकालने की प्रक्रिया में किस प्रकार किया जाता है ?

3. सैकता अथवा शुद्धि/संस्कार का सहम प्रक्रिया में कब तथा किस प्रकार प्रयोग किया जाता है? वर्ष प्रवेश रात्रि का होने पर शोधक तथा शोध्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? पुण्य सहम का उदाहरण देकर समझाएं।

4. सहम फल विचार करते समय आप किन विशेष नियमों को ध्यान में रखना चाहेंगे? क्या एक वर्ष कुंडली में सभी प्रकार के सहमों का विचार करना चाहिए? यदि नहीं तो कारण लिखें तथा उदाहरण सहित व्याख्या करें।

7.

लग्न	राशि	अंश	कला
लग्न	1	02	50
सूर्य	3	14	45
चंद्र	6	00	20
मंगल	4	11	51
बुध	2	27	36
गुरु	6	16	00
शुक्र	2	21	43
शनि	3	20	04

दी गई कुंडली में निम्न सहमों की गणना करें :–

(i) पुण्य
(ii) विद्या
(iii) यश
(iv) मित्र
(v) कार्य सिद्धि

वर्ष कुंडली
वर्ष प्रवेश दिन का

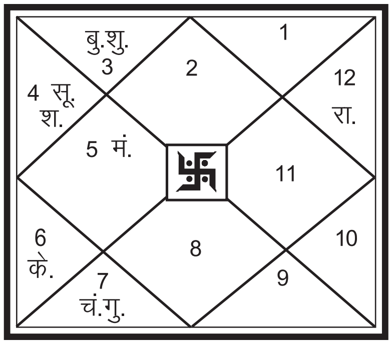

8. दी गई कुंडली में निम्न सहमों की गणना करें :–

(i) आशा
(ii) गौरव
(iii) रोग
(iv) विवाह
(v) बंधन

12. त्रिपताकी चक्र

ज्योतिष में तीन प्रकार के वेध चक्र प्रचलित हैं जिनमें से दो तो पाराशरीय ज्योतिष से संबंधित हैं तथा तीसरा वेध चक्र जो त्रिपताकी अथवा त्रिशलाखा के नाम से जाना जाता है, ताजिक ज्योतिष का अंग है।

1. सप्तशलाखा वेध चक्र : यह नक्षत्रों पर आधारित है तथा पाराशरीय ज्योतिष में ग्रहों तथा भावों (केवल प्रथम तथा दशम भाव) पर अन्य ग्रहों का वेध देखने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।
2. पंचशलाखा वेध चक्र : यह भी नक्षत्रों पर आधारित है तथा पाराशरीय मुहूर्त्त ज्योतिष में इसका प्रयोग किया जाता है।
3. त्रिशलाखा/त्रिपताका/त्रिपताकी वेध चक्र : यह राशियों पर आधारित है तथा ताजिक ज्योतिष में चंद्रमा पर अन्य ग्रहों का शुभा शुभ वेध देखने में इसका प्रयोग होता है।

वैदिक ज्योतिष में दृष्टि प्रभाव के लिए पूर्ण दृष्टियों को ही अधिक महत्व दिया गया है। अतः ग्रहों का प्रभाव सीमित कोणों पर ही उपलब्ध हो पाता है जबकि अन्य कोणों पर भी उनका प्रभाव पड़ता है। संभवतः इस कमी को वेध चक्रों के द्वारा पूरा किया गया है। इस प्रकार हम वेध को भी दृष्टि के समकक्ष मान सकते हैं।

त्रिपताकी चक्र की रचना :

इसके लिए तीन खड़ी व तीन आड़ी समानांतर रेखाएं खींची जाती हैं जो एक दूसरे को 90^0 के कोण पर काटती हैं। चित्र के अनुसार रेखाओं के सिरों को मिलाने पर 12 बिंदु प्राप्त हो जाते हैं। ऊपर खड़ी रेखाओं को थोड़ा बढ़ाकर उन पर एक–एक पताका बना दी जाती है। तीन पताकाओं के कारण इसे त्रिपताकी चक्र कहते हैं।

उदाहरण कुंडली का त्रिपताकी वेध चक्र

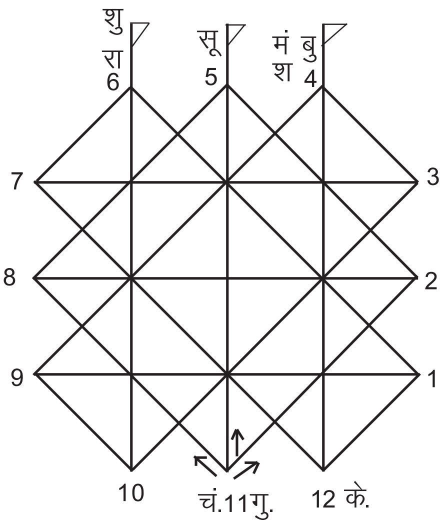

लग्न :

तीन रेखाओं के बीच वाली रेखा पर वर्ष लग्न की राशि अंकित करके अन्य राशियां घड़ी की सूइयों की चाल की विपरीत दिशा में अंकित कर दें। इस प्रकार 12 बिंदुओं पर 12 राशियां अंकित हो जायेंगी।

ग्रहों का अंकन या स्थापना के नियम :

त्रिपताकी चक्र में ग्रहों की स्थापना वर्ष कुंडली के अनुसार नहीं की जाती बल्कि जन्म कुंडली के ग्रहों की स्थापना निम्नलिखित नियमों के अनुसार की जाती है :–

चंद्रमा = $\frac{\text{गताब्ध} + 1}{9}$

शेष के अनुसार जन्म कुंडली की राशि से उतना आगे गिनकर जो राशि आये उसमें चंद्रमा लिखें

सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र व शनि = गताब्ध +1 / 4 = शेष तुल्य जन्म कुंडली की राशि से आगे गिनकर लिखें।

मंगल, राहु, केतु = गताब्ध +1 / 6 = शेष के अनुसार मंगल को आगे गिनकर तथा राहु, केतु को पीछे की ओर गिनकर लिखें।

(कुछ विद्वान वक्री ग्रह को भी पीछे की ओर अग्रेसित करके लिखने के पक्ष में हैं।)

उदाहरण जन्म कुंडली

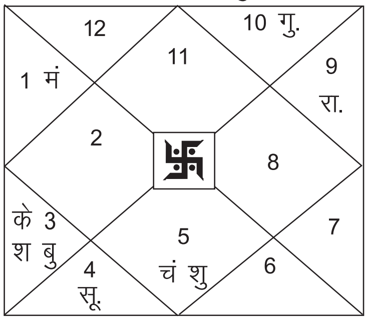

गताब्ध = 2006–1973
= 33

चंद्र = 33+1 / 9 = शेष 7

मं, रा, के = 33+1 / 6 = शेष 4

सू. बु. गु. शु. श = 33+1 / 4 = शेष 2

शेष अंक के अनुसार ग्रहों की जन्म कुंडली की राशि से गिनने पर त्रिपताकी चक्र में ग्रहों की राशियां निम्न आती हैं।

चं=11, सू=5, मं=4, बु=4, गु=11,

शु=6, श=4, रा=6, के=12

उपरोक्त अनुसार त्रिपताकी वेध चक्र में ग्रहों को अंकित किया गया है।

चंद्रमा पर वेध :

त्रिपताकी चक्र में चंद्रमा 11 राशि में अंकित है, जहां से तीन ओर रेखाएं जाती हैं, एक छोर पर 2 राशि, दूसरे छोर पर 8 तथा तीसरे छोर पर 5 राशि अंकित हैं। चंद्रमा के साथ गुरु स्थित है तथा 5 राशि में सूर्य स्थित है, अन्य दो राशियों में कोई ग्रह नहीं है। अतः चंद्रमा पर सूर्य तथा गुरु का वेध है।

विभिन्न ग्रहों का चंद्र पर वेध का फल :

सूर्य : मन में चिंता, संताप, अस्थिरता, ज्वर, रक्त व पित्त विकार, अपव्यय तथा उस वर्ष कार्यों में असफलता होती है।

मंगल: शत्रु भय, रक्त विकार, रक्त चाप, चोट, दुर्घटना, शल्य चिकित्सा, मन में चिंता, व्याकुलता रहती है।

बुध : बुद्धि विकास, व्यापार से लाभ व धन प्राप्ति के साथ–साथ कुटुंब में क्लेश, शत्रु भय, स्नायु व त्वचा रोग भी संभव हैं।

गुरु : अनायास धन प्राप्ति, तीर्थ यात्रा, शुभ व मांगलिक कार्यों में धन का व्यय, संतान सुख, वाद–विवाद में विजय।

शुक्र : धन–लाभ, राज्य से लाभ, विद्या प्राप्ति, परीक्षा में सफलता, वाहन व अन्य सुख साधनों में वृद्धि, आलस्य, वात विकार आदि।

शनि : नीच प्रवृत्ति, नीच संगति, वायु व कफ विकार, क्लेश, स्वजनों द्वारा विश्वास घात, धन हानि, मानसिक कष्ट।

राहु : कीर्तिक्षय, कठिनाईयां, बाधा, दूषित विचार, असफलता, पतन, अनेक मानसिक व शारीरिक कष्ट, मतिभ्रम।

केतु : अपयश, दूषित विचार, मंदाग्नि व उदर विकार, मन में मलिनता, उद्विग्नता, चोट, दुर्घटना आदि।

उदाहरण कुंडली में त्रिपताकी चक्र के अनुसार चंद्रमा पर सूर्य का अशुभ तथा गुरु का शुभ वेध है अतः उपरोक्तानुसार शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल जातक को साथ–साथ मिलेंगे।

अभ्यास प्रश्न

1. त्रिपताकी अथवा त्रिशलाखा वेध चक्र का ताजिक ज्योतिश में मुख्य उपयोग किस ग्रह पर वेध देखने के लिए किया जाता है, ग्रहों की स्थापना किस प्रकार की जाती है।

2. त्रिपताकी चक्र में विभिन्न ग्रहों के वेध का प्रभाव चंद्रमा पर किस प्रकार के फल करता है? सभी ग्रहों का विस्तार से वर्णन करें।

13. समुद्र चक्र

वर्ष विचार में समुद्र चक्र का भी महत्व है। कुल मिलाकर वर्ष कैसा रहने वाला है इसका संक्षेप में विचार समुद्र चक्र से किया जाता है। जिस प्रकार जन्म कुंडली का संक्षेप में विचार कर फल कथन करना हो तो पाये का विचार किया जाता है जो जन्म कुंडली में चंद्रमा की भाव स्थिति पर निर्भर करता है। वर्ष

कुंडली में समुद्र चक्र में जन्म नक्षत्र की स्थिति से उसी प्रकार विचार करते हैं।

रचना : ऊपर दिये गये चित्र के अनुसार पर्वत, तीर व समुद्र के खाने बना लिए जाते हैं। यहां अभिजित समेत 28 नक्षत्र लिए जाते हैं। यहां अभिजित को 21–A क्रमांक दिया जा सकता है। समुद्र में तीन, पर्वत में दो तथा तीर के खाने में एक नक्षत्र लिखा जाता है। इस आधार पर खानों के स्थान छोटे–बड़े रखे जाते हैं।

नक्षत्र स्थापना नियम : वर्ष कुंडली के चंद्र स्पष्ट का नक्षत्र ज्ञात करके उस नक्षत्र को अथवा उसकी संख्या को ऊपर वाले समुद्र के खाने में पहले नक्षत्र के स्थान पर लिखें और उसी खाने में अगले दो नक्षत्र भी दाहिने ओर लिख दें। घड़ी के सुइयों की दिशा में (clock wise) तीर के खाने में अगला एक नक्षत्र, पर्वत के खाने में अगले दो नक्षत्र, फिर इस प्रकार क्रम से नक्षत्र लिखकर चक्र पूरा करें।

उदाहरण कुंडली का समुद्र चक्र : वर्ष कुंडली का चंद्रमा चित्रा नक्षत्र में है, जिसका क्रमांक 14 है। अतः 14, 15, 16 नक्षत्र संख्या ऊपर समुद्र के खाने में लिखी, जिसे समुद्र चक्र का लग्न भी कहा जा सकता है। तीर के खाने में अगला एक नक्षत्र तथा पर्वत के खाने में अगले दो नक्षत्र, समुद्र के खाने

में अगले तीन नक्षत्र घड़ी की सूईयों की दिशानुसार लिखते हुए चक्र पूरा करें।

समुद्र चक्र का फल : फल का विचार जन्म नक्षत्र की समुद्र चक्र में स्थिति के अनुसार किया जाता है।

- यदि जातक का जन्म नक्षत्र पर्वत पर आए तो वर्ष बहुत अच्छा होता है, हर कार्य में सफलता, परिवार में सुख शांति, व्यवसाय/नौकरी में लाभ/पदोन्नति तथा रुके कार्य संपन्न होते हैं।
- यदि जातक का जन्म नक्षत्र **तीर** पर आए तो भी वर्ष अच्छा व्यतीत होता है, पर्वत की अपेक्षा फलों में थोड़ी कमी होती है।
- यदि जातक का जन्म नक्षत्र **समुद्र** पर आए तो वर्ष में हर कार्य में बाधा, विलंब, घर–परिवार में अशांति, नौकरी, व्यवसाय में हानि होती है।

उदाहरण कुंडली का जन्म नक्षत्र मघा(10) तीर पर आने से जातक का वर्ष सुखपूर्वक बीतेगा।

अभ्यास प्रश्न

1. वर्षफल विचार में समुद्र चक्र का क्या महत्व है ? समुद्र चक्र में नक्षत्रों की स्थापना कैसे की जाती है ?
2. समुद्र चक्र में वर्ष नक्षत्र तथा जन्म नक्षत्र का उपयोग किस प्रकार किया जाता है? पर्वत, तीर अथवा समुद्र पर कौन से नक्षत्र से फल कथन किया जाता है तथा किस प्रकार के फल जातक को प्राप्त होते हैं ?
3. यदि वर्ष कुंडली का नक्षत्र मघा (क्रमांक –10) हो तो समुद्र चक्र बनाकर, जन्म नक्षत्र चित्रा (क्रमांक –14) के अनुसार फलकथन करें।

14. वर्ष फल विचार

यहां भाव के कारकत्व, भाव में विभिन्न ग्रहों की स्थिति का प्रभाव, भावेश की वर्ष कुंडली में स्थिति, मुन्था/मुन्थेश, वर्षेश से संबंध तथा उनकी अपनी स्थिति, अरिष्ट विचार तथा अरिष्ट भंग विचार, तथा भाव संबंधी विशेष विषय के बारे में चर्चा की जा रही है।

प्रथम भाव :

प्रथम या लग्न भाव से शारीरिक लक्षण, चारित्रिक विशेषताएं, स्वास्थ्य, आयु, रूप, वर्ण, जाति आदि का विचार किया जाता है।

लग्न लग्नेश द्वारा युत/दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रहों द्वारा युत/दृष्ट हो तो वर्ष में शरीर–सुख, यश–मान, हर्षोल्लास, मंगल उत्सव आदि शुभ फल प्राप्त होते हैं। प्रथम भाव में ग्रहों की स्थिति के शुभाशुभ फल प्राप्त होते हैं। प्रथम भाव में ग्रहों की स्थिति के शुभाशुभ फल निम्न प्रकार हैं :–

सूर्य : सिर, गले व आंखों के रोग, चिंता, घबराहट, विचारों में अस्थिरता, अतिरिक्त भ्रमण, यात्राएं आदि।

चंद्र : श्वास व कफ विकार, शुभ प्रभाव हो तो सुख–सुविधाओं, नृत्य, गायन, विलास, मनोरंजन कार्यों पर व्यय वृद्धि। अशुभ प्रभाव हों तो सभी कार्यों में बाधा व शारीरिक कष्ट।

मंगल : रक्त व पित्त विकार, चोट, दुर्घटना, राज्य भय, घर–परिवार में क्लेश, शत्रु बाधा, धन हानि।

बुध : अतिशुभ, मानसिक व शारीरिक सुख, नए व्यवसाय का शुभारंभ, विद्या प्राप्ति, मित्र वृद्धि, सामाजिक प्रतिष्ठा।

गुरु : परिवार सुख, ज्ञान, धर्म लाभ, मान प्रतिष्ठा, धन–संपत्ति, व्यवसाय वृद्धि, पदोन्नति, संतान सुख, उत्तम कार्य।

शुक्र : धन–वस्त्राभूषण, सुख–साधन, वाहन प्राप्ति, राज्यकृपा, मान–प्रतिष्ठा, जय, शत्रुनाश आदि शुभ फल।

शनि : शत्रु भय, शारीरिक व मानसिक पीड़ा, वात–रोग, मित्र व स्वजनों से शत्रुता किंतु स्वराशि या उच्च राशि का शनि संतान प्राप्ति भी कराता है।

राहु : राज्य व शत्रु भय, मान–सम्मान की हानि, मानसिक चिंता, मतिभ्रम, सिर व नेत्र रोग, अपव्यय, धन हानि।

केतु : चोर–चोरी का भय, अपमान, झगड़े, विवाद, स्वजनों से कष्ट, विरोध, शारीरिक कष्ट, निर्धनता।

अरिष्ट विचार :

- यदि जन्म लग्न तथा वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो वह द्विजन्म वर्ष कहलाता है तथा अनिष्टकारी रहता है।

- यदि लग्नेश अष्टम में या अष्टमेश लग्न में आ जाए तथा मंगल की युति/दृष्टि भी हो तो उस वर्ष चोट, दुर्घटना, शास्त्रााघात, चोरी, वाद–विवाद, भूमि–मकान के झगड़े अथवा हानि आदि अशुभ फल होते हैं।
- यदि लग्नेश सूर्य से तथा मुन्थेश शनि से युत/दृष्ट हो तो उस वर्ष कष्ट अधिक रहते हैं
- चंद्र व सूर्य दोनों ही त्रिक भाव में स्थित हो तो भी वर्ष कष्टकारी रहता है।
- यदि जन्म कुंडली के अष्टम भाव की राशि का वर्ष लग्न हो तो वर्ष में विशेष कष्ट भोगने पड़ते हैं।
- यदि वर्ष लग्नेश, वर्षेश व मुन्थेश सभी 4, 6, 8 या 12 भाव में आ जाए तथा पाप प्रभाव में भी हों तो उस वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। इसी प्रकार यदि वे नीच, अस्त या अन्य प्रकार से निर्बल हों तो भी ऐसा ही अशुभ फल होता है। यदि मारकेश की दशांतर्दशा हों, आयु खण्ड समाप्त हो रहा हो तो मृत्यु का भी योग संभव है।
- यदि सप्तम में पापी ग्रह तथा अष्टम में चंद्र या शुक्र हो तों भी मृत्यु तुल्य कष्ट संभव हैं।
- वर्ष लग्न में चंद्रमा तथा अष्टम में कोई पापी ग्रह हो तथा अशुभ प्रभाव में भी हो तो भी मृत्यु समान कष्ट संभव है। लग्न अथवा सप्तम का पाप कर्तरी योग में होना भी कष्टकारी है।
- वर्ष लग्नेश/वर्षेश का त्रिक भाव के स्वामियों से इत्थशाल होना भी अनिष्टकारी है।
- यदि अष्टमेश द्वितीय भाव में तथा द्वादशेश अष्टम भाव हो, लग्नेश/वर्षेश निर्बल हों तो विष से विशेष हानि, साथ ही यदि मंगल तथा सूर्य भी इस पाप प्रभाव में हों तो अग्नि/बिजली से गंभीर दुर्घअना संभव है।

'ताजिक मुक्तावली' के अनुसार मुन्था/मुन्थेश, वर्षेश, वर्ष लग्नेश की त्रिक भावों में स्थिति, नीच अस्त स्थिति, त्रिपताकी चक्र में चंद्रमा का पापी ग्रहों से वेध तथा अन्य कारणों से विशेष अवयवों का निर्बल होना आदि अनिष्टकारी वर्ष दर्शाते हैं। यदि इन अशुभताओं के साथ जन्म कुंडली की दशा/अंतर्दशा अशुभ ग्रहों की हो तो अनिष्ट फल निश्चित हैं।

अरिष्ट भंग विचार : अरिष्ट नाश के लिए विभिन्न स्थितियां निम्न प्रकार हो सकती हैं :–

- लग्नेश बलवान हो तथा केंद्र/त्रिकोण में स्थित हो
- शुभ ग्रह केंद्र/त्रिकोण में तथ पापी ग्रह 3 6, 11 भावों में हों।
- गुरु केंद्र/त्रिकोण में शुभ प्रभाव में हो।
- नवमेश व द्वितीयेश लग्न में बलवान व शुभ युत/दृष्ट हों।
- वर्ष लग्नेश, वर्षेश, मुन्थेश बलवान होकर केंद्र/त्रिकोण/द्वितीय/एकादश भाव में हों।
- त्रिराशिपति दशम में तथा दशमेश त्रिकोण में स्थित हो।
- विपरीत राज योग बनता हो, या अष्टमेश/षष्ठेश पापी ग्रह से युत होकर द्वादश भाव में स्थित हो अथवा शनि से युत/दृष्ट हो।

- वर्ष लग्नेश तथा चंद्रमा दोनों बलवान तथा पाप प्रभाव से मुक्त हों अथवा कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह बलवान होकर तथा शुभ प्रभाव में होकर केंद्र में हो।
- मकर, कुंभ या मीन राशि का केतु किसी त्रिषढ़ाय भाव में हो।
- राहु तीसरे तथा बुध छठे भाव में हो।
- जन्म कुंडली का नीच ग्रह वर्ष कुंडली के अष्टम भाव में हो।
- पणफर भाव में स्थित गुरु पर शुक्र की दृष्टि हो।
- द्वितीयेश स्वराशि का हो अथवा पंचम में हो, दशमेश दशम में हो अथवा जन्म लग्नेश वर्ष कुंडली में शुभ युत/दृष्ट हो तथा मुन्थेश तीसरे भाव में स्थित हो।

उपरोक्त बहु प्रकार से अरिष्ट भंग संभव है।

स्थानातंरण योग : किसी भी कारण से स्थान परिवर्तन के योग निम्न प्रकार हैं –

- लग्नेश व तृतीयेश अथवा चतुर्थेश व नवमेश का परस्पर इत्थशाल हो, मित्र दृष्टि हो, अथवा युति हो।
- यदि लग्न व लग्नेश दोनों चर राशियों में हों अथवा दूसरे व चौथे भाव में पापी ग्रह हों अथवा लग्नेश वक्री हो या लग्न में कोई वक्री ग्रह हो अथवा चंद्रमा का किसी वक्री ग्रह से दृष्टि संबंध हों अथवा मुन्था चर भावों में हो।
- यदि लग्नेश व चंद्रमा दोनों नवम में हों, नवम में चर राशि हो तो परिवर्तन मनचाहे स्थान पर होता है।
- यदि परिवर्तन योग हो तथा लग्न/चतुर्थ भाव में चर राशि हो तो परिवर्तन शीघ्र, स्थिर हो तो देरी से, द्विस्वभाव हो तो परिवर्तन होकर रुकना या जाकर वापिस आता है।

द्वितीय भाव :

द्वितीय या धन भाव से धन संपत्ति संचय, वाणी, कुटुंब, विद्या, मुख, दायीं आंख, भोजन, क्रय विक्रय आदि का विचार किया जाता है।

यदि द्वितीयेश अपने भाव में स्थित हो, भाव को देखता हो, शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो तो द्वितीय भाव के शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि इस भाव/भावेश पर पाप प्रभाव हों तो अशुभ तथा मिश्रित प्रभाव हों तो मिश्रित फल प्रापत होते हैं।

द्वितीय भाव में ग्रहों की स्थिति के फल निम्न प्रकार होते हैं :–

सूर्य : धन व्यय/हानि, कुटुंब में क्लेश या कुटुंब से दूरी राज्य भय/दण्ड, चोर/शत्रु/अग्नि का भय होता है।

चंद्र : आनंद, आरोग्य, राज्य कृपा, बंधु बांधवों से लाभ श्वेत व तरल पदार्थों के व्यापार से लाभ व नेत्र रोग।

मंगल : राज्य भय/दण्ड, चोरी, धन नाश, नेत्र पीड़ा, जीवन साथी की स्वास्थ्य हानि, अग्नि/बिजली से

दुर्घटना, झूठे विवाद।

बुध : धन लाभ, वाणी लाभ/वाकपटुता, कुटुंब सहयोग, सुख–समृद्धि, मान–सम्मान, शत्रु पर विजय, व्यापार में लाभ।

गुरु : राज्य कृपा, यश–सम्मान, धन संपत्ति, भूमि भवन, पशु धन, उच्च पदस्थ व्यक्तियों से मेज जोल, कौटंबिक सुख।

शुक्र : धन, वस्त्राभूषण की प्राप्ति/संचय, स्त्री सुख, पशु धन–वृद्धि, आमोद प्रमोद, मित्र वर्ग वृद्धि, शत्रु ह्रास, सौंदर्य वृद्धि।

शनि : राज्य भय, स्वजनों का विरोध, धन संपत्ति हानि, मुख व नेत्र रोग, जीवन साथी की स्वास्थ्य हानि, कर्कश वाणी।

राहु : धन नाश, चिंता, अग्नि व चोरी भय, पेट के रोग, कुटुंब में विवाद/क्लेश, राज्य भय, वाणी दोष।

केतु : विघ्न बाधा, शत्रुभय, धन व बुद्धि नाश, अपव्यय, नेत्र रोग।

विशेष योग : धन लाभ :

- लग्नेश तथा चंद्रमा वर्ष कुंडली में धनेश से आगे स्थित हों तो धन लाभ कराते हैं, पीछे स्थित हों तो धनक्षय।
- लग्नेश द्वितीय भाव में तथा द्वितीयेश सप्तम भाव में हो तो पूरे वर्ष धन प्राप्ति का योग।
- गुरु वर्षेश हो, जन्म का गुरु द्वितीय भाव में आ जाए या उसको देखता हो तो धन वृद्धि का योग।
- मुन्था पर सूर्य या मंगल की 5/9 दृष्टि धन के लिए शुभ।
- शुक्र वर्षेश होकर द्वितीय भाव में हो तथा इस पर बुध की दृष्टि हो।
- जन्म कुंडली के षष्ठ भाव का बुध वर्ष कुंडली के द्वितीय भाव में हो।

धन हानि योग :

- वर्ष कुंडली के द्वितीय भाव/भावेश पाप प्रभाव में हों तो धन हानि का योग बनता है।
- दूसरे भाव में पापी ग्रह के साथ कोई नीच ग्रह भी युत हो।
- लग्नेश अष्टम में, दशमेश अस्त होकर षष्ठम में तथा द्वितीयेश द्वादश में स्थित हो तो दरिद्रता निश्चित है।
- गोचर में शनि की द्वितीय भाव पर दृष्टि हो।
- जन्म कुंडली में शनि यदि लग्न में हो तथा वर्ष कुंडली में उसी राशि में द्वितीय भावस्थ हो।

तृतीय भाव :

इस भाव से छोटे भाई बहन, पराक्रम, साहस, पड़ोसी, गला, कंधे, हाथ, वन भूमि, उत्साह आदि का विचार होता है। पापी ग्रह यहां स्थित होकर शुभ फल देते हैं परंतु भाई–बहन के सुख में कमी करते हैं जबकि

शुभ ग्रह इस भाव में स्थित होकर पीड़ित होते हैं, साहस में कमी करते हैं किंतु भातृ–सुख में वृद्धि करते हैं।

विभिन्न ग्रहों की तृतीय भाव में स्थिति के निम्न फल हैं :–

सूर्य : पराक्रम, आरोग्य, धन लाभ, राज्य कृपा, सम्मान, सफलता, शत्रु नाश किंतु भातृ–सुख में कमी।

चंद्र : भातृ सुख, पुण्य, सुख, प्रतिष्ठा तथा धन की वृद्धि।

मंगल : पराक्रम व धनवृद्धि, शत्रुनाश, विवादों में विजय, राज्य व मित्रों का सहयोग किंतु भातृ सुख की हानि।

बुध : लाभ–हानि, सुख–दुःख, जय–पराजय, शत्रु–मित्रों से मेल मिलाप व दुराव आदि मिश्रित फल साथ–साथ होते हैं।

गुरु : धर्म व यश की वृद्धि, बंधु बांधवों से अच्छे संबंध किंतु लाभ व सुख की मात्रा में कमी रहती है।

शुक्र भातृ सुख, अल्प लाभ व सुख, चिंता, स्वार्थ त्याग, समझौता।

शनि : राज्य कृपा, साहस वृद्धि, धन व संपत्ति में वृद्धि, दुःख पीड़ा का नाश, भातृसुख में कमी, स्वजनों का विरोध।

राहु : आरोग्य, राज्यकृपा, धन व मान में वृद्धि, भातृ सुख का नाश।

केतु : शत्रुओं पर विजय, दान पुण्य, क्षमा, सुख–सामग्री, साहस, पराक्रम में वृद्धि किंतु बंधु बांधवों से विरोध।

विशेष योग : भ्रातृ–सुख :

- तृतीयेश बलवान होकर वर्षेश या लग्नेश के साथ इत्थशाल करे या तृतीय भाव में स्थित हो।
- वर्षेश, वर्ष लग्नेश, मुन्था/मुन्थेश बलवान होकर तृतीय में हों।
- जन्म कुंडली का तृतीयेश वर्ष कुंडली के तृतीय भाव में स्थित हो।
- शुक्र या सूर्य वर्षेश होकर तृतीय भाव में शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट होकर स्थित हो।

भातृ कष्ट :

- लग्नेश व तृतीयेश में अशुभ इशराफ योग बनता हो।
- निर्बल गुरु तृतीय भाव में स्थित हो।
- तृतीयेश से सप्तम में वर्षेश या वर्ष लग्नेश स्थित हो।
- तृतीयेश का षष्ठेश के साथ परिवर्तन योग बने।
- मेष या वृश्चिक राशि का शनि तृतीयस्थ हो।
- तृतीयेश तथा षष्ठेश पाप प्रभाव में हों।

चतुर्थ भाव :

चतुर्थ भाव से मातृ सुख, भूमि भवन, कृषि, पशुधन, सुख साधन, वाहन, पारिवारिक सुख, विद्या, गड़ा धन, जनता, चुनाव आदि का विचार किया जाता है।

चतुर्थेश स्वराशि, उच्च राशि का होकर शुभ भावों में स्थित हो, शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो, बलवान होकर लग्नेश, वर्षेश आदि से शुभ योग बनाए तो चतुर्थ के शुभ फल प्राप्त होते हैं। चतुर्थेश तथा कारक ग्रह निर्बल होकर अशुभ भावस्थ हों तो तत्सबंधी अशुभ फल प्राप्त होते हैं। चतुर्थ भाव में विभिनन ग्रहों की स्थिति के फल निम्न प्रकार हैं :–

सूर्य : माता को कष्ट, राज्य भय, हृदय, पेट, छाती के रोग, पारिवारिक क्लेश, धन हानि, व स्वजनों से विरोध।

चंद्र : राज्य कृपा, सुख–समृद्धि, परिवार सुख, कृषि व पशुधन से लाभ।

मंगल : मातृ कष्ट, मानसिक क्लेश, स्थान परिवर्तन, विदेश यात्रा, कृषि कर्म से हानि, झगड़े, अग्नि भय किंतु भूमि–भवन प्राप्ति।

बुध, गुरु व शुक्र : शुभ ग्रह होने के कारण चतुर्थ भाव से संबंधित शुभ फल प्राप्त होते हैं।

शनि, राहु, केतु : सूर्य तथा मंगल के समान चतुर्थ भाव के अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

विशेष शुभ योग :

- लग्नेश व चतुर्थेश का इत्थशाल तथा अन्य शुभ प्रभाव हो तो भूमि, भवन, व वाहन सुख की प्राप्ति अथवा वृद्धि होती है।
- लग्नेश व चतुर्थेश का राशि परिवर्तन योग अथवा शुभ भाव में युति होने पर।
- चंद्रमा चतुर्थेश होकर लग्न में स्थित हो अथवा चतुर्थ भाव में कर्क राशि हो व शुभ ग्रह स्थित हों।
- जन्म कुंडली व वर्ष कुंडली के चतुर्थेश बलवान होकर चतुर्थ या दशम में स्थित हों।
- वर्ष कुंडली में सूर्य तथा चंद्रमा के साथ गुरु या शुक्र की युति होने पर मां–बाप का सुख निश्चित होता है।

अशुभ योग :

चतुर्थ भाव/भावेश व कारक ग्रह अशुभ योग/प्रभाव में तथा क्षीण बली होने पर चतुर्थ भाव से संबंधी अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

पंचम भाव :

पंचम भाव से संतान, विद्या, बुद्धि, ज्ञान, प्रेम संबंध, आकस्मिक धन प्राप्ति, गर्भ धारण, मंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक उपलब्धि, यश–मान, नीति, दान–पुण्य आदि का विचार किया जाता है। भाव/भावेश तथा कारक बृहस्पति की शुभ स्थिति/प्रभाव व बल होने पर पंचम भाव के शुभ फल प्राप्त होते हैं तथा विपरीत स्थिति में अशुभ।

विविध ग्रहों की पंचम में स्थिति के प्रभाव निम्न प्रकार हैं –

सूर्य : बुद्धि में क्रोध, मान सम्मान की हानि, गर्भपात, संतान बाधा तथा कष्ट, उदर रोग, धन हानि आदि।

चंद्र : संतान प्राप्ति या सुख, प्रसव, बुद्धि, धन व यश–सम्मान का लाभ, राज्य कृपा, आकस्मिक धन लाभ।

मंगल, शनि, राहु, केतुः संतान कष्ट, विद्या हानि, गर्भपात, बुद्धि ह्रास/विकार, उदर–विकार, मतिभ्रम, असफलता। किंतु राहु को पुत्र प्राप्ति में सहायक माना जाता है।

बुध, गुरु, शुक्र : विद्या प्राप्ति, संतान, प्राप्ति/सुख, राज्य कृपा, प्रेम संबंध, मंत्र विद्या, इष्ट प्राप्ति, यश वृद्धि, ज्योतिष, धन लाभ।

विशेष योग :

पुत्र प्राप्ति : जन्म कुंडली में संभावना होना अति आवश्यक है तथा जीवन साथी की कुंडली का सहयोग अभीष्ट है। इसके साथ ही जातक की वर्तमान आयु का भी महत्व है।

- बलवान वर्ष लग्नेश अथवा वर्षेश पंचम में हो।
- जन्म के गुरु की राशि वर्ष कुंडली के लग्न या पंचम में पड़े।
- वर्षेश होकर सूर्य, मंगल, गुरु पंचम या एकादश भाव में बिना पाप प्रभाव के हों।
- लग्नेश व पंचमेश के मध्य शुभ इत्थशाल योग हो।
- चंद्र, गुरु, शुक्र, उच्च के होकर पंचमस्थ हों।
- जन्म के बुध, गुरु, शुक्र की राशि वर्ष लग्न में आ जाए।
- मुन्था पंचम भाव में स्थित हो तथा मुन्थेश शुभ भावस्थ होकर मित्र दृष्टि से पंचम को देखता हो।

कन्या प्राप्ति :

- लग्नेश व पंचमेश दोनों स्त्री ग्रह होकर शुभ भाव यानी केंद्र/त्रिकोण में स्थित हों, सम राशि व नवांश में हों।
- लग्न में सम राशि हो व शनि स्थित हो।
- कन्या राशि का राहु किसी अन्य ग्रह के साथ पंचम या सप्तम में स्थित हो।
- **गर्भाधान योग :**
- वर्ष कुंडली में चंद्रमा गुरु की राशि में स्थित हो अथवा मंगल शुक्र की राशि में स्थित हो अथवा मंगल शुक्र की राशि में स्थित हो तथा शुक्र भी साथ या एक भाव आगे पीछे स्थित हो।

जुड़वां संतान योग :

- यदि गर्भाधान योग बनता हो, लग्न में द्विस्वभाव (3,6,9,12) राशि हो तथा शुभ ग्रह स्थित हों।

संतान कष्ट योग :

- पंचम भाव/पंचमेश पाप प्रभाव में हो अथवा मंगल या बुध निर्बल होकर पंचम में स्थित हों।
- मंगल या केतु की पंचम में स्थिति तथा उस पर शनि की दृष्टि अथवा सप्तम में मंगल/केतु गर्भपात कराते हैं।
- पंचमेश तथा द्वादशेश का राशि परिवर्तन संतान कष्ट अथवा संतान पर अतिव्यय की स्थिति दर्शाते हैं।
- जन्म का पंचमेश वर्ष कुंडली में निर्बल होकर पापी ग्रहों द्वारा युत/दृष्ट हो।
- जन्म के समय मंगल या शनि की राशि वर्ष में लग्न या पंचम में पड़े।

परीक्षा में सफलता :

- पंचम भाव में गुरु, शुक्र, चंद्रमा या बुध की स्थिति हो तथा उस पर पंचमेश की दृष्टि हो।
- शुक्र की तृतीय भाव में स्थिति अथवा मुन्था की द्वितीय भाव में।
- संतान कारक शुभ योग परीक्षा में भी सफलता देते हैं।

विफलता :

- पंचम भाव (वर्ष कुंडली) या पंचमेश पर से शनि या राहु का गोचर अथवा दृष्टि।
- पंचमेश की निर्बल होकर त्रिक भाव में स्थिति।

षष्ठ भाव :

इस भाव से शत्रु, बाधा, झगड़े, हिंसा, रोग, दुर्घटना, चोरी, ऋण लेना/चुकाना, दत्तक पुत्र, अधीनस्थ कर्मचारी, पालतू पशु आदि का विचार किया जाता है। पापी ग्रह इस भाव में स्थित होकर शुभ फल देते हैं यानि हमारी संघर्ष शक्ति की वृद्धि कर हमें सफलता प्रदान करते हैं जबकि शुभ ग्रह हमें समझौता करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह उपचय भाव भी है।

विभिन्न ग्रहों की इस भाव से स्थिति के फल इस प्रकार हैं —

सूर्य	: शत्रु दमन, राज्य सम्मान, रोगों से छुटकारा, धैर्य, सफलता।
चंद्र	: धन हानि/चोरी, ऋण वृद्धि, कफ–विकार, राज्य व शत्रु भय।
मंगल, राहु, केतु, शनि	: इन सभी ग्रहों के सूर्य के समान शुभ फल प्राप्त होते हैं, रोग, ऋण, शत्रु नाश होने से सभी कार्यों में सफलता मिलती है, सभी का सहयोग व सम्मान मिलता है।
बुध, गुरु, शुक्र	: ऋण, शत्रु वृद्धि, ग्रह संबंधी रोग, भीरुता, मानसिक कष्ट, अपमान, समझौता वृत्ति, कार्यों में बाधा।

विशेष योग :

- चंद्रमा का इत्थशाल मंगल से हो तो रोग वृद्धि तथा शनि से हो तो रोग नाश के फल मिलते हैं।
- षष्ठेश लग्न में स्थित हो अथवा लग्नेश षष्ठ भाव में तो अकारण ही व्यक्ति के शत्रु बनते रहते हैं।
- स्वराशि व शुभ प्रभाव का षष्ठेश रोग/बाधा नाशक होता है किंतु निर्बल व पाप प्रभाव में हो तो रोग/बाधा कारक होता है।
- लग्लेश व षष्ठेश की युति भी शारीरिक कष्ट बनाए रखती है।
- वर्षेश शनि यदि पापयुत/दृष्ट होकर षष्ठ भाव में स्थित हो तो शूल, उदर विकार, वात रोग व चिंता देता है।
- षष्ठेश की पंचम में स्थिति अथवा पंचम में षष्ठेश की स्थिति संतान पीड़ा, प्रसव पीड़ा/शल्य चिकित्सा/गर्भपात देती है।
- जन्म के निर्बल बुध या शुक्र यदि वर्ष कुंडली में केतु से युत हो तो जातक पूरे वर्ष रोगी रहता है।
- जन्म के शुक्र की राशि यदि वर्ष के षष्ठ में आ जाए तथा उसमें शनि स्थिति हो जातक पूरे वर्ष काम ज्वर से दुखी रहता है।
- नवमेश यदि षष्ठ भाव मे आ जाए तो यात्रा में कष्ट होता है।

सप्तम भाव :

इस भाव से दांपत्य सुख, काम चेष्टा, वस्तुओं का लेन–देन, व्यवसाय, दास, यात्रा, चोरी व गुप्तांगों के आंतरिक भाग आदि का विचार किया जाता है। सप्तम भाव/भावेश पर शुभ प्रभाव हों तो शुभ तथा अशुभ प्रभाव होने पर अशुभ फल मिलते हैं।

विविध ग्रहों की सप्तम में स्थिति के फल इस प्रकार हैं :–

सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु : ये सभी ग्रह अपने कारकत्व के अनुसार अशुभ फल देते हैं। जीवन साथी के स्वास्थ्य को हानि, अग्नि व राज्य भय, शत्रु वृद्धि, साझेदारी में विवाद, यात्रा में कष्ट, निरर्थक भ्रमण, मान हानि, झूठी निंदा आदि।

चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र : ये सभी शुभ ग्रह अपने कारकत्व की विशेषता के अनुसार शुभ फल देते हैं। राज्य कृपा, साझे के व्यवसाय में लाभ, जीवन साथी से अच्छे संबंध, मान–प्रतिष्ठा, सुख–समृद्धि, यात्रा से लाभ, व्यापार वृद्धि, आनंद, प्रसन्नता, मित्र व परिवार–सुख/सहयोग आदि शुभ फल।

विशेष योग :

विवाह : जन्म के शुक्र की राशि वर्ष के सप्तम में पड़े तथा ऐसे में शुक्र वर्षेश लग्नेश भी हो तो उस वर्ष जातक यदि अविवाहित युवक है तो, उसकी शादी का योग बनता है। स्त्री जातक के लिए यह योग गुरु से इसी प्रकार बनता है।

- जन्म के शुक्र की राशि यदि वर्ष लग्न की राशि हो।

- वर्ष कुंडली में मंगल व शुक्र की युति/दृष्टि/योग (प्रेम प्रसंग)।
- वर्ष लग्नेश व चंद्रमा सप्तम में स्थित हों।
- वर्ष लग्नेश व सप्तमेश का योग/युति/दृष्टि हो।
- षष्ठेश या सप्तमेश क्रमशः षष्ठ या सप्तम में स्थित हों। उन पर शुभ ग्रहों का प्रभाव भी हो।
- सप्तमेश लग्न में स्थित हो तथा उस पर चंद्र की दृष्टि हो।
- वर्ष के पंचाधिकारियों की राशि में मुन्था की स्थिति हो।
- जन्म कुंडली में गोचर के गुरु का सप्तम/सप्तमेश अथवा शुक्र पर से गोचर हों, दशांतर्दशा व वर्ष कुंडली भी अनुकूल हों।
- सप्तम/सप्तमेश के साथ चतुर्थेश की युति व शुभ प्रभाव भी हो तो श्रृंगार योग बनता है, दांपत्य सुख की वृद्धि होती है, किंतु अशुभ प्रभाव हो तो दांपत्य सुख की हानि होती है।

दांपत्य कष्ट :

- मुन्था सप्तम में तथा उस पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो।
- सप्तम भाव पाप प्रभाव में हो तथा सप्तमेश हीन बली हो।
- वर्ष कुंडली के सप्तम में मंगल की स्थिति।
- कन्या लग्न में शुक्र लग्नस्थ तथा मंगल सप्तमस्थ हो तो स्त्री के लिए विशेष कष्ट कारक।
- शुक्र के साथ क्षीण चंद्र की युति भी स्त्री के लिए कष्टदायी।
- सप्तम में चंद्रमा के साथ मंगल व राहु की युति स्त्री को मृत्यु तुल्य कष्ट देती है।
- शनि सप्तम में मेष या वृश्चिक राशि में हो तथा पापी ग्रहों के प्रभाव में भी हो।
- लग्नेश व सप्तमेश नैसर्गिक रूप से परस्पर शत्रु हों। द्वादश में पापी ग्रह हों।
- मंगल व शनि विशेष बलवान हों तो झगड़े बढ़ते हैं।

विवादों में जय–पराजय :

जय :

- लग्न या षष्ठ भाव में पापी ग्रह हों किंतु उन पर पापी ग्रहों की दृष्टि न हो।
- एकादश भाव बलवान हो तो समझौता हो जाता है।
- सप्तम व चतुर्थ में शुभ ग्रह स्थित हो।
- लग्न में चर राशि में शुभ ग्रह हों अथवा दशम में शुभ ग्रह हों तो संधि करनी पड़ती है। अथवा लग्नेश व सप्तमेश में परस्पर मित्र दृष्टि हो तो भी सुलह होती है।

पराजय:

- लग्नेश सप्तम या द्वादश में स्थित हो।
- सप्तम में पापी ग्रह हो।
- लग्न पर पापी ग्रहों की दृष्टि हो।

दांपत्य संबंध :

- लग्नेश सप्तम में हो तो जातक अपने जीवन साथी के प्रति समर्पित होता है, उसके कहे अनुसार चलता है। इसके विपरीत सप्तमेश लग्न में स्थित होने पर जीवन साथी जातक के प्रति समर्पित होकर व्यवहार करता है।
- लग्नेश लग्न में अथवा सप्तमेश सप्तम में हो, अथवा दोनों की युति लग्न या सप्तम में हो तो दांपत्य संबंध अति मधुर रहते हैं।
- लग्नेश सप्तमेश में परस्पर मित्र दृष्टि हो तो आपस में प्रेम, शत्रु दृष्टि हो तो क्लेश तथा सम दृष्टि हो तो साधारण संबंध वर्ष भर बने रहते हैं।
- द्वितीय भाव बलवान हो तो जातक को जीवन साथी से धनलाभ रहता है। यदि अष्टम बलवान हो तो जीवन साथी को जातक से धन लाभ होता है।
- सप्तमेश नीच राशि का हो या हीन बली, जीवनसाथी के प्रति प्रेम/आकर्षण में कमी दर्शाता है तथा पाप प्रभाव में भी हो तो उसकी आसक्ति अन्य स्त्री/पुरुषों के साथ संभव होती है।
- यदि मंगल शुक्र की राशि में हो तो भी परस्त्री/पुरुष संबंध की संभावना बढ़ती है।

यात्रा विचार : चौथा भाव घर तथा सातवां गंतव्य दर्शाता है।

- यदि 4,5,6,7 भावों में शुभ ग्रह हों तो यात्रा सफल होती है।
- सप्तमेश सप्तम में हो, अथवा सप्तम भाव शुभ प्रभाव में हो तो यात्रा में सफलता मिलती है।
- सप्तम भाव चर राशि का हो तथा पाप प्रभाव से रहित हो तो भी जातक सकुशल यात्रा करता है।

खोई वस्तु की प्राप्ति :

- यदि द्वितीयेश सूर्य से आगे स्थित हो पर अस्त न हो तो वस्तु खोती नहीं बल्कि व्यक्ति रखकर भूल जाता है, अतः प्राप्ति होती है।
- चंद्रमा की राशि के स्वामी की दृष्टि यदि चंद्रमा/अपनी राशि परहो तो खोई वस्तु मिल जाती है।
- यदि लग्नेश व सप्तमेश पाप प्रभाव में न हों तो भी वस्तु खोने का योग नहीं होता, भूल कर रखी जाए तो प्राप्त हो जाती है।

अष्टम भाव :

अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, पतन, व्यसन, कष्ट, बाधा, अपमान, आदि का विचार किया जाता है। यह अशुभ,

त्रिक व रंध्र (छेद) भाव कहलाता है। ताजिक में इसी भाव से खोई वस्तु, भाइयों, शत्रुओं व रोग आदि का भी विचार किया जाता है। अन्य भावों के समान इस पर शुभ प्रभाव हो तो अशुभता कम होती है, शुभ फलों की प्राप्ति होती है। पाप प्रभाव होने पर कष्ट वृद्धि होती है।

विभिन्न ग्रहों के अष्टमस्थ होने के फल इस प्रकार हैं :–

सूर्य : पित्त व नेत्र विकार, राज्यभय, विषभय, द्रव्यनाश।

चंद्र : कफ व नेत्र रोग, जलीय रोग, राज्य भय, द्रव्य नाश।

मंगल : रक्त/पित्त विकार, चोट, दुर्घटना, शस्त्राघात, गुप्त चिंता, व्यय।

बुध : शुभ प्रभाव में हो तो व्यापार व राज्य लाभ, आरोग्य, प्रसन्नता, शत्रुनाश आदि शुभ फल देता है। अशुभ प्रभाव हो तो धन, स्वास्थ्य व व्यवसाय में हानि, बुद्धिनाश, कष्ट, भय आदि अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

गुरु : धन/यश/मान की हानि, प्रवास, किंतु स्वास्थ्य लाभ देता है।

शुक्र : शारीरिक कष्ट, व्यसन, स्त्री जन्य कष्ट, धन नाश व कुछ लाभ भी।

शनि : राज्य भय/दण्ड, गंभीर रोग, व्यसन, धन नाश, अपमान।

राहु, केतु : रोग, अपव्यय, स्थानांतरण, स्वजनों से विवाद, चोट, बाधा, दुर्घटना, धन हानि, दिल का दौरा, निष्फल यात्रा।

विशेष योग (अशुभ)–मृत्यु तुल्य कष्ट :

- जन्म लग्नेश, वर्षेश, मुन्थेश की अष्टम में स्थिति अथवा अष्टमेश से इत्थशाल मृत्यु तुल्य कष्ट देता है।
- मुन्था अष्टम में शनि या मंगल के पाप प्रभाव में हो।
- जन्म का अष्टमेश, वर्ष के अष्टम में स्थित हो।
- अष्टम में मेष, सिंह या धनु राशि का मंगल लग्नेश के साथ हो तो शस्त्राघात का भय।
- लग्न में सूर्य, अष्टम में शुक्र, चंद्रमा पाप प्रभाव में तथा सप्तम में कन्या राशि हो तो विष कन्या योग बनता है अर्थात् आज के संदर्भ में पर स्त्री से समागम करके प्राणाघात जिसे एड्स का रोग कह सकते हैं।
- मुन्थेश शनि युत हो, जन्म लग्नेश पाप युत तथा दोनों पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को उस वर्ष आत्महत्या का योग बनता है।
- अष्टमगत बुध पर मंगल का पाप प्रभाव विदेश में मरण अथवा बंदी होने का योग बनाता है।
- मंगल, शनि व सूर्य तीनों अष्टम या दशम में स्थित हों, अथवा सूर्य–मंगल अष्टमस्थ हों तो वाहन

दुर्घटना का योग बनता है।

- लग्नेश व अष्टमेश की युति चतुर्थ, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो भी मृत्यु समान कष्ट होता है।
- वर्षेश गुरु यदि अष्टमगत तथा पाप प्रभाव में हो तो धन–नाश व दरिद्रता की अति होती है।

नवम भाव :

इस भाव से भाग्य, धर्म, पुण्य, पवित्रता, दान, मंदिर, धर्मशाला आदि का निर्माण, तीर्थ यात्रा, आध्यात्मिक सिद्धि, यश–सम्मान, गौरव, गुरु, गुरुजन, राज्य कृपा आदि का विचार करते हैं। यह अपोक्लिम भाव भी है तथा त्रिकोण भी। शुभ प्रभाव होने पर उक्त शुभ फलों की प्राप्ति होती है तथा अशुभ प्रभाव इन फलों की हानि करते हैं।

विभिन्न ग्रहों की नवम में स्थिति के फल निम्न प्रकार है :

सूर्य : धार्मिक कार्यों में रुचि, पारिवारिक क्लेश, भय, पश्चाताप।

चंद्र : धार्मिक वृत्ति, संतोष, शांति, यश, राज्य, यात्रा, व्यापार में लाभ।

मंगल : पाप वृत्ति, बंधु–बांधवों से विवाद, भय, बुराई, धन हानि।

बुध : धर्म, भाग्य व मित्रों की वृद्धि तथा उनसे लाभ।

गुरु : धर्म, भाग्य, दान–पुण्य, तीर्थ, सुख, समृद्धि, राज्य कृपा, यश।

शुक्र : धार्मिक वृत्ति, स्वास्थ्य लाभ, धनागम, परिवार सुख।

शनि : पापवृत्ति, धार्मिक व शुभ कार्यों से विमुख, दरिद्रता, कष्ट, गुरुजनों व पिता से विरोध, देह व भुजाओं में पीड़ा।

विशेष योग :

भाग्योदय के लिए वर्ष कुंडली में ''जीर्ण जातक'' में निम्न पांच स्थितियां बताई गई हैं :–

(i) लग्नेश लग्न को तथा भाग्येश भाग्य स्थान को देखे।

(ii) भाग्येश लग्न को तथा लग्नेश भाग्य स्थान को देखे।

(iii) लग्नेश लग्न में तथा भाग्येश भाग्य स्थान में हो।

(iv) लग्नेश व भाग्येश में स्थान परिवर्तन योग बने।

(v) भाग्येश व लग्नेश की युति सप्तम स्थान में हो।

- मुन्था नवम् में हो तो भाग्योदय अथवा नवमेश नवम में हो।
- वर्ष लग्नेश का नवम में होकर जन्म लग्नेश से इत्थशाल भाग्योदय व उन्नति कराता है।
- गुरु वर्षेश होकर नवम में स्थित हो, बलवान भी हो तो नवम भाव के शुभ फलों में विशेष वृद्धि होती है।
- गुरु का नवमस्थ होना परीक्षा में उत्तीर्ण कराता है।

- भाग्येश तथा चतुर्थेश की युति/दृष्टि/योग वर्ष में भूमि भवन या वाहन आदि की प्राप्ति कराता है।
- नवम का पापा क्रांत होना जातक को नास्तिक, नवम का शनि से युत/दृष्ट होना भाग्योदय में बाधा/देरी, अथवा नवम में शनि की राशि का मंगल अन्य पापी ग्रह से युत हो अथवा इसी प्रकार तृतीय भाव में स्थित हो तो धर्म व भाग्य की हानि होती है।

यात्रा (तीर्थ/विदेश/लंबी) :

- बलवान बुध की तृतीय अथवा नवम में स्थिति यात्रा का अवसर प्रदान करती है।
- बलवान गुरु तृतीय या नवम में हो तो तीर्थ यात्रा कराता है।
- शुक्र वर्षेश होकर तृतीय या नवम में हो तो यात्रा में सुख मिलता है।
- मंगल वर्षेश होकर तृतीय भाव या नवम में हो तथा शुभ प्रभाव में भी हो तो यात्रा से लाभ मिलता है, बिगड़े कार्य बनते हैं।
- वर्षेश व भाग्येश का इत्थशाल हो तो पूर्व नियोजित यात्रा पूर्ण होती है।
- जन्म के गुरु की राशि में यदि वर्ष में मंगल की स्थिति हो जाए तो मन चाही यात्रा का सुख मिलता है।
- मुन्था सप्तम में तथा चंद्रमा बलवान होकर नवम में हो तो जातक उस वर्ष विदेश यात्रा करता है।
- निर्बल मंगल वर्ष कुंडली के नवम में स्थित हो तो जातक परिवार से दूर हो जाता है।

दशम भाव :

इस भाव से कर्म, नौकरी, व्यवसाय, आजीविका साधन, राज्य, राज्याधिकार, राज्य से लाभ/हानि, उन्नति व पदोन्नति, मान–सम्मान, दर्प/स्वाभिमान आदि का विचार किया जाता है। यह केंद्र व कर्म भाव कहलाता है। सूर्य तथा मंगल को इस भाव में दिग्बल प्राप्त होता है। अन्य भावों की भांति ही शुभाशुभ का विचार होता है।

दशमस्थ ग्रहों का फल निम्नलिखित है :

सूर्य	: राज्य कृपा/लाभ, अधिकार, यश, नौकरी/व्यापार में वृद्धि/उन्नति, सुख–समृद्धि, धनागम, कार्यों में सफलता।
चंद्र	: आरोग्य, राज्य कृपा, धन, यश, वस्त्राभूषण का लाभ।
मंगल	: सूर्य की भांति शुभ फल करता है।
बुध	: बुद्धि चातुर्य से लाभ, कौशल, मित्र सहयोग, राज्य व धन लाभ।
गुरु	: यश–सम्मान, राज्य कृपा, धन, यश, वस्त्राभूषण का लाभ।
शुक्र	: स्त्री पक्ष से लाभ, कार्य सिद्धि, राज्य से लाभ, धन, सुख साधन।

शनि : नौकरी व कल–कारखानों से लाभ, राज्य दण्ड, व्यापार में हानि, सुख ह्रास, यात्रा में कष्ट आदि मिश्रित फल।

राहु/केतु : राज्य व शत्रु भय, भूमि भवन की हानि/बिक्री, अपव्यय, स्वजनों से विवाद/बाधा, शारीरिक पीड़ा व मानसिक दुःख।

विशेष योग :

पद प्राप्ति :

- वर्षेश बलवान होकर दशम में स्थित हो तो उच्च राज्य पद या पदोन्नति/अधिकार वृद्धि की संभावना होती है।
- दशम में स्थिर राशि हो तथा दशमेश या शुभ ग्रह स्थित हों तो नौकरी अथवा नए व्यवसाय की स्थापना होती है।
- शीर्षोदय राशि लग्न में तथा उसमें शुभ ग्रह हो तो पद प्राप्ति होती है।
- मुन्था दशम में सूर्य की राशि में अथवा सूर्य से युत हो तो जातक को उच्च राजकीय पद की प्राप्ति होती है।
- लग्नेश व दशमेश की चंद्र के साथ/आस–पास स्थिति, अथवा बुध या गुरु के आस–पास शुक्र की स्थिति जातक को पद प्राप्त कराने या पदोन्नति में सहायक होती है।

पदोन्नति :

- दशम में स्वराशि का सूर्य हो।
- वर्षेश या वर्ष लग्नेश का उच्च या स्वराशि में होना।
- वर्षेश, वर्ष लग्नेश, जन्म लग्नेश अथवा गुरु की लग्न में स्थिति।
- मुन्था से पंचम स्थान में सूर्य या मंगल की स्थिति।
- दशमेश की पंचम में स्थिति।
- लग्नेश व एकादशेश का राशि परिवर्तन अथवा लग्न या एकादश भाव में युति व शुभ प्रभाव भी हो।
- गुरु, शुक्र, सूर्य यदि इत्थशाल आदि शुभ योगों में शामिल हों।
- जन्म के मंगल की राशि पर जब वर्ष का चंद्र स्थित हो।

अशुभ योग :

- जन्म कालिक अष्टमेश की वर्ष के दशम भाव में स्थिति।

- दशमेश अष्टम में या अष्टमेश दशम में हो तो राज्य दण्ड का भय।
- दशम में चंद्रमा यदि शनि से युत/दृष्ट हो तो सभी कार्यों में बाधा/असफलता।
- निर्बल दशमेश हो या दशम में शनि हो तो पिता के लिए हानिकारक।

एकादश भाव :

इस भाव से आय, लाभ, प्राप्ति, उपलब्धि, ससुराल से सहयोग या धन प्राप्ति, मित्रता आदि का विचार किया जाता है। यह पणफर तथा आयु भाव कहलाता है। इस भाव की विशेषता है कि सभी ग्रह यहां स्थित होकर लगभग शुभ फल ही करते हैं।

विभिन्न ग्रहों की इस भाव में स्थिति के फल निम्न प्रकार है :

सूर्य : उच्च व्यक्तियों के संपर्क से लाभ, मित्रों व वाहन का लाभ, शत्रुओं का नाश किंतु संतान सुख की हानि।

चंद्र : धन, संपत्ति, यश, वैभव, कृषि–खाद्य, श्वेत व जलीय पदार्थों से लाभ।

मंगल : राज्य कृपा, पुरुषार्थ, शत्रुनाश, स्वजनों से सुख, धन, पशुघात।

बुध : धन, यश, आरोग्य व व्यवसाय वृद्धि, इच्छा पूर्ति, पशुधन।

गुरु : संतान, धन, पदोन्नति, आरोग्य, मित्र व परिवार सुख, शत्रुपराभव।

शुक्र : प्रसाधन, विलास सामग्री, जलीय पदार्थ, विदेश व्यापार, श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ, संतान, जीवन साथी व ससुराल का सुख।

शनि : ऐश्वर्य, साहस, आरोग्य व आय प्राप्ति, प्रयास कम लाभ अधिक, किंतु संतान को कष्ट।

राहु : आय/धन व स्वास्थ्य लाभ, नीच बुद्धि, निम्नवर्ग व विदेश से अथवा विजातीय वर्ग के व्यक्तियों से लाभ, जीवन साथी का सुख।

केतु : आरोग्य व धन लाभ, जीवन साथी का सुख, कार्यों में सफलता।

विशेष योग : किस प्रकार का लाभ :

- बुध वर्षेश होकर मुन्था युत हो तो विद्या से लाभ, विशेषकर जब यह योग लग्न में बने।
- बुध वर्षेश होकर द्वितीय भाव में हो तो व्यापार से लाभ।
- बुध वर्षेश होकर एकादश में हो, शुभ प्रभाव में हो तो विद्या, बुद्धि, पढ़ने, पढ़ाने, लिखने या साहित्य आदि से लाभ।
- एकादश में मुन्था व बुध/गुरु की युति अथवा दृष्टि हो तो भी पठन पाठन व साहित्यिक कार्यों से लाभ होता है।

- बुध वर्षेश होकर षष्ठ/द्वादश भाव में हो, पापी ग्रहों से युत हो तो नीच या संस्कार विरुद्ध अशोभनीय कार्यों से लाभ प्राप्त होता है।

मनोरथ पूर्ति :

- कई ग्रहों की एकादश में स्थिति अथवा उस पर दृष्टि, पर्याप्त आय द्वारा मनोरथ पूर्ति कराती है।
- वर्षेश या वर्ष लग्नेश बलवान होकर एकादश में स्थित हो।
- धनेश बलवान होकर आय स्थान में हो अथवा आयेश बलवान होकर द्वितीय भाव में स्थित हो।
- गुरु अपनी उच्च या स्वराशि का होकर केंद्र में स्थित हो।
- धनेश शुक्र या चंद्र आय भाव में हो तो चांदी/रुई के सट्टे से लाभ कराता है।

मनोरथ हानि :

- गुरु वर्षेश होकर लग्नस्थ हो परंतु पापी ग्रहों से युत/दृष्ट हो तो राज्य भय व धन हानि कराता है।
- हीन बली ग्रह आय भाव में हो तो भी धन हानि होती है।
- लग्न से पंचम, सप्तम व अष्टम स्थान में शुभ ग्रह हों तथा लग्नेश या चंद्रमा बलवान होकर षष्ठ भाव में स्थित हो तो ऋण की प्राप्ति होती है।

द्वादश भाव :

इस भाव से सभी प्रकार व्यय, हानि, निवेश, दान, ऋण, गंभीर रोग, अस्पताल, जेल, दासता, त्याग, पराजय, शैय्या सुख, नेत्र व निद्रा विकार, षड़यंत्र, गुप्तचर सेवा आदि का विचार किया जाता है। यह अपोक्लिम तथा त्रिक भाव भी है। इस भाव में स्थित होकर ग्रहों के फलों की भी हानि होती है।

विभिन्न ग्रहों की इस भाव में स्थिति के फल इस प्रकार हैं :

सूर्य : पित्त व नेत्र विकार, स्वजनों से विरोध, धन (स्वर्ण) हानि।

चंद्र : कफ, छाती व नेत्र रोग, शत्रुभय, विवाद, शुभ कार्यों पर व्यय।

मंगल : राज्य भय, पित्त व नेत्र विकार, जीवन साथी को कष्ट, अपव्यय।

बुध : मित्र व स्वजनों से विरोध, लाभ कम व्यय अधिक, रोग।

गुरु : तीर्थ यात्रा या अन्य शुभ कार्यों पर व्यय, राज्य भय, रोग।

शुक्र : व्यसन, विलास, काम, मनोरंजन पर धन व्यय, पाप प्रभाव हो तो नैतिक पतन, जीवन साथी से झगड़ा, पर स्त्री/पुरुष संबंध।

शनि : राज्य भय, चिंता, क्लेश, अपमान, दासता, पैर/नेत्र रोग, अपव्यय।

राहु : राज्य दण्ड, अपव्यय, हानि, नेत्ररोग, जीवनसाथी से वैमनस्य/दूरी।

केतु : अपव्यय, धन हानि, चोरी, शत्रुभय, उद्विग्नता, शारीरिक कष्ट।

द्वादश भाव में सभी ग्रह अपने कारकत्व के अनुसार व्यय कराते हैं जैसे सूर्य राज्य दण्ड से, चंद्रमा दान–पुण्य, फकीर साधुओं पर, मंगल खेलकूल पर, बुध व्यापार हानि से, गुरु उदारता वश व धार्मिक कार्यों पर, शुक्र ऐश्वर्य, व्यसन पर, शनि बीमारियों पर तथा राहु/केतु रोग व झगड़ों पर।

विशेष योग :

- वर्षेश लग्नेश व द्वादशेश का इत्थशाल अथवा लग्नेश/धनेश का द्वादश में स्थित होना अथवा मुन्था की द्वादश में स्थिति, ये सभी व्यय की अधिकता दर्शातें हैं।
- वर्षेश या लग्नेश निर्बल होकर, 6,8,12 भाव में, साथ ही पाप प्रभाव में हो तो घर के सेवक/नौकर आदि के कारण हानि होती है।
- शनि वर्षेश होकर षष्ठ या द्वादश भाव में स्थित हो तो बाग, बगीचे आदि में व्यय होता है।
- द्वादशेश का दशम भाव में अथवा दशमेश की द्वादश में स्थिति राज्य दण्ड के रूप में व्यय कराती है।
- शनि व चंद्र द्वादश भाव में तथा गुरु षष्ठ भाव में हो तो जातक का व्यय/हानि चोरी या जुर्माने के रूप में होता है।
- द्वादश में शुभ ग्रह मांगलिक कार्यों पर तथा पापी ग्रह राज्य दण्ड, चोरी, व्यसन आदि पर निरर्थक व्यय कराते हैं।
- द्वादशेश की तृतीय भाव में स्थिति पराक्रम की क्षति करके कार्यों में असफल करती है।
- गोचर का गुरु यदि पूर्ण दृष्टि से द्वादश भाव को देखे तो भी धार्मिक व शुभ कार्यों पर व्यय कराता है।

अभ्यास प्रश्न

1. वर्ष कुंडली के प्रथम भाव का विश्लेषण करते समय स्वास्थ्य संबंधी अरिष्ट फल की संभावना किन परिस्थितियों में बनती है? पांच ऐसी परिस्थितियों का विवरण लिखें। इसी प्रकार पांच अरिष्ट भंग करने वाली परिस्थितियों का वर्णन करें।
2. वर्ष कुंडली से स्थानांतरण अथवा स्थान परिवर्तन की संभावनाएं किस प्रकार परिलक्षित होती हैं?
3. वर्ष कुंडली से धन लाभ तथा धन हानि के योग किस प्रकार बनते हैं ?
4. वर्ष कुंडली के तृतीय भाव में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के शुभाशुभ फल पर अपने विचार प्रकट करें।

5. वर्ष कुंडली के पंचम भाव से किन विषयों पर विचार किया जाता ळै? संतान प्राप्ति के पांच योग लिखें। किन स्थितियों में संतान हानि अथवा संतान कष्ट की संभावनाएं बलवती होती है ?

6. वर्ष कुंडली के पंचम भाव से परीक्षा में सफलता या असफलता का विचार कैसे किया जाता है?

7. वर्ष कुंडली के सप्तम भाव से विवाह की संभावनाओं के बारे में आप कैसे विचार करेंगे।

8. वर्ष कुंडली से विवादों/मुकदमों में जय या पराजय का विचार आप किस प्रकार करेंगे?

9. अष्टम भाव से वर्ष कुंडली में किन विषयों का अध्ययन किया जाता है ? विभिन्न ग्रहों के अष्टमस्थ होने पर किस प्रकार के शुभाशुभ फल प्राप्त होते हैं ?

10. वर्ष कुंडली से मुत्यु तुल्य कष्ट की संभावनाओं पर अपने विचार प्रकट करें, विशेष रूप से अष्टम भाव के संदर्भ में बनने वाले अशुभ योगों को ध्यान में रखें।

11. वर्ष कुंडली के नवम भाव से आप किन विषयों पर विचार करेंगे? भाग्योदय से संबंधित पांच शुभ योगों अथवा परिस्थितियों का वर्णन करें।

12. वर्ष कुंडली के नवम तथा तृतीय भाव से सफल यात्रा की संभावनाएं किस प्रकार देखी जाती है?

13. वर्ष कुंडली से आप पद प्राप्ति तथा पदोन्नति का विचार कैसे करेंगे तथा किन भावों को वरीयता देंगे?

14. एकादश भाव से आप वर्ष के दौरान मनोरथ पूर्ति अथवा मनोरथ हानि के विषय में किस प्रकार विचार करेंगे ? शुभाशुभ स्थितियों का वर्णन करें।

15. वर्ष कुंडली के द्वादश भाव से आप किन विषयों का विचार करते हें ? द्वादश में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के क्या शुभ/अशुभ फल होते हैं ?

15. मासिक कुंडली

पहले अध्याय में हमने गताब्ध 33 वर्ष के अनुसार वर्ष 2006 के लिए वर्ष कुंडली बनाई। वर्ष कुंडली से पूरे एक वर्ष में जातक को प्राप्त होने वाले फलों का विचार किया। वर्ष कुंडली का आधार जन्म कुंडली का सूर्य स्पष्ट होता है।

अधिक सूक्ष्म विचार के लिए हम प्रति मास के लिए एक मासिक कुंडली बना सकते हैं। इस प्रकार पूरे वर्ष के लिए 12 मासिक कुंडलियां बनायी जाती हैं। इसमें पहले मास की कुंडली वही होती है जो वर्ष कुंडली है।

सूर्य एक मास में एक राशि भ्रमण करता है। इसलिए मासिक कुंडली के लिए सूर्य की राशि प्रतिमास एक राशि बढ़ती जाएगी किंतु सूर्य स्पष्ट के अंश, कला, विकला आदि वही रहेंगे जो जन्म सूर्य स्पष्ट के हैं।

विषय को समझने के लिए हम पुनः अपनी उदाहरण कुंडली को लेते हैं।

जातक का जन्म विवरण

जन्म दिन	:	31 जुलाई 1973
जन्म समय	:	20.15.00 घंटे
जन्म स्थान	:	दिल्ली
जन्म वार	:	मंगलवार
सूर्य स्पष्ट	:	$3^{\text{रा}}\ 14^{0}\ 45'$

उदाहरण जन्म कुंडली

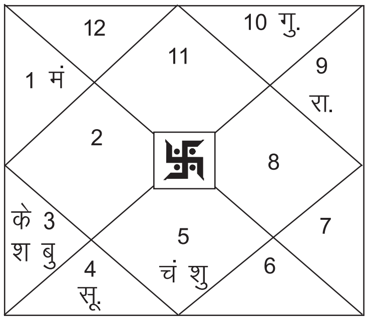

वर्ष कुंडली / प्रथम मासिक कुंडली

गताब्ध = 33 वर्ष (2006–1973)

वर्ष प्रवेश तिथि	:	1.8.2006
वर्ष प्रवेश समय	:	07.11 घंटे
वर्ष प्रवेश स्थान	:	दिल्ली
सूर्य स्पष्ट	:	$3^{\text{रा}}\ 14^{0}\ 45'$
लग्न	:	$4^{\text{रा}}\ 2^{0}\ 50'$

प्रथम मासिक कुंडली

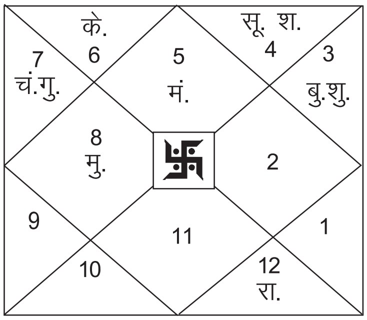

द्वितीय मासिक कुंडली

			रा	०	'
वांछित सूर्य स्पष्ट	=		$3^{\text{रा}}$	14^0	45'
1.9.2006 को 5:30 बजे सूर्य स्पष्ट		(-)	$3^{\text{रा}}$	14^0	29'
अंतर				0^0	16'
2.9.2006 को 5.30 बजे सूर्य स्पष्ट			$3^{\text{रा}}$	15^0	22'
1.9.2006		(-)	$3^{\text{रा}}$	14^0	29'
24 घंटे में सूर्य की गति			$0^{\text{रा}}$	0^0	53'
53' सूर्य चलता है		24 घंटे में			
16' सूर्य चलता है		$\frac{24}{53} \times 16$			
	=	7.245 घंटे			
	=		$7^{\text{घं.}}$	$14^{\text{मि.}}$	$42^{\text{से.}}$
		(+)	$5^{\text{घं.}}$	$30^{\text{मि.}}$	$00^{\text{से.}}$
मासिक प्रवेश समय	=		$12^{\text{घं.}}$	$44^{\text{मि.}}$	$42^{\text{से.}}$

मासिक प्रवेश तिथि = 1.9.2006
उपरोक्त के आधार पर दूसरे मास के लिए मासिक कुंडली बना ली जाती है।

द्वितीय मासिक कुंडली

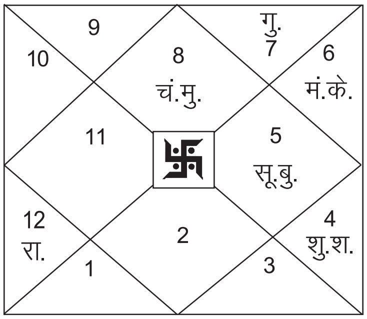

जिस प्रकार हमने द्वितीय मास के लिए कुंडली बनाई, उसी प्रकार अन्य दस मासों के लिए कुंडलियां बना ली जाती हैं।

मासिक कुंडली में मुन्थ अंकन

जैसे पहले बताया गया है, पहले वर्ष मुन्था लग्न में उतने ही अंश कला पर होती है जितने अंश कला लग्न के होते हैं। प्रतिवर्ष मुन्था एक राशि आगे बढ़ती जाती है। इस प्रकार मुन्था एक वर्ष में 30^0 आगे बढ़ती है यानि एक मास में 2^0 30'।

वर्ष कुंडली अथवा प्रथम मासिक कुंडली में मुन्था वृश्चिक राशि में 2^0 50' पर स्थित मानी जाएगी तथा प्रतिमास इसके अंशों में 2^0 30' की वृद्धि होगी। क्योंकि वर्ष कुंडली में लग्न के 2^0 50' हैं इसलिए मुन्था के अंश भी 2^0 50' माने जाएंगे।

मुन्था के अंशों में निम्न सारिणी के अनुसार मासिक वृद्धि की जाएगी :

पूर्ण मास या मास क्रमांक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंश वृद्धि	$0^0$00'	$2^0$30'	$5^0$00'	$7^0$30'	$10^0$00'	$12^0$30'	$15^0$00'	$17^0$30'	$20^0$00'	$22^0$30'	$25^0$00'	$27^0$30'

द्वितीय मासिक कुंडली में

मुन्था =($7^{रा}$ 2^0 50′) (+) ($0^{रा}$ 2^0 30′) = ($7^{रा}$ 5^0 20′)

इसी प्रकार अन्य मासिक कुंडलियों में मुन्था के अंशों में वृद्धि अंकित करते जाएंगे। वर्ष के दौरान मुन्था की राशि में भी परिवर्तन संभव है।

मासेश

जिस प्रकार वर्ष कुंडली में वर्षेश का चयन किया जाता है उसी प्रकार मासिक कुंडली में मासेश का चयन होता है। वर्ष कुंडली में पांच अधिकारी ग्रहों में से वर्षेश चुना जाता है किंतु मासिक कुंडली में 6 अधिकारी ग्रह निम्न प्रकार होते हैं :

1. मासिक कुंडली का लग्नेश
2. जन्म लग्नेश
3. वर्ष लग्नेश
4. मुन्थेश
5. दिन रात्रि पति
6. त्रिराशिपति

इन सभी 6 ग्रहों का पंचवर्गीय बल निकाल कर, वर्षेश चयन नियमों के आधार पर ही मासेश का चयन किया जाता है।

मासिक मुद्दा दशा (विंशोत्तरी)

सूत्र = (गताब्ध x 12) (+) जन्म नक्षत्र संख्या (+) पूर्ण मास (–) 2

9

= शेष तुल्य सूर्य की दशा से गिनने पर

उदाहरण कुंडली के अनुसार

गताब्ध = 33 वर्ष, जन्म नक्षत्र संख्या = 10 (मघा)

पूर्ण मास = 2

मुद्दादशा मासिक = (33 x 12) + 10 + 2 – 2 = 406

9 9

= 45 शेष 1

अर्थात् सूर्य की मासिक मुद्दा दशा

= 1 दिन 12 घंटे

मासिक मुद्दा दशा समय निकालने के लिए हमें ग्रह के मुद्दा दशा काल को 12 से विभाजित करना होगा।

मासिक मुद्दा दशा (विंशोत्तरी)

ग्रह	मुद्दा दशा	मासिक मुद्दा दशा	
	दिन	दिन	घंटे
सूर्य	18	(18÷12)=1	12
चंद्र	30	(30÷12)=2	12
मंगल	21	(21÷12)=1	18
राहु	54	(54÷12)=4	12
गुरु	48	(48÷12)=4	00
शनि	57	(57÷12)=4	18
बुध	51	(51÷12)=4	06
केतु	21	(21÷12)=1	18
शुक्र	60	(60÷12)=5	00
योग	**360**	**30**	**00**

मासिक योगिनी मुद्दा दशा

सूत्र = (गताब्ध x 12) (+) जन्म नक्षत्र संख्या (+) पूर्ण मास (+) 3
8

= शेष तुल्य मंगला से गिनने पर

= (33 x 12) + 10 + 2 + 3 = 411
8 8

= 51 शेष 3

अर्थात् धान्या योगिनी = 2 दिन 12 घंटे

मासिक मुद्दा दशा (योगिनी) काल

क्रमांक	योगिनी	स्वामी	मुद्दा दशा दिन	मासिक मुद्दा दशा दिन	मासिक मुद्दा दशा घंटे
1	मंगला	चंद्र	10	0	20
2	पिंगला	सूर्य	20	1	16
3	धान्या	गुरु	30	2	12
4	भ्रामरी	मंगल	40	3	08
5	भद्रिका	बुध	50	4	04
6	उल्का	शनि	60	5	00
7	सिद्धा	शुक्र	70	5	20
8	संकटा	राहु	80	6	16
		योग	**360**	**30**	**00**

मासिक कुंडली विश्लेषण

वर्ष कुंडली का विश्लेषण जिस प्रकार किया जाता है ठीक उसी प्रकार से मासिक कुंडली से मास फल विचार किया जाता है। वर्ष कुंडली की ही तरह यहां भी ताजिक योगों, सहम, मुन्था, मुन्थेश, वर्षेश, मुद्दा दशाओं का विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त मासेश व मासिक मुद्दा दशाओं के कारण समय सीमा एक मास सीमित होती है। प्रत्येक मास के लिए मासिक कुंडली बदल जाती है।

अभ्यास प्रश्न

1. वर्ष कुंडली से मासिक कुंडलियां किस प्रकार बनाई जाती है? सूर्य स्पष्ट, मासिक प्रवेश समय निर्धारित करने की प्रक्रिया का विस्तार से उल्लेख करें।
2. मासिक कुंडलियां बनाने का क्या उपयोग है? मासिक कुंडली में मुन्था अंकन किस प्रकार किया जाता है?
3. मासेश चयन कितने व कौन से अधिकारी ग्रहों में से किया जाता है तथा चयन का आधार क्या होता है?
4. मासिक मुद्दा दशायें (विंशोत्तरी) निकालने का क्या सूत्र हें ? सभी ग्रहों की मासिक मुद्दा दशाओं का समय बताएं।
5. मासिक योगिनी मुद्दा दशाएं किस प्रकार निकाली जाती है? एक उदाहरण की सहायता से समझाएं। गताब्ध 30 वर्ष, जन्म नक्षत्र संख्या 15 तथा पूर्ण मास 5 मानें।
6. मासिक कुंडली से फल विचार किस प्रकार करते हैं? आपके विचार से वर्ष कुंडली की तुलना में मासिक कुंडली का कितना महत्व है ?

16. दैनिक कुंडली तथा होरा कुंडली

दैनिक कुंडली

जिस एक वर्ष के लिए 12 मासिक कुंडलियां बनाई जाती है उसी प्रकार पूरे वर्ष के लिए 360 दैनिक कुंडलियां बना ली जाती है। यहां भी आधार जन्म कुंडली का सूर्य स्पष्ट ही होता है। सूर्य की गति प्रतिदिन 1^0 होती है, इस प्रकार 360 दिन के सावन वर्ष में सूर्य सभी 12 राशियों का भ्रमण पूर्ण करता है।

हमारी उदाहरण कुंडली में सूर्य स्पष्ट = $3^{रा}$ 14^0 45′

- पहले दिन की दैनिक कुंडली तथा वर्ष कुंडली एक ही होंगी।
- दूसरे दिन के लिए सूर्य स्पष्ट = $3^{रा}$ 15^0 45′ लेकर दैनिक प्रवेश समय निकाला जाएगा तथा उसी के आधार पर कुंडली बना ली जाएगी।
- तीसरे दिन सूर्य स्पष्ट 1^0 अधिक लेकर यानि $3^{रा}$ 16^0 45′ के आधार पर दैनिक प्रवेश समय निश्चित करके दैनिक कुंडली बनाई जाएगी।
- इस प्रकार पूरे वर्ष के लिए 360 कुंडलियां बना ली जाती हैं।

दैनिक मुन्था अंकन

एक वर्ष अथवा 360 दिन में मुन्था 30^0 आगे बढ़ जाती है, अर्थात मासिक गति 2^0 30′ तथा दैनिक गति 5 कला। इस आधार पर दैनिक कुंडली में अगले दिन से 5 कला प्रतिदिन की दर से मुन्था के अंशों में परिवर्तन कर लिया जाता है।

दिनेश

वर्ष कुंडली में जिस प्रकार वर्षेश तथा मासिक कुंडली में मासेश का चयन किया जाता है, ठीक उसी प्रकार से निम्नलिखित सात अधिकारी ग्रहों में से पंचवर्गीय बल तथा वर्षेश चयन के नियमों का पालन करते हुए दैनिक कुंडली में दिनेश का चयन किया जाता है :

1. जन्म लग्नेश
2. वर्ष लग्नेश
3. मासिक कुंडली का लग्नेश
4. दैनिक कुंडली का लग्नेश
5. मुन्थेश
6. त्रिराशिपति
7. दिन रात्रि पति

दैनिक कुंडली विश्लेषण

वर्ष कुंडली या मासिक कुंडली के लिए जो आधारभूत नियम लागू होते हैं, वही नियम दैनिक कुंडली से फल विचार करते समय भी ध्यान में रखे जाते हैं। किंतु दैनिक कुंडली बनाने का उद्देश्य किसी विशेष प्रश्न का उत्तर जानने के लिए किया जाता है।

- यदि लग्नेश व कार्येश शुभ ताजिक योग बनाते हों तो उस दिन घटना घट जाती है।
- यदि उस दिन कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना हो तो देख लें मुन्था 4, 7, 6, 8, 12 भाव में नहीं होनी चाहिए।
- यदि वर्ष, मासिक व दैनिक कुंडली के लग्नेश सभी त्रिक भावों में स्थित हों तो उस दिन जातक की मृत्यु तुल्य कष्ट भोगना पड़ेगा।
- चुनाव परिणाम ज्ञात करने के लिए प्रायः दैनिक कुंडली का प्रयोग किया जाता है।

होरा कुंडली

मासिक व दैनिक कुंडलियों के अतिरिक्त होरा कुंडली भी बनाई जाती है।

एक मास में = 12 होरा

एक होरा = 2½ दिन (औसतन)

एक वर्ष में = 144 होरा कुंडली

मास प्रवेश समय को आधार बनाकर उसमें 2 दिन 12 घंटे का समय जोड़ते हुए एक मास में 12 होरा कुंडली बन जाती है। अगले मास प्रवेश से गिनकर उस मास की 12 होरा कुंडलियां बन जाती है। सही समय निकालने के लिए एक मास के कुल दिन, घंटे व मिनट लेकर 12 से भाग करने पर प्रत्येक होरा का निश्चित समय ज्ञात हो जाएगा।

प्रत्येक होरा में मुन्था 12'30" बढ़ती जाएगी।

12 मास में मुन्था गति = 30^0

1 मास में मुन्था गति = $30^0 \div 12 = 2° 30' = 150'$

एक मास में होरा कुंडली = 12

प्रत्येक होरा में मुन्था गति = 150÷ 12 = 12'-30"

यह जोड़ मास प्रवेश की मुन्था के अंशों में किया जाता है। जिस प्रकार मासेश व दिनेश निकालने का प्रावधान है, उसी प्रकार 'होरेश' का भी चयन किया जाता है। यहां भी दैनिक कुंडली की ही तरह से सात अधिकारी ग्रहों में से होरेश का चयन किया जाता है किंतु इन सात ग्रहों में से दिनेश के स्थान पर होरा लग्नेश को लिया जाता है।

होरा कुंडली विश्लेषण के लिए भी उन सभी सामान्य निर्देशों का पालन किया जाता है जो वर्ष कुंडली विश्लेषण के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. वर्ष कुंडली से दैनिक कुंडली किस प्रकार बनाई जाती है? इनका क्या विशेष उपयोग किया जाता है? विस्तार से समझाएं।

2. दैनिक कुंडली में मुन्था अंकन किस प्रकार किया जाता है? कितनी दैनिक कुंडलियां बनाने का चलन है? वर्ष कुंडली तथा प्रथम दैनिक कुंडली में क्या अंतर है?

3. दैनिक कुंडली में दिनेश का चयन किस आधार पर किया जाता है? नियमों का उल्लेख करें तथा सभी अधिकारी ग्रहों का नाम लिखें।

4. दैनिक कुंडली का विश्लेषण किस प्रकार किया जाता है तथा विशेष रूप से दिन की शुभता किस प्रकार निश्चित की जाती है?

5. होरा कुंडली से आप क्या समझते हैं ? एक वर्ष में कितनी होरा कुंडलियां बनायी जाती हैं? मन्था नयन किस आधार पर किया जाता है? होरेश का चयन कौन से अधिकारी ग्रहों में से किया जाता है?

17. वर्षफल प्रयोग
कुछ उदाहरण

अमिताभ बच्चन – प्रसिद्ध अभिनेता

घटना : 11 अक्तूबर 2008, अपने जन्म दिन पर अचानक बीमार पड़े।

जन्मकालिक कुंडली

जन्म विवरण : 11 अक्तूबर 1942, 16.00 बजे, इलाहाबाद

लग्न	कुंभ	01° 57'
सूर्य	कन्या	24° 23'
चंद्र	तुला	10° 19'
मंगल (अ)	कन्या	22° 36'
बुध(व) (अ)	कन्या	23° 39'
गुरु	कर्क	00° 32'
शुक्र (अ)	कन्या	15° 11'
शनि (व)	वृष	19° 14'
राहु	सिंह	10° 25'
केतु	कुंभ	10° 25'

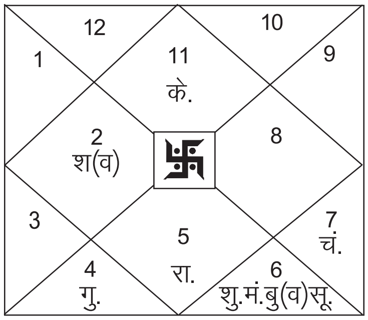

वर्ष कुंडली

वर्ष प्रवेश : शनिवार 11 अक्तूबर 2008, 14.09.56 बजे, इलाहाबाद

लग्न	मकर	00° 34'
सूर्य	कन्या	24° 23'
चंद्र	कुंभ	09° 21'
मंगल (अ)	तुला	10° 51'
बुध(व) (अ)	कन्या	15° 25'
गुरु	धनु	20° 15'
शुक्र	तुला	26° 58'
शनि	सिंह	22° 28'
राहु	मकर	22° 45'
केतु	कर्क	22° 45'

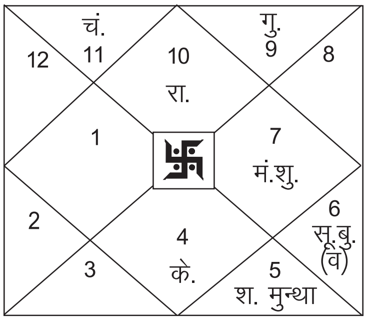

वर्षेश	:	बुध
जन्म कालिक दशा	:	के–शु–रा
मुद्दा दशा	:	बु–बु
रोग सहम	:	सिंह राशि

बीमार पड़ने के ज्योतिषीय कारण

1. जन्म कालिक दशा : केतु शुक्र राहु (3.9.08 से 6.11.08)
   - केतु लग्न में शत्रु राशि में स्थित, चंद्र पर दृष्टि
   - शुक्र अष्टम में अष्टमेश बुध, तृतीयेश मंगल, सप्तमेश सूर्य के साथ स्थित, अस्त, जन्म लग्नेश शनि का राशीश
   - राहू मारक स्थान में, शत्रु सूर्य की राशि, राशीश सूर्य अष्टम में
2. मुन्था अष्टम में वर्ष तथा जन्म लग्नेश शनि से युत
3. वर्षेश बुध (व) अष्टमेश सूर्य से युत नवम में, वक्री होने के कारण अष्टम में भी आंशिक स्थिति
4. सूर्य मुन्थेश भी, अष्टमेश भी
5. रोग सहम सिंह राशि 13° 41', अर्थात् अष्टम भाव में जन्म/ वर्ष लग्नेश से युत
6. रोग सहमेश सूर्य, अष्टमेश भी
7. मुद्दा दशा (विंशोत्तरी) बुध–बुध (11.10.08 से 17.10.08 तक), बुध वक्री तथा वर्ष षष्ठेश भी
8. इत्थशाल व रद्द योग : चंद्र–मंगल, गुरु–शनि (गुरु 12 तथा शनि 8 भाव में)

मासिक कुंडली फरवरी , 2009 (7.2.2009, 07.07 घंटे) में भी मुन्था व लग्नेश शनि (व) अष्टम भाव में सिंह राशि में पुनः होंगे। मासिक कुंडली मई, 2009 (9.5.2009, 03.00 घंटे) फिर मुन्था व लग्नेश शनि (व) की युति सप्तम भाव सिंह राशि में होने के कारण स्वास्थ्य हानि दर्शाती है।

इन्दिरा गांधी – पूर्व प्रधानमंत्री

घटना : 31 अक्तूबर 1984 को हत्या

जन्मकालिक कुंडली

जन्म विवरण : 19 नवंबर 1917, 23.11 बजे, इलाहाबाद

लग्न	कर्क	27° 22'
सूर्य	वृश्चिक	04° 08'
चंद्र	मकर	05° 35'
मंगल	सिंह	16° 23'
बुध (अ)	वृश्चिक	13° 14'
गुरु (व)	वृष	15° 00'
शुक्र	धनु	21° 00'
शनि	कर्क	21° 47'
राहु	धनु	09° 12'
केतु	मिथुन	09° 12'

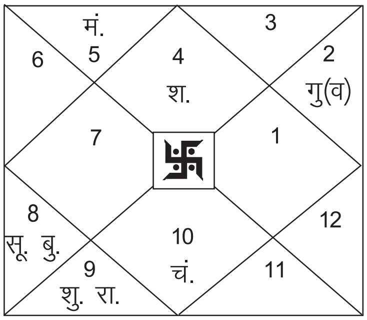

वर्ष कुंडली

वर्ष प्रवेश : सूर्य के भोगांश से : 20 नवंबर 1983, रविवार 21.22.37 बजे, इलाहाबाद

लग्न	कर्क	03° 45'
सूर्य	वृश्चिक	04° 08'
चंद्र	वृष	05° 53'
मंगल	कन्या	07° 41'
बुध (अ)	वृश्चिक	16° 00'
गुरु	वृश्चिक	22° 58'
शुक्र	कन्या	18° 20'
शनि	तुला	16° 03'
राहु	वृष	22° 17'
केतु	वृश्चिक	22° 17'

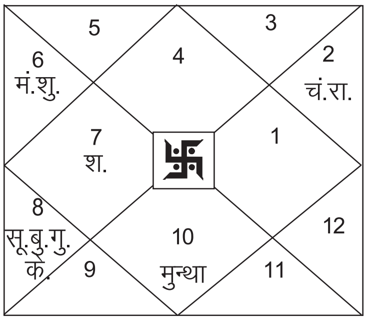

वर्ष लग्न	:	द्विजन्मा
जन्म कालिक दशा	:	श–रा–श. (योगिनी : संकटा)
मुद्दा दशा	:	राहु
अपमृत्यु सहम	:	कुंभ
मृत्यु सहम	:	कर्क

मृत्यु के ज्योतिषीय कारण

1. जन्म कालिक दशा : शनि–राहु–राहु (26.6.84 से 3.5.87)
   - राहु नीच राशि का त्रिक भाव षष्ठ में जो हिंसा का भी भाव है।
   - शनि सप्तमेश व अष्टमेश होकर मारकेश है।
   - योगिनी दशा भी संकटा (राहु) 13.7.84 से 23.4.86 तक अशुभ थी।
2. जन्म लग्न व वर्ष लग्न एक ही था (कर्क) जिसे द्विजन्मा तथा संकटपूर्ण वर्ष माना जाता है।
3. मुद्दा दशा भी राहु की ही थी (14.10.84 से 21.11.84 तक)
4. मुन्था सप्तम में तथा मुन्थेश शनि चतुर्थ में अर्थात अति अशुभ स्थिति में मुन्था भी तथा मुन्थेश भी।
5. जन्म व वर्ष लग्नेश चंद्र की एकादश में राहु के साथ युति स्वयं में अशुभ थी।
6. राहु के अतिरिक्त चंद्र पर द्वितीयेश/मारक सूर्य, द्वादशेश व तृतीयेश बुध तथा षष्ठेश गुरु की शत्रु दृष्टि थी। मुन्था पर पापी ग्रह मंगल व राहु की दृष्टि थी। चंद्र पर पापी ग्रह मंगल की दृष्टि तथा चंद्र राशीश शुक्र तृतीय भाव में नीच राशि का था।
7. चंद्र व सूर्य में इशराफ तथा चंद्र व मंगल में रद्द योग बना हुआ था।
8. मृत्यु सहम कर्क राशि (11° 41') में, यानि लग्न में पड़ता था तथा सहमेश चंद्र बुरी तरह पीड़ित था।
9. अपमृत्यु सहम कुंभ राशि (9° 55') में, यानि अष्टम भाव में पड़ रहा था तथा शनि की दशम दृष्टि लग्न पर थी। शनि दोनों कुंडलियों से अष्टमेश है तथा उसी की महादशा थी।

घटना : लेखक की परिचित इस कन्या का विवाह 22 फरवरी 2008 को संपन्न हुआ।

जन्मकालिक कुंडली : जन्म विवरण : 20 अक्तूबर 1982, 18.05 बजे, दिल्ली

लग्न	मेष	10° 25'
सूर्य	तुला	03° 11'
चंद्र	वृश्चिक	14° 20'
मंगल	वृश्चिक	27° 57'
बुध	कन्या	15° 30'
गुरु	तुला	22° 00'
शुक्र	कन्या	29° 28'
शनि	तुला	01° 45'
राहु	मिथुन	13° 04'
केतु	धनु	13° 04'

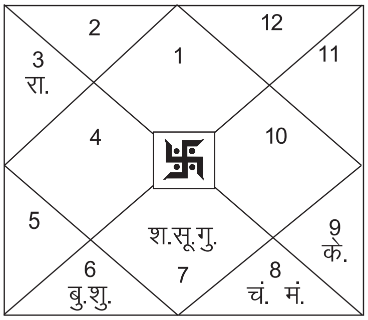

वर्ष कुंडली : वर्ष प्रवेश : सूर्य के अंश से : 21 अक्तूबर 2007, 03.55.06 घंटे, दिल्ली

लग्न	सिंह	29° 25'
सूर्य	तुला	03° 11'
चंद्र	मकर	22° 07'
मंगल	मिथुन	14° 26'
बुध	तुला	09° 58'
गुरु	वृश्चिक	23° 33'
शुक्र	सिंह	16° 56'
शनि	सिंह	11° 33'
राहु	कुंभ	11° 47'
केतु	सिंह	11° 47'

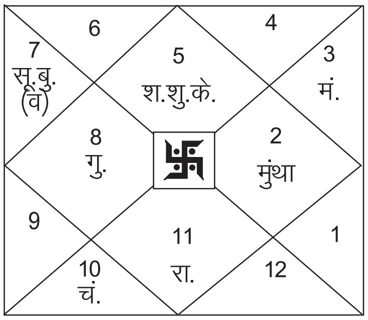

वर्षेश/सप्तमेश : शनि
जन्म कालिक दशा : के–श–बु
मुन्थेश/विवाह सहमेश : शुक्र

विवाह के योग

1. जन्मकालिक विंशोत्तरी दशाः केतु–शनि–बुध
   केतु की दृष्टि लग्न पर, शनि सप्तम में स्थित, बुध की सप्तमेश शुक्र से युति
2. वर्षेश शनि, वर्ष कुंडली का सप्तमेश, लग्न में स्थित
3. मुद्दा दशा : शनि –शुक्र (18.2.08 से 22.2.08)
4. मुन्था दशम भाव में, शुक्र की राशि में
5. वर्ष लग्नेश सूर्य व सप्तमेश शनि में इत्थशाल
6. मुन्थेश शुक्र लग्न में सप्तमेश/वर्षेश शनि के साथ स्थित है।
7. विवाह सहम : तुला 04°48' 46' विवाह सहमेश : शुक्र, शुक्र : लग्न में सप्तमेश व वर्षेश शनि से युत।

घटना : लेखक की परिचित इस कन्या को 22 अप्रैल 2001 को 00.24 बजे पुत्र संतान प्राप्त हुई।

जन्मकालिक कुंडली :

जन्म विवरण : 31 जुलाई 1973, 20.15 बजे, दिल्ली

लग्न	कुंभ	05° 18'
सूर्य	कर्क	14° 45'
चंद्र	सिंह	09° 36'
मंगल	मेष	00° 49'
बुध	मिथुन	29° 24'
गुरु (व)	मकर	13° 34'
शुक्र	सिंह	14° 23'
शनि	मिथुन	06° 22'
राहु	धनु	13° 53'
केतु	मिथुन	13° 53'

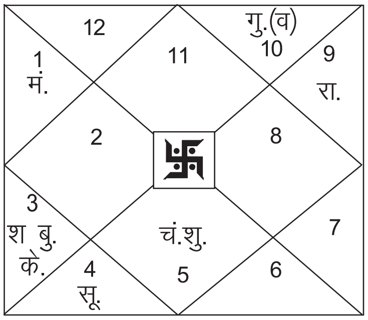

वर्ष कुंडली :

वर्ष प्रवेश : 31 जुलाई 2000, 18.18.30 बजे, दिल्ली

लग्न	मकर	00° 46'
सूर्य	कर्क	14° 45'
चंद्र	कर्क	20° 51'
मंगल	कर्क	05° 48'
बुध	मिथुन	25° 43'
गुरु	वृष	12° 00'
शुक्र	कर्क	28° 31'
शनि	वृष	05° 32'
राहु	कर्क	00° 46'
केतु	मकर	00° 46'

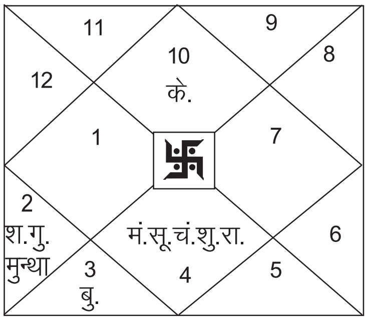

वर्षेश : चंद्रमा

जन्मकालिक विंशोत्तरी दशा : सूर्य–शुक्र–शनि

मुद्दा दशा (विंशोत्तरी) : शनि–शनि

पुत्र सहमेश / पंचमेश : शुक्र

पुत्र प्राप्ति के कारण

1. जन्मकालिक महादशा स्वामी सूर्य : चंद्र कुंडली का लग्नेश
   अंतर्दशा स्वामी शुक्र : जन्मकुंडली का नवमेश
   प्रत्यंतरदशा स्वामी शनि : जन्म कुंडली के पंचम भाव में स्थित, चंद्र कुंडली से पंचम पर दृष्टि
2. मुन्था पंचम भाव में।
3. पंचम भाव में वर्ष लग्नेश तथा जन्म लग्नेश शनि की संतानकारक गुरु से युति।
4. मुन्थेश शुक्र पंचमेश भी।
5. वर्षेश चंद्र व पंचमेश शुक्र में इत्थशाल, सप्तम भाव में।
6. मुद्दा दशा : शनि–शनि, शनि वर्ष लग्नेश होकर पंचम भाव में मुन्था के साथ।
7. पुत्र सहम : तुला 21°56'
   पुत्र सहमेश शुक्र ही पंचमेश भी तथा वर्षेश चंद्रमा के साथ इत्थशाल योग में।

भाग–2 उपग्रह

उपग्रह अथवा अप्रकाश ग्रह

Sub-Planets or Non- Luminous Planets

जिस प्रकार राहु–केतु ग्रह पिंड न होकर क्रांति वृत पर संवेदनशील बिंदु हैं उसी प्रकार ज्योतिष में हमारे ऋषियों ने अनेक अन्य संवेदनशील बिंदुओं की भी गणना की जिनका हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ता है। उपग्रह भी इसी प्रकार के गणितीय बिंदु हैं जिनका प्रायः अशुभ अथवा ऋणात्मक प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है। शुभ ग्रहों के उपग्रहों का सामान्य रूप से शुभ प्रभाव माना गया है। जैसे यमघण्टक (गुरु) तथा अर्ध प्रहार (बुध) शुभ उपग्रहों की श्रेणी में आते हैं। ऐसे सामान्यतया 10 उपग्रहों की व्याख्या की गई है जिनके नाम इस प्रकार है :–

धूमादि उपग्रह

1. धूम
2. व्यतिपात
3. परिधि/परिवेश
4. इन्द्र चाप
5. उपकेतु/शिखी

(उपरोक्त पांचों उपग्रह सूर्य स्पष्ट से सापेक्ष हैं)

गुलिकादि उपग्रह

6. काल : पुत्र–सूर्य
7. अर्द्ध प्रहार : पुत्र–बुध
8. यमघंटक : पुत्र–गुरु
9. गुलिक/मांदी : पुत्र–शनि
10. मृत्यु / यम पुत्र–मंगल

गणना

1. धूमादि उपग्रह

जन्म के समय सूर्य से दस नक्षत्र ($4^{रा}$ 13^0 20') आगे धूम पड़ता है। मीनांत से धूम के बराबर पीछे जाने पर व्यतिपात आ जाता है। व्यतिपात के ठीक सामने 180^0 पर परिधि स्थित है। शून्य मेष से परिधि जितना आगे है उतने अंश मीनांत से पीछे जाते हैं तो इन्द्र चाप आता है। सूर्य स्पष्ट से ठीक एक राशि पहले उपकेतु स्थित है।

माना सूर्य स्पष्ट (29 अगस्त 2007 प्रातः 5:30 बजे, स्थान दिल्ली)।

= 4रा 11° 20'	=		$4^{रा}$	11°	20'	
जमा स्थिरांक = 10 नक्षत्र (अर्थात $4^{रा}$ 13° 20')		(+)	$4^{रा}$	13°	20'	
1. धूम स्पष्ट	=		$8^{रा}$	24°	40'	(धनु राशि)
12 राशि में से धूम घटाने पर			$12^{रा}$	00°	00'	
		(–)	$8^{रा}$	24°	40'	
2. व्यतिपात स्पष्ट			$3^{रा}$	05°	20'	(कर्क राशि)
	=		$3^{रा}$	05°	20'	
व्यतिपात में 6 राशि जोड़ने पर		(+)	$6^{रा}$	00°	00'	
3. परिधि स्पष्ट	=		$9^{रा}$	05°	20'	(मकर राशि)
	=		$12^{रा}$	00°	00'	
12 राशि में से परिधि घटाने पर		(–)	$9^{रा}$	05°	20'	
4. इंद्रचाप स्पष्ट	=		$2^{रा}$	24°	40'	(मिथुन राशि)
इंद्रचाप में पूर्व स्थिरांक का	=		$2^{रा}$	24°	40'	
1/8 भाग (10 नक्षत्र÷8)		(+)	$0^{रा}$	16°	40'	
अर्थात $0^{रा}$ 16°40' जोड़ने पर						
5. उपकेतु / शिखी	=		$3^{रा}$	11°	20'	(कर्क राशि)
	=		$3^{रा}$	11°	20'	
उपकेतु में एक राशि जोड़ने पर		(+)	$1^{रा}$	00°	00'	
पुनः सूर्य स्पष्ट	=		$4^{रा}$	11°	20'	

इस प्रकार किसी भी कुंडली में उपरोक्त 5 उपग्रहों की गणना की जा सकती है। ये सभी संवेदनशील गणितीय बिंदु सूर्य स्पष्ट के आधार पर निकाले जाते हैं। अन्य 5 उपग्रहों की गणना का आधार भिन्न है जैसे आगे बताया जा रहा है।

2. गुलिकादि उपग्रह गणना

- इनकी गणना के लिए वार वेला का उपयोग किया जाता है। वार वेला दिनमान अथवा रात्रिमान के आठवें (1/8) भाग को कहते हैं।

- सूर्योदय के पश्चात पहली वार वेला उस दिन पड़ने वाले वार के स्वामी ग्रह की होती है तथा अन्य 6 वेलाएं क्रमशः अन्य वारेशों की। आठवीं वार वेला का कोई स्वामी नहीं होता है।
- सूर्योदय से सूर्यास्त तक का दिनमान होरात्मक (घंटे, मिनट) अथवा घटयात्मक (घटी, पल) किसी भी प्रकार निकाला जा सकता है।
- रात्रिमान के लिए 24 घंटे अथवा 60 घटी में से दिनमान घटा देते हैं। रात्रि की वेलाएं सूर्यास्त से प्रारंभ होती है।
- **जन्म समय दिन का हो तो दिनमान की वार वेला लें तथा रात्रि का हो तो रात्रिमान की वार वेला लें।**
- याद रखें रात्रिमान की पहली वार वेला वारेश से पांचवीं होती है तथा उसके बाद की क्रमशः अन्य वारेशों की। रात्रि की आठवीं वार वेला का भी कोई स्वामी नहीं होता।

अब हम गुलिकादि उपग्रहों की गणना एक उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट करते हैं।

माना जातक का जन्म दिनांक 29.8.2007 (बुधवार) जन्म समय प्रातः 10.30 बजे, स्थान : दिल्ली

			घं.	मि.	
29.8.2007 का सूर्य अस्त समय	=		18	43	
29.8.2007 का सूर्य उदय समय	=	(–)	06	01	
29.8.2007 का दिनमान	=		12	42	
एक वार वेला (12–42÷8)	=		01	35	
सूर्य उदय	=		06	01	
		(+)	01	35	
पहली वार वेला बुध की			07	36	तक अर्द्ध प्रहार
		(+)	01	35	
दूसरी वार वेला गुरु की			09	11	तक यमघण्टक
		(+)	01	35	
तीसरी वार वेला शुक्र की	=		10	46	(रिक्त)
		(+)	01	35	
चौथी वार वेला शनि की	=		12	21	गुलिक/मान्दी
		(+)	01	35	

पांचवी वार वेला सूर्य की	=		13	56	तक काल
		(+)	01	35	
छठी वार वेला चंद्र की	=		15	31	(रिक्त)
		(+)	01	35	
सातवीं वार वेला मंगल की	=		17	06	तक यम/मृत्यु
		(+)	01	35	
आठवीं वार वेला स्वामी रहित	=		18	41	अर्थात सूर्यास्त

यदि जन्म रात्रि में होता तो रात्रिमान = 24 घंटे (–) दिनमान

			घं.	मि.	
= 24(–)12:42	=		11	18	
एक वार वेला = 11:18÷8	=		01	25	
सूर्यास्त	=		18	43	
पहली वार वेला (बुध से 5वां वारेश) सूर्य		(+)	01	25	
			20	08	तक काल उपग्रह
दूसरी वार वेला चंद्र की		(+)	01	25	
			21	33	(रिक्त)
तीसरी वार वेला मंगल की		(+)	01	25	
			22	58	तक यम/मृत्यु
चौथी वार वेला बुध की		(+)	01	25	
			00	23	तक अर्द्ध प्रहार
पांचवीं वार वेला गुरु की		(+)	01	25	
			01	48	तक यम घण्टक
छठी वार वेला शुक्र की		(+)	01	25	
			03	13	(रिक्त)
सातवीं वार वेला शनि की		(+)	01	25	
			04	38	तक गुलिक/मान्दी
आठवीं वार वेला स्वामी रहित		(+)	01	25	
			06	03	सूर्योदय

उपग्रह अंकन

उपग्रह को जन्म कुंडली में अंकित करने के लिए उपग्रह के स्वामी का लग्न स्पष्ट करके राशि ज्ञात करते हैं। समय के बारे में विद्वानों में मतांतर हैं। कोई वार वेला का प्रारंभ, कोई मध्य तथा कोई अंत अथवा समाप्ति काल का अनुमोदन करते हैं। श्री बी.वी. रमण समाप्ति काल के पक्ष में है। समाप्ति काल के अनुसार यदि समय लिया जाए तथा लग्न निकाला जाए तो विभिन्न उपग्रहों की राशियां निम्न प्रकार होंगी :—

दिनांक 29.8.2007, स्थान दिल्ली, वार वेला रात्रि, समाप्ति काल पर आधारित

घं	मि.	उपग्रह	लग्न			राशि
20	08	काल	11रा	11^0	40′	मीन
22	58	यम/मृत्यु	01रा	06^0	23′	वृष
00	23	अर्द्ध प्रहार	01रा	28^0	04′	वृष
01	48	यमघण्टक	02रा	17^0	30′	मिथुन
04	38	गुलिक	03रा	24^0	01′	कर्क

जन्म कुंडली की उपरोक्त राशियों में उपग्रहों को अंकित कर दिया जाएगा। यदि जन्म समय दिन का लिया जाए तो वार वेला व समाप्ति काल दिनमान के अनुसार निकालना होगा।

मान्दी : कुछ विद्वान मान्दी को गुलिक से अलग मानकर उसकी गणना करते हैं।

यदि 30 घटी का दिनमान व रात्रिमान हो तथा दिन का जन्म हो तो मान्दी का उदय इस प्रकार होगाः

26 घटी की समाप्ति पर सूर्योदय से	रविवार को
22 घटी की समाप्ति पर	सोमवार को
18 घटी की समाप्ति पर	मंगलवार को
14 घटी की समाप्ति पर	बुधवार को
10 घटी की समाप्ति पर	गुरुवार को
6 घटी की समाप्ति पर	शुक्रवार को
2 घटी की समाप्ति पर	शनिवार को

रात्रि का जन्म हो तो

10 घटी सूर्यास्त से	रविवार को
6 घटी सूर्यास्त से	सोमवार को
2 घटी सूर्यास्त से	मंगलवार को
26 घटी सूर्यास्त से	बुधवार को
22 घटी सूर्यास्त से	गुरुवार को
18 घटी सूर्यास्त से	शुक्रवार को
14 घटी सूर्यास्त से	शनिवार को

क्योंकि 30 घटी का दिनमान/रात्रिमान वर्ष में केवल दो बार अथवा कुछ दिनों के लिए ही संभव होता है अतः मांदी के उदय का समय निश्चित करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग वांछित है :–

(अ) जन्म समय दिन में

$\frac{\text{दिनमान (घटीपल में)}}{30}$ x26 अथवा 22, 18, 14, 10, 6, 2

क्रमशः रविवार से शनिवार तक

(ब) जन्म समय रात्रि में

$\frac{\text{रात्रिमान (घटीं)}}{30}$ x10 अथवा 6, 2, 26, 22, 18, 14

क्रमशः रविवार से शनिवार तक

मान्दी के समय की गणना करने के पश्चात उस समय व दिनके आधार पर कुंडली बना ली जाती है अथवा पंचांग से लग्न सारिणी के आधार पर लग्न देख लिया जाता है। जो राशि लग्न में पड़ती है, जन्म कुंडली की उसी राशि में मान्दी उपग्रह अंकित कर दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे गुलिकादि की राशियां निकाली गई हैं।

3. प्राणपद

एक प्राण पद राशि (30^0) का मान 15 पल या विघटि होता है जबकि एक पल 24 सैकंड का होता है। इसका अर्थ है एक पल = 2^0 प्राणपद। प्राणपद राशि निकालने के लिए इष्ट काल ज्ञात होना चाहिए।

इष्टकाल = जन्म समय (–) सूर्योदय समय

घंटे मिनट के इष्ट काल को घटी पल में परिवर्तित कर लें।

1 घंटा = 2½ घटी, 1 घटी = 60 पल, 1 घटी = 24 मिनट, 1 मिनट = 2½ पल

इसके पश्चात् इष्ट काल के पलों को 2 से गुणा करके अंश बना लें। अंशों को 30^0 से भाग कर राशियों में परिवर्तित कर लें। 12 या अधिक राशि होने पर उसमें से 12 गुणक घटा दें। इस प्रकार प्राप्त अंशों से प्राणपद की राशि निम्न नियम के आधार पर ज्ञात की जाती हैः

(i) यदि सूर्य चर राशि में हो तो **प्राप्त अंश (+) सूर्य के भोगांश**

(ii) यदि सूर्य स्थिर राशि में हो तो **प्राप्त अंश (+) सूर्य के भोगांश (+) 240°**
(अर्थात सूर्य से नवां भाव)

(iii) यदि सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तो **प्राप्त अंश (+) सूर्य के भोगांश (+) 120°**
(अर्थात सूर्य से पंचम भाव)

12 राशियों के गुणक घटाकर प्राणपद की राशि व अंश निकालें।

अब एक उदाहरण की सहायता से प्राणपद की उपरोक्त प्रक्रिया करते हैं।

जन्म दिनांक : 29.8.2007, जन्म समय : 10.30 प्रातः, स्थान : दिल्ली, सूर्योदय समय : 06.01 प्रातः

		घं.	मि.	
इष्टकाल (घं.मि.) :		10	30	
	(−)	06	01	
		04	29	
		04	29	00
	(+)	04	29	00
	(+)	02	14	15
इष्टकाल (घटी पल)		11	12	15
इष्टकाल (पल)	=	672.25 पल		
		x2		
		1344.50 अंश		
30° से भाग देने पर			44रा	24.5°
12 के गुणक घटाने पर	(−)	36		
		8रा	24.5°	

[(11x60)+12.25 = 672.25]

सूर्य स्पष्ट 4रा 11° 32'

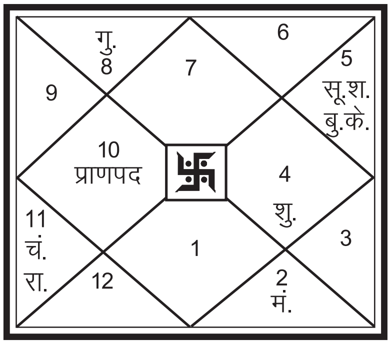

जन्म कुंडली

अर्थात धनु राशि 24.5°

कुंडली में सूर्य सिंह राशि में है यानि स्थिर राशि

प्राणपद = प्राप्त अंश (+) सूर्य स्पष्ट + 240°

			रा	°	'
प्राप्त राशि अंश	=		08	24	30
सूर्य स्पष्ट	=	(+)	04	11	32
240°	=	(+)	08	00	00
			21	06	02
12 राशि घटाने पर		(−)	12	00	00
प्राण पद	=		09	06	02

प्राणपद = मकर राशि 06° 02'

जन्म कुंडली की मकर राशि में प्राणपद अंकित किया जायेगा।

उपग्रहों की उच्च/नीच राशियां

अप्रकाश ग्रहों अथवा उपग्रहों की उच्च, नीच तथा स्वराशि निम्न प्रकार मानी जाती है (जातक अलंकार–कीरनुरू नटराज)

उपग्रह	उच्च राशि	नीच राशि	स्वराशि
धूम	सिंह	कुंभ	मकर
व्यतिपात	वृश्चिक	वृष	मिथुन
परिवेश	मिथुन	धनु	–
इन्द्रचाप	धनु	मिथुन	कर्क
उपकेतु	कुंभ	सिंह	कर्क
गुलिक (शनि)	–	–	कुंभ
यमघंटक (गुरु)	–	–	धनु
अर्द्धप्रहार (बुध)	–	–	मिथुन
काल (सूर्य)	–	–	मकर
मृत्यु (मंगल)	–	–	वृश्चिक

उपरोक्त से स्पष्ट है कि जो सूर्यादि ग्रहों की उच्च/नीच राशियां हैं, वे उपग्रहों की उच्च/नीच राशियों से भिन्न हैं (धूमादि)। दूसरे गुलिकादि उपग्रहों की स्वराशियां उनसे संबंधित ग्रहों की ही स्वराशियां हैं सिवाय काल के जिसका ग्रह तो सूर्य है किंतु स्वराशि शनि की है।

उपग्रहों का प्रभाव

बृहत पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार अप्रकाश ग्रहों अथवा उपग्रहों के फल संक्षिप्त में आगे दिए जा रहे हैं :–

गुलिक : शनि के समान

काल : राहु के समान

अर्द्ध प्रहार : बुध के समान

यमघण्टक : गुरु के समान

मृत्यु : मंगल के समान

जिन ग्रहों की राशियों में कोई उपग्रह आता है, उस राशि स्वामी की दशा/अंतर्दशा में उपग्रह के भी शुभाशुभ फल जातक को प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त उपग्रहों में गुलिक, काल तथा मृत्यु के फल अशुभ ग्रहों के समान ही होंगे जबकि अर्द्धप्रहार

तथा यमघण्टक क्रमशः बुध तथा गुरु के समान शुभ फलदायक होंगे। गुलिक को सबसे अधिक अशुभ माना गया है जिसके फल भावानुसार तथा ग्रहों की युतिनुसार आगे दिए गए हैं।

विभिन्न भावों में गुलिक के फल

गुलिक को शनि का पुत्र माना जाता है तथा उपग्रहों में सबसे अधिक पापी कहा जाता है। अन्य पापी ग्रहों की तरह 3, 6, 11 भावों में इसकी स्थिति शुभ फल देती है। विभिन्न भावों में गुलिक के फल निम्न प्रकार हैं :–

प्रथम भाव	:	मूर्ख, चिड़चिड़ा स्वभाव, रोगी, पापी, कामी।
द्वितीय भाव	:	धनहीन, व्यभिचारी, नीच, लज्जाहीन, दुःखी।
तृतीय भाव	:	सुन्दर, स्वस्थ, दीर्घायु, राज्य सम्मान, नेता, उच्च पद, किंतु बंधु रहित।
चतुर्थ भाव	:	सुख साधन विहीन, रोगी, वात–पित्त विकार, पापी।
पंचम भाव	:	अधार्मिक, अनैतिक, अल्पायु, नपुंसक, ईर्ष्यालु, स्त्रीवश, संतान सुख विहीन, दूसरों की बुराई, चुगली करने वाला ।
षष्ठ भाव	:	स्वस्थ, शत्रुजित, आकर्षक व्यक्तित्व, साहसी, दयालु, स्त्रियों में लोकप्रिय।
सप्तम भाव	:	जीवन साथी के वश में, पापी, मूर्ख, मित्र विहीन, स्त्री की कमाई खाने वाला, कमजोर हाथ पैर, अनैतिक संबंध।
अष्टम भाव	:	धन व गुण विहीन, दीनदुःखी, कटु स्वभाव, भूखा, निर्दयी।
नवम भाव	:	मूर्ख, चुगलखोर, माता–पिता व गुरुजनों को दुःख देने वाला, बुरे कामों में लिप्त, क्रूर, अधार्मिक।
दशम भाव	:	कर्तव्यहीन, शर्मनाक कार्य में लिप्त। मतांतर से संतान व अन्य सुख साधनों वाला, धर्मोन्मुख।
एकादश भाव	:	सुखी, धन वैभव, सुंदर, उच्च पद, सम्मानीय, किंतु बड़े भाई/बहन के सुख से विहीन।
द्वादश भाव	:	नीच कर्मों में लिप्त, आलसी, नीच स्त्रियों का संग, किसी अंग में विकार, असुंदर।

गुलिक की अन्य ग्रहों के साथ युति का फल

सूर्य	:	पिता से घृणा अथवा कटु संबंध, पिता की अल्पायु
चंद्र	:	माता से संबंध विच्छेद अथवा कटुता, उसकी आयु व स्वास्थ्य के लिए अशुभ
मंगल	:	छोटे भाई से विहीन, अथवा संबंध विच्छेद
बुध	:	बुद्धि विकार, त्वचा व गले के रोग, वाणी विकार
गुरु	:	पवित्र धर्म, आस्था, देवी–देवता के बारे में बकवास करना
शुक्र	:	नीच स्त्रियों की संगति, अनैतिक कृत्य, गुप्त रोगी
शनि	:	अल्पायु, असाध्य रोग, नीच प्रवृत्ति
राहु	:	विष विकार, अधार्मिक व अनैतिक कार्य
केतु	:	अग्नि, विस्फोट आदि की दुर्घटना से ग्रस्त।

शुभाशुभ ग्रहों की युति व दृष्टि प्रभाव से उपरोक्त फलों में परिवर्तन होता है।

अन्य उपग्रहों के भावानुसार शुभ/अशुभ फल संक्षेप में इस प्रकार है :

	शुभ भाव	अशुभ भाव
धूम	3, 6, 9, 10, 11	1, 2, 4, 5, 7, 8, 12
व्यतिपात	3, 6, 9, 10, 11	1, 2, 4, 5, 7, 8, 12
परिधि/परिवेश	1, 2, 3, 4, 5, 6, 8, 9, 10,11	7,12
चाप/इन्द्र धनुष/कोदण्ड	1, 2, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11	3, 8, 12
ध्वज/शिखी/उपकेतु	1, 2, 4, 5, 6, 9, 10, 11	3, 7, 8, 12

भावानुसार प्राणपद फल

प्रथम भाव : प्राण पद लग्न में हो तो जातक गूंगा, उन्मत्त, स्तब्ध, अंगहीन, दुःखी, कृश, रोगी तथा दुर्बल शरीर होता है।

द्वितीय भाव : धन धान्य से पूर्ण, अनेक भृत्य, अनेक संतति, भाग्यशाली होता है।

तृतीय भाव : हिंसक, गर्वीला, निष्ठुर, मलिन, गुरुभक्तिहीन होता है।

चतुर्थ भाव : सुखी, सुंदर, मित्र एवं स्त्रीप्रिय, गुरुभक्त, सुशील व सत्यवक्ता होता है।

पंचम भाव : सुख भोगी, क्रियाशील, दयावान, सभी कार्यों में अनुरक्त होता है।

षष्ठ भाव : बंधु एवं शत्रु के वश में रहने वाला, तीक्ष्ण स्वभाव, मंदाग्नि युक्त, दुष्ट, निर्दयी, धनी, अल्पायु होता है।

सप्तम भाव : ईर्ष्यालु, कामी, भयानक शरीर, दुष्ट व मूर्ख होता है।

अष्टम भाव : रोगी, बंधु, पुत्र व शत्रु से पीड़ित होता है।

नवम भाव : संतानवान, धनी, भाग्यवान, सुंदर, पंडित होता हैं

दशम भाव : बलवान, बुद्धिवान, राजकार्य में चतुर, पंडित, धार्मिक होता है।

एकादश भाव : प्रसिद्ध, गुणी, धनी, भोगी, मानी, गौरवर्ण होता है।

द्वादश भाव : क्षुद्र, दुष्ट, हीनांग, नेत्ररोगी, ब्राह्मण–बंधुओं का द्वेषी होता है।

ध्यान रहे केवल उपग्रहों के शुभाशुभ फलों पर न जाकर उनकी राशियों के स्वामी ग्रहों का बलाबल, युति/दृष्टि का भी विश्लेषण उतना ही आवश्यक है। यदि उपग्रह अशुभ फलों का संकेत करे किंतु ग्रह के फल शुभ हों, अथवा ग्रह के अशुभ तथा उपग्रह के शुभ फल इंगित हों तो दोनों का समन्वय करके ही निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है।

उपग्रहों के विषय में विस्तृत जानकारी ज्योतिष ग्रंथों में उपलब्ध न होने के कारण उनका उपयोग फलित ज्योतिष में सीमित है। उपग्रहों के विषय में शोध की नितांत आवश्यकता है तभी इनका सदुपयोग फलित ज्योतिष में व्यापक स्तर पर किया जा सकेगा।

अभ्यास प्रश्न

1. धूमादि तथा गुलिकादि दस उपग्रहों के नाम लिखें। क्या सभी उपग्रह पापी माने जाते हैं?
2. गुलिकादि कितने उपग्रह हैं, वे किन ग्रहों के पुत्र माने जाते हैं? इनकी गणना का क्या आधार है? विस्तार से लिखें।
3. धूमादि उपग्रहों के नाम लिखें। इनकी गणना किस प्रकार की जाती है। यदि सूर्य स्पष्ट 8रा 20^0 11′ हो, स्थिरांक 4रा 13^0 20′ हो तो उपकेतु की गणना करके दिखाएं।
4. गुलिकादि पांच उपग्रहों की गणना किस प्रकार की जाती है ?
5. प्राणपद गणना की प्रक्रिया चरणबद्ध रूप में लिखें।
6. धूमादि उपग्रहों की उच्च व नीच राशियां लिखें।
7. विभिन्न भावों में गुलिक की स्थिति के फल लिखें।
8. गुलिक की अन्य ग्रहों के साथ युति के क्या फल होते हैं ?
9. क्या उपग्रहों के फल शुभ भी होते हैं ? धूमादि पांच उपग्रहों के लिए कौन से भाव शुभ होते हैं ?
10. विभिन्न भावों में प्राणपद की स्थिति के फल लिखें।
11. परिधि व परिवेश उपग्रहों में क्या अंतर है ?
12. चाप, इन्द्र धनुष तथा कोदण्ड उपग्रहों में क्या भिन्नता है ?
13. ध्वज/शिखी/उपकेतु क्या एक ही उपग्रह के नाम है ?

परिशिष्ठ

आधार वर्ग तालिकाऐं

(संदर्भ : द्वादश वर्गीय बल)

आधार तालिका :— होरा वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
वर्ग ↓	0^0—15^0	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4
	15^0—30^0	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5

आधार तालिका :— द्रेष्काण वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
वर्ग ↓	0^0—10^0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	10^0—20^0	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
	20^0—30^0	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

आधार तालिका :— चतुर्थांश वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
वर्ग ↓	0^0से 7^0—30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	7^0—30^0 से 15	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
	15^0 से 22^0—30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
	22^0—30^0 से 30	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9

आधार तालिका :— पंचमांश वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
वर्ग ↓	0^0—6^0	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2
	6^0—12^0	11	6	11	6	11	6	11	6	11	6	11	6
	12^0—18^0	9	12	9	12	9	12	9	12	9	12	9	12
	18^0—24^0	3	10	3	10	3	10	3	10	3	10	3	10
	24^0—30^0	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8

आधार तालिका :— षष्ठांश वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	$0^{0}-5^{0}$	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7
	$5^{0}-10^{0}$	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8
वर्ग	$10^{0}-15^{0}$	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9
↓	$15^{0}-20^{0}$	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10
	$20^{0}-25^{0}$	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11
	$25^{0}-30^{0}$	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12

आधार तालिका :— सप्तांश वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	$4^{0}-17'-8.5''$	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6
	$8^{0}-34'-17''$	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7
वर्ग	$12^{0}-51'-25.7''$	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8
↓	$17^{0}-8'-34''$	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9
	$21^{0}-25'-42.5''$	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10
	$25^{0}-42'-51''$	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11
	$30^{0}-00'-00''$	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12

आधार तालिका :— अष्टमांश वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	$3^{0}-45'$	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5
	$7^{0}-30'$	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6
	$11^{0}-15'$	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7
वर्ग	$15^{0}-00'$	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8
↓	$18^{0}-45'$	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9
	$22^{0}-30'$	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10
	$26^{0}-15'$	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11
	$30^{0}-00'$	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12

आधार तालिका :— नवमांश वर्ग

वर्ग ↓ / राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
3^{0}—20′	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
6^{0}—40′	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
10^{0}—00′	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6
13^{0}—20′	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
16^{0}—40′	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
20^{0}—00′	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
23^{0}—20′	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
26^{0}—40′	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
30^{0}—00′	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

आधार तालिका :— दशमांश वर्ग

वर्ग ↓ / राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
3^{0}—0′	1	10	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8
6^{0}—0′	2	11	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9
9^{0}—0′	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10
12^{0}—0′	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11
15^{0}—0′	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12
18^{0}—0′	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1
21^{0}—0′	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2
24^{0}—0′	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3
27^{0}—0′	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2	7	4
30^{0}—0′	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3	8	5

आधार तालिका :— एकादशांश वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
वर्ग ↓	2^{0}—43′—38″	1	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2
	5^{0}—27′—16″	2	1	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3
	8^{0}—10′—54″	3	2	1	12	11	10	9	8	7	6	5	4
	10^{0}—54′—32″	4	3	2	1	12	11	10	9	8	7	6	5
	13^{0}—38′—11″	5	4	3	2	1	12	11	10	9	8	7	6
	16^{0}—21′—49″	6	5	4	3	2	1	12	11	10	9	8	7
	19^{0}—05′—27″	7	6	5	4	3	2	1	12	11	10	9	8
	21^{0}—49′—05″	8	7	6	5	4	3	2	1	12	11	10	9
	24^{0}—32′—44″	9	8	7	6	5	4	3	2	1	12	11	10
	27^{0}—16′—22″	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1	12	11
	30^{0}—00′—00″	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1	12

आधार तालिका :— द्वादशांश वर्ग

	राशि →	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
वर्ग ↓	2^{0}—30′	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	5^{0}—00′	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1
	7^{0}—30′	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2
	10^{0}—00′	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
	12^{0}—30′	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
	15^{0}—00′	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5
	17^{0}—30′	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
	20^{0}—00′	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7
	22^{0}—30′	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8
	25^{0}—00′	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	27^{0}—30′	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	30^{0}—00′	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11